दैनिक जागरण

जो विचार आकार न ले सके वह व्यर्थ है

नासूर बना गतिरोध

अमेरिका और ईरान में कोई समझौता होने की संभावनाओं के बीच जिस तरह दोनों किसी सहमति पर भी पहुंचते नहीं दिख रहे हैं, उससे किसी के लिए भी कहना कठिन है कि बातचीत सही दिशा में चल रही है और पश्चिम एशिया संकट शीघ्र समाप्त होने वाला है। पिछले लगभग एक माह से कभी अमेरिका वार्ता के सही दिशा में जारी रहने की घोषणाएं करता है तो कभी ईरान अपने रुख में नरमी दिखाता है, लेकिन परिणाम शून्य है। बीच-बीच में अमेरिका और ईरान, दोनों एक-दूसरे को धमकी भी देते रहते हैं। साफ है कि दोनों का एक-दूसरे के प्रति गहरा अविश्वास है और कथित तौर पर मध्यस्थता कर रहा पाकिस्तान संदेशों का आदान-प्रदान करने के अतिरिक्त और कुछ करने की स्थिति में नहीं। इसका कोई खास मतलब नहीं कि दोनों देशों में युद्धविराम कायम है, क्योंकि वह होर्मुज समुद्री मार्ग बाधित ही है, जिससे विश्व के पांचवें हिस्से की ऊर्जा आपूर्ति होती है। यह आपूर्ति करीब-करीब ठप होने के कारण ऊर्जा संकट गहरा गया है और उसका बुरा असर अमेरिका समेत सभी देशों की अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है।

अब ट्रंप के उन दावों पर भरोसा करना कठिन हो रहा है कि ईरान समझौते के लिए तैयार है। वैसे समझौता न हो पाने के लिए केवल अमेरिका को ही जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता, क्योंकि ईरान भी इस जिद पर अड़ा है कि वह होर्मुज पर अपना आधिपत्य नहीं छोड़ेगा और अपने संवर्धित यूरेनियम को लेकर कोई समझौता नहीं करेगा। इसका अर्थ है कि वह परमाणु हथियार बनाने के इरादे का परित्याग नहीं करना चाहता। इसे कोई भी नहीं चाहेगा कि ईरान परमाणु हथियार बनाने की क्षमता हासिल करे। उसे न केवल परमाणु हथियार हासिल करने के इरादे को छोड़ना होगा, बल्कि होर्मुज पर नियंत्रण रखने की जिद भी छोड़नी होगी। होर्मुज एक स्वतंत्र समुद्री मार्ग है और ईरान को यह अधिकार नहीं दिया जा सकता कि वह उसे अपनी निजी जागीर समझ ले अथवा वहां से गुजरने वाले जहाजों से टैक्स वसूले। यह अंतरराष्ट्रीय नियम-कानूनों की अवहेलना करने वाली जिद है। ईरान यह दिखा रहा है कि पश्चिम एशिया संकट जारी रहने से उसकी सेहत पर कोई असर नहीं पड़ रहा है, पर सच यह है कि वह आर्थिक तबाही के मुहाने पर है। ऐसे में उसे अपनी जिद छोड़नी चाहिए। बदले में अमेरिका को भी उसे यह भरोसा दिलाना होगा कि उस पर फिर हमला नहीं होगा। दोनों देशों को यह समझना होगा कि उनके बीच का गतिरोध विश्व अर्थव्यवस्था के लिए नासूर बन गया है। बहुत हो चुका। अब यह गतिरोध टूटना चाहिए, क्योंकि पश्चिम एशिया संकट विश्व के करोड़ों लोगों को प्रभावित कर रहा है। लोगों की रोजी-रोटी पर ही संकट नहीं है, वे गरीबी के दुष्चक्र से भी घिरते जा रहे हैं।

लापरवाही की हद

उत्तर प्रदेश के हमीरपुर में बेतवा नदी पर निर्माणाधीन पुल का पिलर टूटने और उस पर टिके स्लैब के गिरने से हुए हादसे में छह लोगों की मौत केवल दुर्घटना नहीं, बल्कि व्यवस्था की विफलता है। यह हादसा सरकारी परियोजनाओं में व्याप्त जवाबदेही की कमी, लापरवाही और भ्रष्टाचार का उदाहरण है। इस बात की जांच सघनता से होनी चाहिए कि पुल निर्माण की खामियों पर डीएम की आपत्ति के बाद भी आवश्यक प्रबंध क्यों नहीं हुए? आपदा को हादसे का कारक नहीं बनाया जा सकता है। जहां पुल बन रहा है, वहां की मिट्टी के नमूने शुरुआती परीक्षण के दौरान मानकों पर खरे नहीं उतरे थे और जो पिलर टूटा है, उसमें पहले भी दरारें आ गई थीं। सुरक्षा मानकों को भी निर्माता कंपनी और ठेकेदारों ने ताक पर रखा। पहले से खराब मौसम के अलर्ट के बाद भी अपर्याप्त रोशनी में निर्माण कार्य रात में जारी रखा गया। घटना के बाद केवल निलंबन और विभागीय जांच पर्याप्त नहीं। शासन को चाहिए कि जहां भी ऐसा निर्माण हो रहा है, वहां सुरक्षा मानकों और गुणवत्ता का अंकेक्षण कराए। लापरवाह अधिकारियों, इंजीनियरों और निर्माण कंपनी के विरुद्ध आपराधिक मुकदमा दर्ज होना चाहिए। निर्माणाधीन पुल का हिस्सा गिरने से प्रदेश की छवि आहत हुई है। कठोर निगरानी एवं नियंत्रण आवश्यक है, अन्यथा विकास परियोजनाएं जनता के लिए सुविधा की जगह खतरा बनती जाएंगी।

> कठोर निगरानी आवश्यक है, अन्यथा विकास परियोजनाएं जनता के लिए सुविधा की जगह खतरा बनती जाएंगी

कर्नाटक में बदलाव के बाद की चुनौतियां

संजय गुप्त

कर्नाटक में चुनाव दो वर्ष बाद होने हैं। कहना कठिन है कि तब क्या होगा, पर याद रहे कि राज्य में 1980 के बाद कोई भी सरकार सत्ता में नहीं लौटी है

अवधेश राजपूत

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्दरमैया के त्यागपत्र देने के साथ ही उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के राज्य की कमान संभालने का रास्ता साफ हो गया। इससे शिवकुमार की तो चाहत पूरी हो गई, लेकिन यह कहना कठिन है कि कर्नाटक कांग्रेस में सब कुछ सामान्य होने जा रहा है या फिर राज्य की विभिन्न समस्याओं के समाधान की राह आसान हो गई है। सिद्दरमैया ने त्यागपत्र देने की घोषणा करते हुए यह कहा कि कांग्रेस नेतृत्व ने जैसा कहा, मैंने वैसा किया, लेकिन उन्होंने राज्यसभा आकर कांग्रेस की केंद्रीय स्तर की राजनीति में सक्रिय होने का आग्रह ठुकराते हुए कहा कि वे राज्य की राजनीति में ही सक्रिय रहेंगे।

चूंकि सिद्दरमैया जमीनी स्तर की राजनीति करने वाले नेता हैं और उनका अपना जनाधार है, इसलिए वे मुख्यमंत्री बनने जा रहे शिवकुमार के लिए चुनौती खड़ी कर सकते हैं। इसके नतीजे में वहां नए सिरे से गुटबाजी भी पनप सकती है, क्योंकि शिवकुमार के नेतृत्व वाली सरकार के मंत्रिमंडल से सिद्दरमैया के कुछ समर्थक बाहर हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त यह स्वाभाविक ही है कि शिवकुमार अपने हिसाब से शासन चलाएंगे और इसके लिए वे प्रशासन में भी पूर्व मुख्यमंत्री के समर्थकों को किनारे कर सकते हैं। इसके आसार कम ही हैं कि सिद्दरमैया अपने उत्तराधिकारी शिवकुमार के लिए खुला मैदान छोड़ेंगे, क्योंकि जमीनी राजनीति करने वाला कोई नेता अपना राजनीतिक वर्चस्व इतनी आसानी से नहीं छोड़ता। अपने देश में तो ऐसा और भी कम होता है। अपने यहां उम्रदराज नेता तब तक राजनीति से रिटायर ही नहीं होते, जब तक उन्हें बिल्कुल किनारे न कर दिया जाए। कांग्रेस सिद्दरमैया की उपेक्षा करने का जोखिम नहीं उठा सकती।

शिवकुमार 2023 में तभी से मुख्यमंत्री पद के आकांक्षी थे, जब कांग्रेस ने विधानसभा चुनाव जीता था, लेकिन कांग्रेस नेतृत्व ने वरिष्ठता के आधार पर सिद्दरमैया का चयन किया। शिवकुमार का दावा था कि उनके और सिद्दरमैया के बीच इसे लेकर सहमति कायम हुई थी कि दोनों ढाई-ढाई वर्ष तक सत्ता संभालेंगे। अपने इस दावे के अनुरूप वे पिछले काफी समय से मुख्यमंत्री पद हासिल करने का प्रयत्न कर रहे थे, लेकिन सिद्दरमैया पद छोड़ने को तैयार नहीं थे। आखिरकार कांग्रेस आलाकमान के दबाव में वे तीन वर्ष बाद मुख्यमंत्री पद छोड़ने को तैयार हुए। स्पष्ट है कि उन्होंने मजबूरी में पद छोड़ा। कर्नाटक की तरह एक समय राजस्थान में भी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और सचिन पायलट के बीच भी इसे लेकर खींचतान हुई थी कि दोनों के बाच ढाई-ढाई साल तक मुख्यमंत्री बनने की सहमति बनी थी। सचिन पायलट ने बहुत कोशिश की कि उन्हें मुख्यमंत्री की कुर्सी मिले, लेकिन अशोक गहलोत टस से मस नहीं हुए। उन्होंने कांग्रेस आलाकमान के निर्देशों को भी ठुकरा दिया। इस कारण सचिन पायलट एवं उनके बीच खींचतान जारी रही और कांग्रेस आलाकमान अंत समय तक कोई फैसला नहीं कर सका। ऐसा ही छत्तीसगढ़ में हुआ। यहां मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और वरिष्ठ कांग्रेस नेता टीएस सिंह देव के बीच इसे लेकर झगड़ा होता रहा कि ढाई-ढाई साल तक सत्ता संभालने की बात हुई थी। यहां भी कांग्रेस नेतृत्व कोई फैसला नहीं कर सका। नतीजा यह हुआ कि इन दोनों राज्यों में कांग्रेस की पराजय का एक कारण मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए खींचतान भी बनी।

कांग्रेस नेतृत्व ने पंजाब में कैप्टन अमरिंदर सिंह को विधानसभा चुनाव के करीब एक वर्ष पहले मुख्यमंत्री पद से हटने के लिए बाध्य किया, क्योंकि नवजोत सिंह सिद्धू उनके खिलाफ खड़े हो गए थे। हालांकि मुख्यमंत्री की कुर्सी उनके बजाय चरणजीत सिंह चन्नी को मिली। इसके चलते गुटबाजी को बढ़ावा मिला और इसका लाभ आम आदमी पार्टी ने उठाया। कर्नाटक में दो वर्ष बाद चुनाव होने हैं। कहना कठिन है कि तब क्या होगा, लेकिन यह ध्यान रहे कि कर्नाटक में 1980 के बाद कोई भी सरकार सत्ता में नहीं लौटी है। शिवकुमार इस सिलसिले को तोड़ सकेंगे, यह कहना इसलिए कठिन है, क्योंकि कर्नाटक कई समस्याओं से घिरा है।

कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु आइटी सिटी के रूप में विख्यात है, लेकिन इस समय बेंगलुरु के साथ देश भर का आइटी उद्योग समस्याओं से घिरा है। कर्नाटक में बेंगलुरु को छोड़कर एक दो शहर ही सही तरह विकसित हो पाए हैं। बेंगलुरु और शेष राज्य में जो आर्थिक असमानता दिखती है, वह यही बताती है कि सरकारों ने अन्य शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों के विकास पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया। कर्नाटक उसी तरह की आर्थिक और सामाजिक समस्याओं से जूझ रहा है, जैसे अन्य कई राज्य। किसी भी दल के लिए कर्नाटक के लोगों की महत्वाकांक्षाओं को पूरा करना इसलिए कठिन होता है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र की जनता को संतुष्टि के नाम पर विकास के काम कम, लोकलुभावन योजनाओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है। रेवड़ी राजनीति कर्नाटक के लिए एक समस्या बन गई है। लोकलुभावन योजनाएं पूरी करने के फेर में राज्य की आर्थिक स्थिति कमजोर हुई है। ऐसी योजनाओं से एक तो मुफ्तखोरी की संस्कृति पनपती है और दूसरे राज्य की वित्तीय सेहत बिगड़ती है। ऐसा कुछ अन्य राज्यों में भी हो रहा है। कर्नाटक की तरह कई राज्यों में आर्थिक विकास राजधानी और चुनिंदा शहरों में ही केंद्रित दिखता है। अधिकांश राज्यों के पिछड़ेपन का कारण यही है कि वहां की सरकारें प्रदेश के समग्र विकास पर ध्यान नहीं देतीं। इससे आर्थिक असंतुलन और असमानता बढ़ती है। यह कर्नाटक में भी देखने को मिल रहा है। यह स्थिति शिवकुमार के लिए चुनौती बन सकती है।

प्रमुख राज्यों में देखा जाए तो कांग्रेस के पास तेलंगाना को छोड़कर कर्नाटक ही बचा है। यदि अगले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के हाथ से राज्य की सत्ता निकल गई और भाजपा सत्ता में आ गई तो उसका देशव्यापी प्रभाव और अधिक बढ़ जाएगा। इसी के साथ कांग्रेस के लिए उसका मुकाबला करना कठिन हो जाएगा। स्पष्ट है कि शिवकुमार का मुख्यमंत्री बनना तो तय हो गया, लेकिन उनके लिए राज्य को समस्याओं से उबार पाना आसान नहीं होने वाला।

response@jagran.com

जनता को मिले भड़ास थेरेपी का सहारा

हास्य-व्यंग्य

कमल किशोर सक्सेना

आदमी की समस्या भले लटकी रहे, किंतु यदि वह संबंधित लोगों को जीभर गालियां सुना ले तो खुश हो जाता है

हमारे देश में गाली देना हर नागरिक का अघोषित मौलिक अधिकार सा हो गया है। लोग इस अधिकार का बहुतायत से प्रयोग करते रहते हैं। जबकि संकोची यदा-कदा...वह भी मन ही मन...तिलमिलाकर। इतिहास में इसका कहीं उल्लेख नहीं मिलता कि पहली गाली किसने, किसको और किसलिए दी, किंतु यह निर्विवाद सत्य है कि समाज में गालियों का इस्तेमाल प्राचीन काल से हो रहा है। एक वर्ग का मानना है कि गाली-गलौज सभ्य लोगों को शोभा नहीं देती। जबकि दूसरे वर्ग का सोच है कि 'गाली' तो एक वरदान है, जो जीवनपर्यंत मनुष्य के साथ रहता है। इसलिए वह अशोभनीय कैसे। बहरहाल इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि गाली बकने के बाद असीम आत्मिक संतुष्टि मिलती है। ये बात उससे पूछिए, जो भीतर से भरा बैठा हो और उसकी कुंठा कहीं से भी बाहर न निकल पा रही हो। फिर 'गाली थेरेपी' का सहारा लेकर वह कैसे परम आनंद की प्राप्ति करता है।

गाली को यदि खाद्य पदार्थ कहा जाए तो यह सर्वाधिक सरकारी विभागों के हिस्से में आता है। देश में आमतौर पर हर नागरिक किसी न किसी सरकारी विभाग से पीड़ित होता है। महीनों चक्कर लगाने के बाद भी जब काम नहीं होता तो संस्कारी संतों के अंतर्मन से भी गाली का प्रादुर्भाव होने लगता है। अब इसे बाहर निकालने के लिए कोई उपयुक्त मंच न मिले तो आक्रोश खतरनाक हो सकता है। इसलिए हर सरकारी विभाग में अन्य काउंटरों की तरह एक 'गाली काउंटर' भी खुलना चाहिए। शोभनीय लगने के लिए इसे भड़ास काउंटर भी कह सकते हैं। इस काउंटर पर एक कर्मचारी की ड्यूटी सिर्फ जनता की गालियां सुनने के लिए होनी चाहिए। इससे पीड़ित लोगों की भड़ास काफी हद तक निकल जाएगी। विभाग पर भी दबाव कम होगा। काम भले न हो।

मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि आदमी की समस्या भले लटकी रहे, किंतु यदि वह संबंधित लोगों को जी भरकर गालियां सुना ले तो आधा खुश हो जाता है। अतः जनता की आधी खुशी के लिए ही सही, सरकार को ऐसे काउंटर खोलने में गुरेज नहीं होना चाहिए। प्रस्तावित काउंटर में आवेदक को पहले एक फार्म भरने को दिया जा सकता है। जिसमें नाम-पता लिखने और आधार कार्ड की फोटो कापी संलग्न करने के बाद गाली देने का कारण लिखना होगा। यह भी स्पष्ट करना होगा कि आवेदक साधारण गालियां देना चाहता है या सात पुश्तें तारने जैसी।

यदि कोई आवेदक गालियों के साथ जूते मारने की भी इच्छा रखता है तो उसे सशर्त अनुमति दी जा सकती है। इसके बाद निधारित शुल्क जमा करके और गाली देने/जूता मारने का समय एलाट किया जा सकता है। विभिन्न विभागों में ऐसे काउंटर खुल जाने से जनता को तो राहत मिलेगी ही, साथ ही सरकार का राजस्व भी बढ़ेगा। बस एक आशंका है कि यह योजना भी लालफीताशाही और भ्रष्टाचार का शिकार हो सकती है। तब अखबारों में इन हेडलाइंस से खबरें छप सकती हैं-'भड़ास काउंटर एक हफ्ते से खाली, कोई कर्मचारी बैठने को तैयार नहीं', 'अनुमति मिलने के बाद भी लाभार्थी गाली देने से वंचित', 'अफसर के चहेते कर्मियों की गाली काउंटर पर ड्यूटी नहीं', 'गाली कोष में लाखों का गबन, काउंटर बंद, जनता में आक्रोश', 'रामू ने फार्म भरा, जूते श्यामू मार गया', 'जूता खाने वाले कर्मियों की हेलमेट की मांग।'

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य | प्रतिस्थापन दर (2.1) से अधिक प्रजनन दर वाले राज्य

(आंकड़े प्रतिशत में)

1.9% मौजूदा राष्ट्रीय प्रजनन दर

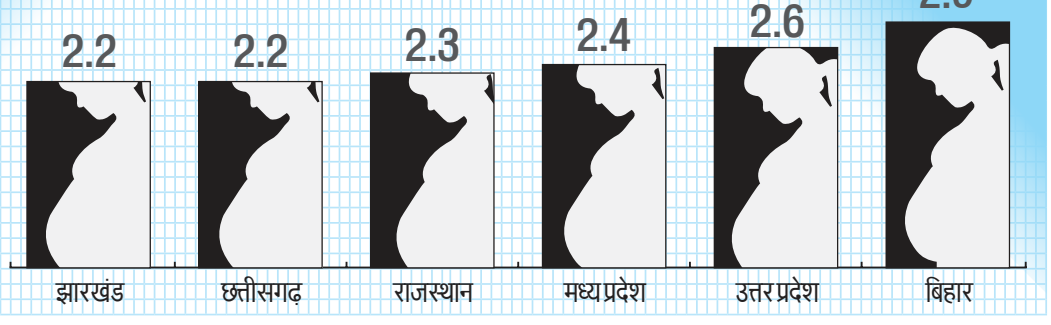

स्रोत: नमूना पंजीकरण प्रणाली

ऊर्जा

त्याग और चरित्र

मूल्यवान वस्तुओं और व्यक्तियों की अपने समूह में संख्या प्रायः कम होती है। प्राणियों में मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ माना गया है, किंतु उसकी संख्या भी अन्य जीवों की तुलना में अपेक्षाकृत कम है। एक घर में कुछ ही मनुष्य रहते हैं, जबकि उसी घर में हजारों चींटियां, मक्खियां और मच्छर पाए जा सकते हैं। इन समस्त जीवधारियों के बीच मनुष्यों की संख्या कम है। इसी प्रकार मनुष्यों में भी चरित्रवान, विवेकशील और आदर्श व्यक्तित्व वाले लोग बहुत कम होते हैं। भाव यह है कि उच्च कोटि के मनुष्य विरले ही होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह उन्नति करे, समाज में उसका सम्मान हो और उसे अग्रणी माना जाए। किंतु केवल ऐसा सोच लेने मात्र से कोई व्यक्ति मूल्यवान नहीं बन जाता। इसके लिए त्यागमय, अनुशासित और चरित्रवान जीवन जीना आवश्यक है। उन्नति के शिखर तक पहुंचने के लिए व्यक्ति को अपने चरित्र का निर्माण करना पड़ता है तथा लोकमंगल की भावना के साथ त्याग का मार्ग अपनाना पड़ता है। त्याग और सदाचार से व्यक्तित्व में एक विशेष प्रकार का तेज उत्पन्न होता है। यही तेज व्यक्ति को वास्तविक अर्थों में मूल्यवान बनाता है।

तेजस्वी व्यक्ति ही दूसरों का प्रभावी रूप से प्रेरक मार्गदर्शन कर सकता है। उसकी वाणी में विश्वास, प्रभाव और प्रेरणा का बल होता है। एक तेजस्वी और चरित्रवान व्यक्ति हजारों लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। भगवान शिव ने समस्त प्राणियों की रक्षा के लिए विष का पान किया। यदि हम स्वयं को मूल्यवान बनाना चाहते हैं और वास्तविक मूल्यवत्ता प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें सदाचार, विवेक और त्यागवृत्ति का आश्रय लेना होगा। यही गुण व्यक्ति को सामान्य से असाधारण और साधारण से मूल्यवान बनाते हैं।

डा. प्रशांत अग्निहोत्री

इबोला का प्रकोप रोकने की चुनौती

मुकुल व्यास

इबोला वायरस जानवरों को संक्रमित करते हैं, अगर लोग उनके सीधे संपर्क में आते हैं, तो वे भी संक्रमित हो सकते हैं

डेमोक्रेटिक रिपब्लिक आफ कांगो (डीआरसी) के इतूरी प्रांत में इबोला वायरस के प्रकोप पर काबू पाना कठिन होता जा रहा है। डीआरसी के अलावा युगांडा में भी इबोला के मामले आ रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इबोला के प्रकोप से होने वाली मौतों की दर 30 से 50 प्रतिशत बताई है। इसका मतलब है कि हर 10 में से 5 लोगों की जान जाने की आशंका है। अफ्रीका के इस हिस्से में लंबे समय से चल रहे गृह युद्ध की वजह से इबोला के संक्रमण पर काबू पाना और मुश्किल हो गया है। बीमारी के फैलने के केंद्र में मौजूद अस्थिरता के हालात में संक्रामक बीमारियां तेजी से पनपती हैं और अक्सर उनके फैलने का पता भी नहीं चल पाता। वायरस का पहला पक्का मामला गोमा के एक निवासी का था। गोमा एक ऐसा कस्बा है जो रवांडा की सीमा पर बसा है और वहां हालात बहुत ज्यादा अस्थिर हैं। बीमारी के फैलने का दूसरा बड़ा कारण यह है कि इसके डिटेक्शन में बहुत देर लगती है। लैब में किसी संक्रामक रोगाणु की पहचान करने में लगने वाला समय इस बात पर निर्भर करता है कि रोगाणु को बढ़ने में कितना समय लगता है और लैब टेस्ट किस तरह के हैं। यह भी देखा जाता है कि एंटीबाडी बनने में कितना समय लगता है। आम तौर पर इबोला वायरस के लिए यह समय एक से 32 दिन के बीच होता है।

स्थानीय सांस्कृतिक प्रथाएं भी रोग को फैलाने में मदद करती हैं। सिएरा लियोन और डीआरसी जैसे कई अफ्रीकी देशों में रीति-रिवाजों के अनुसार शवों को दफनाना एक आम प्रथा है। ये ऐसी रस्में हैं, जो इस विश्वास से उपजी हैं कि मृत्यु किसी दूसरी दुनिया या पूर्वजों के लोक में जाने का एक पवित्र मार्ग है। इसकी शुरुआत आमतौर पर सामूहिक शोक और रात भर जागकर शव की निगरानी करने से होती है, जिसके बाद शव को विधि-विधान से अंतिम संस्कार के लिए तैयार किया जाता है।

इबोला वायरस स्वाभाविक रूप से जानवरों, मुख्य रूप से फल खाने वाले चमगादड़ों को संक्रमित करते हैं, लेकिन अगर लोग उनके सीधे संपर्क में आते हैं, तो वे भी संक्रमित हो सकते हैं। वर्तमान प्रकोप का कारण इबोला वायरस की बुंडिबुग्यो प्रजाति है। यह उन तीन प्रजातियों में से एक है, जिनके कारण संक्रमण फैलता है। बुंडिबुग्यो ने पहले केवल दो बार प्रकोप फैलाया है। 2007 और 2012 में इसने संक्रमित लोगों में से लगभग 30 प्रतिशत की जान ले ली थी। बुंडिबुग्यो वायरस स्वास्थ्य कर्मियों के समक्ष कई तरह की चुनौतियां खड़ी करता है। इबोला वायरस की अन्य प्रजातियों के विपरीत बुंडिबुग्यो के लिए कोई भी स्वीकृत टीका या दवा उपलब्ध नहीं है, हालांकि कुछ प्रायोगिक दवाएं अवश्य मौजूद हैं। कोई भी स्वीकृत दवा उपलब्ध न होने के कारण इसका इलाज सिर्फ बेहतर देखभाल पर निर्भर करता है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

अफसरशाही के खेल

राजरंग

'तू डाल-डाल, मैं पात-पात' वाली कहावत तो सभी ने सुनी होगी। हाल ही में नीट-यूजी पेपर लीक मामले के बाद जब संसदीय समिति ने नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) के अधिकारियों को तलब किया तो इसका एक उदाहरण देखने को मिला। हुआ यह कि पेपर लीक से नाराज समिति इस मामले में अधिकारियों से सवाल-जवाब करने की पूरी तैयारी के साथ बैठक में पहुंची थी, लेकिन बैठक शुरू होते ही अधिकारियों ने यह कहकर चर्चा की पूरी दिशा बदल दी कि पेपर लीक हुआ ही नहीं था। समिति के सदस्य यह सुनकर भौंचक्के रह गए। जब उनसे पूछा गया कि फिर आखिर हुआ क्या था तो जो जवाब मिला, उसे सुनकर सदस्य एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। अधिकारियों ने कहा कि पेपर लीक नहीं हुआ था, बल्कि 'कंप्रोमाइज' हुआ था। यानी कुछ लोगों को प्रश्नपत्र की जानकारी पहले से मिल गई थी, उन्होंने उसे याद कर लिया और फिर परीक्षा में उसी के आधार पर उत्तर लिख दिए, लेकिन शब्दों के इस जाल से सच्चाई नहीं बदल जाती। तथ्य यही है कि कुछ अभ्यर्थियों को प्रश्नपत्र की जानकारी परीक्षा से पहले ही मिल गई थी। चाहे उसे पेपर लीक कहा जाए या 'कंप्रोमाइज', इससे परीक्षा की निष्पक्षता पर गंभीर सवाल खड़े होते हैं। वैसे भी जिस तरह एनटीए लगातार विवादों और गलतियों के कारण चर्चा में रहा है, उसके बाद अधिकारियों को शब्दों की बाजीगरी से बाहर निकलकर व्यवस्था में सुधार के लिए ठोस और प्रभावी कदम उठाने चाहिए।

कांटों का ताज!

कर्नाटक में डीके शिवकुमार की सबसे बड़ी ख्वाहिश पूरी होने जा रही है। वे मुख्यमंत्री पद पर आसीन होंगे, लेकिन अंदरूनी सूत्रों का आकलन है कि यह खुशी वस्तुतः कांटों का ताज साबित हो सकती है। दरअसल, उन्हें सत्ता ऐसे समय में मिली है, जब सरकार के पास प्रभावी रूप से केवल डेढ़ वर्ष का ही समय बचा है। आखिरी छह महीने तो चुनावी तैयारियों में ही निकल जाएंगे। यानी डेढ़ वर्ष में उन्हें ऐसा काम करके दिखाना है, जिससे पार्टी दोबारा चुनावी मैदान में मजबूती से उतर सके, लेकिन इससे भी बड़ी परेशानी यह है कि पूर्व मुख्यमंत्री सिद्दरमैया बेंगलुरु से हटने को तैयार नहीं हैं। सभी जानते हैं कि आज भी विधायकों में शिवकुमार के मुश्किल से ढाई-तीन दर्जन ही कट्टर समर्थक हैं। बाकी विधायक सिद्दरमैया के खेमे के माने जाते हैं। मंत्रिमंडल गठन के बाद यह भी स्पष्ट हो जाएगा कि सिद्दरमैया सरकार में किस तरह प्रभावी भूमिका निभाते हैं। यानी सरकार पर उनकी छाप बनी रहने की पूरी संभावना है। यदि उनके पुत्र को मंत्रिमंडल में शामिल कर लिया गया तो स्थिति कुछ हद तक संतुलित हो सकती है, अन्यथा चुनावी समय में आंतरिक कलह और तेज हो सकती है। जिस तरह चार उपमुख्यमंत्रियों का प्रस्ताव सिद्दरमैया खेमे की ओर से उछाला जा रहा है, वह भी स्पष्ट करता है कि शिवकुमार के लिए मुख्यमंत्री की गद्दी बहुत आरामदायक नहीं होने वाली है।

मेलोडी डिप्लोमेसी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में इटली जाकर वहां की पीएम जार्जिया मेलोनी को एक साधारण-सी मेलोडी टाफी पकड़ा दी। बस, फिर क्या था। कूटनीति के भारी-भरकम फार्मूले, जो घंटों की बैठकों और सैकड़ों पन्नों की बयानबाजी में उलझ जाते हैं, वह काम एक टाफी ने पलक झपकते कर दिया। अब नई दिल्ली स्थित इटली दूतावास भी इस वायरल मिठास को भुनाने का मौका नहीं छोड़ना चाहता। शुक्रवार को आयोजित एक समारोह में हर मेहमान को मेलोडी टाफी दी जा रही थी। लगता है कि अब कूटनीति भी पुरानी लीक छोड़कर 'स्वीट पावर' का सहारा लेने लगी है। एक टाफी ने जो कर दिखाया, वह शायद दूतावास साल भर के औपचारिक प्रयासों से भी नहीं कर पाता।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. नॉन एजीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा-201309 से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 * इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

40 प्रतिशत समाचार पत्र हिंदी में प्रकाशित होते हैं, भारत में प्रकाशित होने वाले कुल समाचार पत्रों की तुलना में। वर्तमान में एक हजार से अधिक हिंदी के समाचार पत्र (प्रतिदिन) प्रकाशित होते हैं, जबकि साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाओं की संख्या कहीं अधिक है।

आजकल

अनंत विजय
anant@nda.jagran.com

ज्ञान का इकोसिस्टम बनाती पत्रकारिता

हिंदी पत्रकारिता के दो सौ वर्ष पूरे हो चुके हैं। हिंदी पत्रकारिता के इन दो सौ वर्षों के समग्र परिवेश को हमें जानना-समझना चाहिए। स्वाधीनता के पूर्व के अधिकांश साहित्यकारों और लेखकों ने अपनी लेखनी से 'ज्ञान की पारिस्थितिकी' को मजबूती प्रदान की। कहा जाता है कि पत्रकारों को प्रश्नाकुल होना चाहिए, परंतु प्रश्नाकुलता के साथ विनयशीलता भी होनी चाहिए। ऐसे में ज्ञान के इकोसिस्टम को बल देने की बातों के बीच हमें हर दौर में पत्रकारिता के बदलते प्रारूपों को भी समझना चाहिए

जयशंकर प्रसाद।

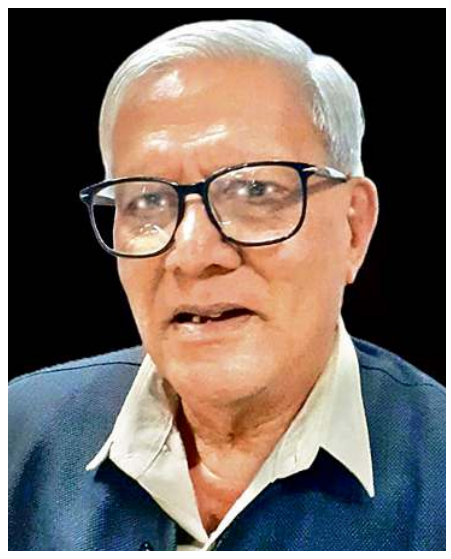

विजयदत्त श्रीधर। फाइल

हिंदी पत्रकारिता के दो सौ वर्ष पूर्ण होने पर देश के अलग-अलग हिस्से में गोष्ठियों का आयोजन हो रहा है। हिंदी के पहले समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड और उसके संपादक जुगुल किशोर सुकुल से लेकर वर्तमान दौर की पत्रकारिता पर चर्चा हो रही है और इस क्षेत्र से जुड़े लोग अपनी-अपनी राय और विश्लेषण रख रहे हैं। पत्रकारिता और साहित्य के संबंध पर भी बातें हो रही हैं। कुछ दिनों पूर्व सहितम् संस्था द्वारा आयोजित एक कार्यशाला में जाने का अवसर मिला। वहां देश के विभिन्न प्रांतों से आए युवाओं से संवाद हुआ। संवाद का विषय हिंदी साहित्य की चुनौतियां और संभावनाएं जैसा था। सहितम् का यह प्रयास युवाओं को लेखन की दुनिया से जोड़ने और उनको एक मंच प्रदान करने का है। युवा लेखकों से बात करते हुए साहित्य सृजन पर बात हुई। कुछ दिनों पूर्व हिंदी के वरिष्ठ आलोचक सुधीश पचौरी से कामायनी और छायावाद पर लंबी बात हुई थी। कामायनी और छायावाद को वह इन दिनों बिल्कुल अलग तरीके से व्याख्यित करने का कार्य कर रहे हैं। उनकी स्थापना है कि छायावादी कविता देशप्रेम के भाव से युक्त एक राष्ट्रवादी कविता है। सहितम् की गोष्ठी में युवाओं से संवाद के दौरान सुधीश जी से हुई बातचीत अवचेतन मन में थी। इस कारण जब साहित्य सृजन पर बात होने लगी तो साहित्य सृजन की एक अलग परिभाषा पर चर्चा आरंभ हो गई। साहित्य सृजन को परिभाषित करते हुए बात ज्ञान की पारिस्थितिकी (इकोसिस्टम आफ नालेज) तक पहुंच गई। स्वाधीनता के पूर्व के साहित्य सृजन को देखकर यही प्रतीत होता है कि अधिकतर साहित्यकारों ने और लेखकों ने अपनी लेखनी के माध्यम से ज्ञान की पारिस्थितिकी को मजबूत किया। विशेषकर यदि हम भक्तिकाल के कवियों को देखें तो उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से एक इकोसिस्टम तैयार किया। ज्ञान के इस इकोसिस्टम से भारत की उस समय की जनता लाभान्वित तो हुई ही, संगठित भी हुई। उनके टूटे मनोबल को बल मिलने लगा।

जयशंकर प्रसाद की महान कृति कामायनी को देखें तो उसमें लेखक एक साथ कई स्तरों पर अपनी बात कहते हुए आगे बढ़ते हैं। देवत्व जब दानत्व की ओर बढ़ता है तो प्रलय आती है। प्रलय सबको नष्ट कर देती है। कामायनी का नायक मनु जीवन से हताश निराश हो जाता है। हिमालय चला जाता है। कविता आगे बढ़ती है तो मनु को श्रद्धा मिलती है। श्रद्धा से ज्ञान मिलता है। प्रलय से ज्ञान की जिस पारिस्थितिकी को क्षति पहुंची थी, वो उसका परिष्कार होने लगता है। कामायनी में वर्णित स्थितियां और पात्रों के मनोविज्ञान को पकड़ने और उसको विश्लेषित करने का काम आलोचकों का है। लेकिन पत्रकारिता को या ज्ञानार्जन करने वालों के लिए एक बड़ी व्यवस्था जयशंकर प्रसाद ने अपनी इस रचना में दी। प्रलय के बाद भी अगर आपके पास श्रद्धा है तो आपको ज्ञानार्जन से कोई रोक नहीं सकता है। सृजन को बाधित नहीं किया जा सकता। ज्ञान अर्जन करने के लिए विनयशील होना आवश्यक है। श्रद्धा नाम कामायनी की नायिका का अवश्य है, लेकिन उसको प्रतीक के तौर पर देखा जा सकता है। आदर बिना ज्ञान नहीं प्राप्त हो सकता है। यही बात तो पत्रकारिता पर भी लागू होती है। पत्रकार भी अपनी लेखनी के माध्यम से ज्ञान का इकोसिस्टम ही बनाता है। पूर्व में बने हुए इकोसिस्टम को मजबूत करता है।

अब यहां हमें दो बातों पर विचार करना चाहिए कि दो सौ वर्षों की हिंदी पत्रकारिता के किस कालखंड के पत्रकारों ने ज्ञान का इकोसिस्टम बनाने या उसको मजबूत करने का काम किया। स्वाधीनता पूर्व की हिंदी पत्रकारिता को देख लेते हैं। उस काल की पत्रकारिता के आकलन से निष्कर्ष निकलता है कि वो ज्ञान की पारिस्थितिकी को मजबूत करके देश की जनता को जागरूक कर रही थी।

पत्रकारिता के दो सौ वर्षों के इतिहास को देखें तो भी स्पष्ट होता है कि जो आदर और विनयशीलता के साथ पत्रकारिता कर रहे थे, वो शीर्ष पर पहुंचे। आक्रामकता कभी पत्रकारिता को आगे नहीं बढ़ाती है। विनम्र होकर आदर के साथ प्रश्नों के उत्तर ढूंढेंगे तो बेहतर उत्तर मिलने की संभावना बनेगी। संभव है कि उत्तर उस तरह का मिले कि ज्ञान की पारिस्थितिकी में कुछ जोड़ें। वहीं अगर आक्रामकता के साथ पत्रकारिता की जाती तो पूर्वज पत्रकारों द्वारा बनाई गई ज्ञान की पारिस्थितिकी कमजोर होने का खतरा रहता है। पत्रकारिता में हमेशा से यह कहा जाता है कि पत्रकारों को प्रश्नाकुल होना चाहिए। बिल्कुल होना चाहिए। परंतु प्रश्नाकुलता के साथ विनयशीलता होनी चाहिए। पत्रकारिता के जरिये जब ज्ञान के इकोसिस्टम को बल देने की बात होती है तो स्मरण आता है इस वर्ष तीन खंडों में प्रकाशित समग्र भारतीय पत्रकारिता। वाणी प्रकाशन से प्रकाशित लेखक विजयदत्त श्रीधर ने श्रमपूर्वक इसको तैयार किया है। विजयदत्त श्रीधर पत्रकार रहे हैं। उन्होंने भोपाल में माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान की स्थापना भी की है। वहां शोधार्थियों के लिए प्रचुर सामग्री उपलब्ध है।

समग्र भारतीय पत्रकारिता के तीन खंडों को देखने के बाद यह विश्वास पक्का होता है कि पत्रकार अपनी पत्रकारिता के माध्यम से ज्ञान का इकोसिस्टम ही बनाते रहे हैं। तीन खंडों के 49 अध्यायों में विजयदत्त श्रीधर ने बेहद श्रमपूर्वक भारतीय पत्रकारिता की विकास यात्रा को दर्शाने का प्रयास किया है। वो इन तीन खंडों को समग्र भारतीय पत्रकारिता की वर्ष 1780 से लेकर 1948 तक की 128 वर्ष की यात्रा कथा बताते हैं। उनकी इस कृति में हिंदी भाषा के बदलते स्वरूप को भी देखा-समझा जा सकता है। विजयदत्त श्रीधर ने जहां भी पत्र-पत्रिकाओं के उद्धरण दिए हैं, वहां उसकी भाषा को यथावत रखा है। इस कृति में पाठकों को तमिल, मलयालम, तेलुगु, ओडिया और अंग्रेजी पत्रकारिता के बारे में भी अलग-अलग अध्यायों में जानकारी मिलती है।

विजयदत्त श्रीधर की इस पुस्तक से यह स्पष्ट होता है कि किस तरह से भारतीय पत्रकारिता ने ज्ञान का इकोसिस्टम बनाया। श्रीधर जी स्वाधीनता के बाद रुक जाते हैं। आज इस बात की पड़ताल करने की आवश्यकता है कि स्वाधीनता के बाद किस विचार और किस प्रचार ने भारतीय पत्रकारिता निर्मित ज्ञान के इकोसिस्टम को बाधित या खंडित करने का प्रयत्न किया। 1948 के बाद पत्रकारिता में कई महत्वपूर्ण पड़ाव आए। वर्ष 1962 के युद्ध में चीन से पराजय, 1975 में देश में आपातकाल की घोषणा और उसके बाद नागरिक अधिकारों और प्रेस की स्वतंत्रता समाप्त होना, 1991 में आर्थिक उदारीकरण का आरंभ होना। पत्रकारिता और पत्रकार ने नई तकनीक आई, चुनौतियों के साथ संभावनाएं आईं। इसे पत्रकारिता ने किस तरह से लिया, इस पर विस्तार से लिखने की आवश्यकता है। पत्रकारिता किस तरह से ज्ञान के इकोसिस्टम से दूर होकर राजनीतिक परिवार के इकोसिस्टम को मजबूत करने में लग गई। यह भी देखा जाना चाहिए।

खरी खरी

पेट्रोल और रुपये का शतक

विनय कुमार पाठक

शतक की बात आती है तो सबसे पहले ध्यान आता है किसी बैटर के द्वारा बनाया गया सौ रन बनाना। पहले बैट्समैन शब्द था जो महिलाओं के बीच क्रिकेट के लोकप्रिय होने के कारण बैटर हो गया है। किसी खिलाड़ी ने शतक पूरा कर लिया तो पंखे, मतलब फैंस खुश और अगर सस्ते में आउट हो गया तो निराश। लेकिन शतक क्रिकेट तक ही सीमित नहीं है। शतक यानी सौ की अलग ही दास्तां है। आयु के मामलों में शतक लगाने का अवसर गिने-चुने लोगों को ही मिल पाता है। जापान में कई ऐसे शतकवीर हैं जो उम्र का शतक लगा चुके हैं। हमारे देश में आशीर्वादों में एक प्रचलित आशीर्वाद था- दीर्घायु भव शतायु भव। शायद दीर्घायु भव में थोड़ी अनिश्चितता थी, अतः शतायु भव।

हमारा रुपया जो शतक लगाने जा रहा है उसे अधिकांश लोग नापसंद करेंगे। बात डालर के मुकाबले हो रही है। यह शतक से महज तीन अंक ही पीछे रह गया था, लेकिन थोड़ा मजबूत होते हुए अब यह 95 के आसपास है। यदि सब अनुकूल नहीं रहा तो कुछ दिनों में यह सौ पार कर जाएगा। सुनने में आया है कि रिजर्व बैंक मैदान में आ गया है इस अनचाहे शतक से बचाने के लिए। कुछ हद तक बचा भी पाया है।

इस बीच हमारे देश में पेट्रोल ने 15 से अधिक राज्यों में शतक लगा लिया है। इतने ही राज्यों में डीजल भी शतक लगाने की ताक में है। आम जनता भले ही न चाहे कि पेट्रोल शतक लगाने के बाद दोहरे शतक की ओर उन्मुख हो जाए, पर जिन लोगों को इससे लाभ होगा, वे तो चाहेंगे कि शतक लगने के बाद जल्द से जल्द दोहरा शतक भी लग जाए। एक समय था जब सौ का बहुत महत्व था। सौ रुपये से ज्यादा तनख्वाह पाने वाले बड़े ही फख्र से वैवाहिक विज्ञापन में लिखते थे- वेतन तीन अंकों में। परंतु इस मामले में सौ अब पिद्दी बन गया है। सौ तो क्या, हजार को कोई बाजार में पूछ नहीं रहा और लाख भी खाक हो चुका है। यहां तक कि करोड़ को भी रोड पर ला दिया है रियल स्टेट ने।

इस बीच पेट्रोल और डीजल की कीमतों में निरंतर बढ़ोतरी हो रही है वह धीरे-धीरे हो रही है। इसे आम जनता के प्रति हमदर्दी के रूप में देखा जा सकता है। अब यदि पेट्रोल का दाम एक साथ आठ रुपये बढ़ा दिया जाता तो जनता को कितनी तकलीफ होती? पर यही काम धीरे-धीरे करके चार बार में बढ़ाने से जनता को पता ही नहीं चला कि पेट्रोल की कीमत इतनी बढ़ गई है। वह तो यही समझ रही है कि पिछली बार से कीमत सिर्फ एक-दो रुपये ही बढ़ी है। तेल कंपनियां मगन होकर गा रही हैं कि बढ़ोतरी रंग लाएगी, आहिस्ता आहिस्ता...।

वैसे इसमें कई राज्यों में होने वाले चुनाव का भी प्रभाव माना जाना चाहिए। कच्चे तेल की कीमत बढ़ाने के बाद भी पेट्रोल की कीमत स्थिर रही, तब तक जब तक कि चुनाव संपन्न नहीं हो गए। और अब कच्चे तेल की कीमत कम होने के बाद भी कीमतें बढ़ रही हैं भले ही आहिस्ता आहिस्ता। अब भले ही अमेरिका ईरान के बीच समझौता हो जाए और कच्चे तेल की कीमत घट जाए, पेट्रोल की कीमत ऐसे ही बढ़ती रहेगी, जब तक कोई नया चुनाव न आ जाए।

इस सबके बीच मजे की बात यह भी है कि जनता रो रही है कि धीरे-धीरे दाम को बढ़ाया जा रहा है और सरकार रो रही है कि एक्साइज ड्यूटी में कटौती करके वह नुकसान उठा रही है। खैर, जो भी, यह तो सत्य ही है कि पेट्रोल शतक लगा चुका है और रुपया शतक लगाने की ओर बहुत ही तेजी से अग्रसर है।

(लेखक व्यंग्यकार हैं)

पोस्ट

जब एक परीक्षा की देखरेख प्रधानमंत्री कार्यालय और रक्षा मंत्री करेंगे, तो फिर शिक्षा मंत्री का क्या काम?
अभिषेक सिंघवी@DrAMSinghvi

सीयूईटी जैसी परीक्षा में हुई तकनीकी गड़बड़ी ने एक बार फिर सवाल खड़े कर दिए हैं। छात्र महीनों मेहनत करते हैं, समय पर परीक्षा केंद्र पहुंचते हैं, लेकिन सिस्टम बार-बार फेल हो जाता है।
प्रदीप कौशिक@Pk0001010

76 वर्षीय केवल सिंह ढिल्लों को भाजपा ने पंजाब का अध्यक्ष नियुक्त करके अपने उस अनौपचारिक नियम को अनदेखा कर दिया, जिसके तहत 75 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नेताओं को सक्रिय भूमिका से दूर किया जाता रहा है।
प्रभु चावला@PrabhuChawla

वैभव सूर्यवंशी को भारत की टी-20 और वनडे टीम का हिस्सा बनाया ही जाना चाहिए। यह मायने नहीं रखता कि आप उनके लिए किस खिलाड़ी को टीम से बाहर करते हैं। उनकी प्रतिभा पर भरोसा कर उन्हें अवसर दीजिए। वैभव जो कर सकते हैं, उसे कोई और करने में सक्षम नहीं। उन्हें मौका देना कोई जुआ नहीं, बल्कि एक सुनिश्चित दांव समझिए।
मोहम्मद कैफ@MohammadKaif

रचनाकर्म

समय से आगे का सोच

ब्रजविहारी

यह पुस्तक अहिल्याबाई होलकर के 30 वर्षों के स्वर्णिम शासन का स्मरण करती है और उनकी वीरता को रेखांकित करती है। उन्होंने आदर्श का एक गौरवशाली उदाहरण स्थापित किया...

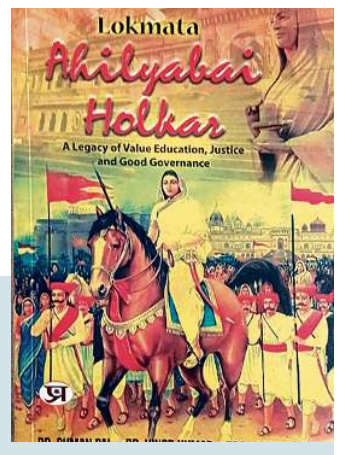

पुस्तक : लोकमाता अहिल्याबाई होलकर
संपादक मंडल : डा. सुमन पाल, प्रोफेसर अमर सिंह और डा. विनोद कुमार
प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन
मूल्य : 700 रुपये

तीन सदी से भी पहले 31 मई, 1725 को महाराष्ट्र में एक साधारण परिवार में जन्म लेने वाली अहिल्याबाई अपनी असाधारण दृढ़ता, करुणा, सेवाभाव, सादगी और दूरदर्शिता से लोकमाता और देवी जैसे विशेषणों से विभूषित की गईं। आठ वर्ष की आयु में इंदौर की होलकर रियासत के संस्थापक मल्हारराव होलकर के बेटे खांडेराव के साथ उनका विवाह हुआ और 29 वर्ष की आयु में वह विधवा हो गईं। उसके बाद उनके ससुर और बेटे की भी मृत्यु हो गई। निरंतर आघात सहने के बावजूद वे टूटी नहीं, पहले से अधिक सशक्त बनकर उभरी। उन्होंने न सिर्फ सत्ता की बागडोर संभाली, बल्कि संघर्ष के पथरीले रास्ते पर चलते हुए आदर्श का एक गौरवशाली उदाहरण स्थापित किया।

यह आश्चर्य का विषय है कि ऐसे दैदीप्यमान चरित्र को मुख्यधारा के इतिहासकारों ने अपने दुराग्रहों या पूर्वाग्रहों के कारण हाशिये पर डाल दिया। वाराणसी के उदय प्रताप कालेज के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. विनोद कुमार, सुमन पाल और प्रोफेसर अमर सिंह जैसे विद्वानों के सम्मिलित प्रयासों से 'लोकमाता अहिल्याबाई होलकर' नामक एक पुस्तक का संपादन किया गया है, जो भारत की सबसे दूरदर्शी महिला शासक अहिल्याबाई को सच्ची श्रद्धांजलि है। प्रस्तुत पुस्तक इस मायने में विशिष्ट है कि इसमें अलग-अलग लेखकों के 27 अध्याय शामिल किए गए हैं।

परंपरागत इतिहास दृष्टि में उनका आकलन एक धर्मपरायण विधवा के रूप में किया गया है, जिनका सारा ध्यान देश के विभिन्न हिस्सों में मंदिरों के नवनिर्माण या पुनर्निर्माण पर रहा। उनकी उदारता और नैतिक बल की भी चर्चा हुई है, लेकिन आधुनिक इतिहास दृष्टि से देखा जाए तो वे अपने समय से काफी आगे का सोच रखती थीं।

आज हम जब नारी सशक्तीकरण की बात करते हैं तो हमें स्मरण रखना चाहिए कि अहिल्याबाई ने अपने शासनकाल में महिलाओं की शिक्षा की नींव रखी थी। यही नहीं, उन्होंने स्त्रियों की सामाजिक एवं आर्थिक उन्नति के मार्ग प्रशस्त किए। महिलाओं को व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में आने के लिए प्रोत्साहित किया। वे समझ गई थीं कि आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक बराबरी के बिना महिलाओं को सशक्त बनाना असंभव है। उन्होंने अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए उचित कराधान की व्यवस्था की, ताकि किसानों, दस्तकारों और व्यापारियों पर कर का कम से कम बोझ पड़े।

महेश्वरी साड़ियों के लिए अहिल्याबाई के योगदान को तो भुलाया ही नहीं जा सकता है। उन्होंने होलकर रियासत की राजधानी को इंदौर से महेश्वर स्थानांतरित किया और वहां देश भर के कुशल शिल्पकारों को बसाया। उनकी वजह से ही महेश्वरी साड़ियां देश की शान बनी हुई हैं।

महारानी द्वारा किए गए न्यायिक सुधार भी उल्लेखनीय हैं। उन्होंने कई न्यायालयों का निर्माण करवाया। उन्होंने सतीप्रथा को रोकने, महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने, पर्दा प्रथा को समाप्त करने और विधवा विवाह के लिए कई कानून बनाए। वे अत्यंत न्यायप्रिय थीं और विवादों के निपटारे में व्यक्तिगत रुचि लेती थीं। एक बार तो उन्होंने दोषी पाए जाने पर अपने पुत्र को भी सजा दी थी। इस महान महारानी का जीवन अनुकरणीय है, लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर देखा जाए तो उन्हें बार-बार परीक्षाओं से दो-चार होना पड़ा। उन्होंने जिससे भी प्रेम किया, वे उनसे दूर होते चले गए। पति, ससुर और बेटे की मृत्यु के बाद हालांकि वे संभल गई थीं, लेकिन पहले दौहित्र और फिर बाद में दामाद यशवंतराव फणसे की मृत्यु का दुख वे सहन नहीं कर पाईं।

सीमित में असीम का दर्शन

कन्हैया झा

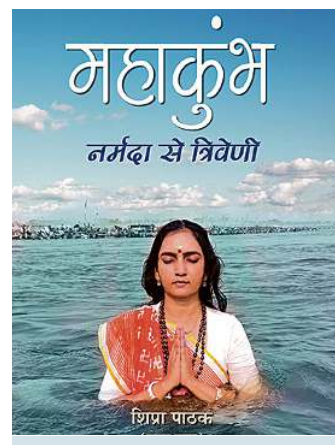

पुस्तक : महाकुंभ - नर्मदा से त्रिवेणी
लेखिका : शिप्रा पाठक
प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन
मूल्य : 300 रुपये

कुंभ का अर्थ है- एकत्व यानी अनेकता में एकता, सीमित में असीम का दर्शन। जब करोड़ों लोग एकसाथ स्नान करते हैं तो वहां कोई भेद नहीं रह जाता, न जाति का, न वर्ग का और ना ही धन का। महाकुंभ केवल धार्मिक आयोजन नहीं, यह भारत की सामूहिक चेतना का उत्सव है। इसमें हर चेहरा एक दीपक है, हर डुबकी एक प्रार्थना है। साधु, संन्यासी, गृहस्थ- सब एक ही धारा में मिल जाते हैं। कुंभ हमें यह भी सिखाता है कि 'अमृत' केवल देवताओं का नहीं है, बल्कि जो अपने भीतर मंथन करता है, जो अपने भीतर के विष को पीने का साहस रखता है, वही उस अमृत का अधिकारी बनता है। कुंभ का वास्तविक अर्थ यही है- भीतर के समुद्र को मथना और स्वयं को पहचानना। लेखिका ने अपनी पुस्तक महाकुंभ-नर्मदा से त्रिवेणी में कुंभ के माहात्म्य को दर्शाया है।

पिछले वर्ष ही प्रयागराज में महाकुंभ का आयोजन हुआ था, जहां देश-विदेश से 60 करोड़ से अधिक श्रद्धालु स्नान के लिए पहुंचे थे। वहीं, अगले वर्ष के आरंभ में हरिद्वार में अर्धकुंभ का आयोजन होगा। अगले ही वर्ष नासिक में भी सिंहस्थ कुंभ का आयोजन किया जाएगा। महज दो वर्ष बाद यानी 2028 में उज्जैन में भी सिंहस्थ कुंभ का आयोजन होगा। नियमित अंतराल पर चार अलग-अलग स्थानों पर आयोजित होने वाला कुंभ हमें सिखाता है कि मोक्ष कहीं दूर नहीं, वह हर क्षण संभव है।

प्रयागराज में पवित्र संगम तट पर एक माह तक नियम, व्रत, स्नान और सेवा में जीवन को समर्पित करना ही कल्पवास का सार है। प्राचीनकाल से ही ऐसी मान्यता है कि इस अवधि में किया गया जप, तप, और दान मनुष्य को भीतर से रूपांतरित कर देता है। यही आध्यात्मिक ऊष्मा इस पुस्तक की आधारभूमि है। मानव अस्तित्व के लिए नदियों की महत्ता को समझने की दृष्टि से भी यह पुस्तक पठनीय है।

जागरण जनमत कल का परिणाम

क्या रिषभ पंत ने आइपीएल टीम की कप्तानी छोड़कर सही किया?

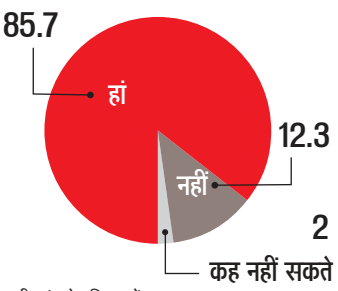

सभी आंकड़े प्रतिशत में

आज का सवाल

क्या पंजाब में केवल सिंह ढिल्लों को अध्यक्ष बनाना भाजपा को लाभ पहुंचाएगा?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है

जनपथ

शिक्षा मंत्री खुद हुए दीख रहे हैं फेल,
होते शिक्षा क्षेत्र में तरह-तरह के खेल।
तरह-तरह के खेल मौज करते हैं फर्जी,
मेहनतकश इंसान लगाता घूमे अर्जी।
होते पेपर लीक सो रहे सारे संत्री,
'हवा-हवाई' बात कर रहे शिक्षा मंत्री!
-ओम प्रकाश तिवारी

अजीत कौर का रचनात्मक पंजाब

यतीन्द्र मिश्र

पंजाबी साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर अजीत कौर की 'द ब्लू पाटर : द क्रिएटिव जीनियस आफ पंजाब' पढ़ते हुए लगता है मानो स्मृतियों का कोई पुराना दरवाजा धीरे-धीरे खुल रहा हो और उसके भीतर से पंजाब के रचनात्मक आत्मा के वो चेहरे एक-एक कर सामने आ रहे हों, जिन्होंने कला, साहित्य, संगीत, समाज, संस्कृति और राजनीति को अपने जीवन से एक नया अर्थ दिया। लेखिका ने अपनी बेबाक, आत्मीय और संस्मरणात्मक दृष्टि के साथ अपने समय के 17 महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों के जीवन से जुड़ी उन अनकही, अनसुनी और अप्रकाशित स्मृतियों को शब्द दिए हैं, जिनके माध्यम से हम उनके सार्वजनिक व्यक्तित्व से परे उनके भीतर छिपे मनुष्य से परिचित होते हैं। पुस्तक में अमृता प्रीतम, खुशवंत सिंह, शिव कुमार बटालवी, कृष्णा सोबती, जगजीत सिंह, करतार सिंह दुग्गल, महिंदर सिंह रंधावा, पद्मा सचदेव, बलवंत गार्गी, वी. पी. सिंह और सोहन कादरी जैसी अनेक विभूतियों के संस्मरण संकलित हैं। अजीत कौर इन व्यक्तित्वों को उनकी मानवीय जटिलताओं और संवेदनाओं के साथ प्रस्तुत करती हैं। कृष्णा सोबती पर लिखा 'डाटर आफ द चेनाब' एक महान लेखिका के व्यक्तित्व की दुर्लभ आभा को पकड़ता है; शाही गरिमा, फकीराना स्वतंत्रता, संकोची आत्मीयता और अदम्य स्वाभिमान। लेखिका उन्हें एक ऐसे वृक्ष की तरह देखती हैं जिसकी जड़ें अपनी मिट्टी में गहराई तक धंसी हैं, लेकिन जिसका चेहरा हमेशा आकाश की ओर उठा रहता है।

'द किंग आफ एंग्विश' में अजीत कौर शिव कुमार बटालवी की साहित्यिक प्रतिभा के साथ उनके टूटे प्रेम और भीतर पलते अकेलेपन को उतनी ही गहराई से दर्ज करती हैं। अमृता प्रीतम पर संस्मरण विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जहां अजीत कौर उनके व्यक्तित्व की चमक, प्रेम, वैचारिक विरोधाभासों को समान ईमानदारी से सामने लाती हैं। वे अमृता और इमरोज के संबंधों की आत्मीय ऊष्मा को बेहद खूबसूरती से याद करती हैं। खुशवंत सिंह के बारे में पढ़ते वक्त वे हमें आत्मीय विनोद से भरे दिखाई देते हैं। एक पूरे युग को महसूस करने वाली 91 वर्षीय अजीत कौर द्वारा इन प्रतिष्ठित हस्तियों को समर्पित एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि। पंजाबी से सुष्मिंदर जीत कौर के अनुवाद द्वारा अंग्रेजी में उपलब्ध।

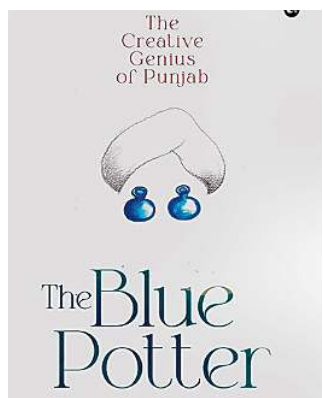

पुस्तक : द ब्लू पाटर : द क्रिएटिव जीनियस आफ पंजाब
लेखिका : अजीत कौर
प्रकाशक : एलेफ बुक कंपनी
मूल्य : 999 रुपये

गोरख-तत्व की पुनर्प्रतिष्ठा

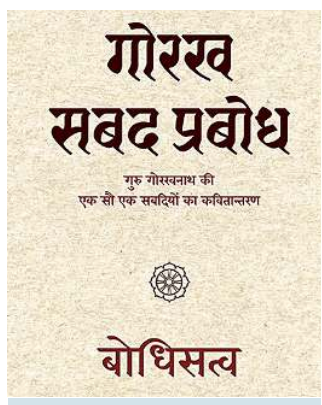

पुस्तक : गोरख सबद प्रबोध
लेखक : बोधिसत्व
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन
मूल्य : 350 रुपये

भारतीय अध्यात्म, लोकबोध और साधना-परंपरा के विराट नभमंडल में गुरु गोरखनाथ ध्रुवतारे की भांति आलोकित हैं। वे भारतीय मनीषा के उन विरल महायोगियों में हैं, जिन्होंने मनुष्य की अंतर्चेतना को जाग्रत करने वाली जिस साधना-दृष्टि का सूत्रपात किया, उसी ने आगे चलकर संत और भक्ति काव्यधारा के लिए आधारभूमि निर्मित की। समय के प्रवाह में गोरखनाथ की वाणी और आज की पीढ़ी के बीच एक ऐसी दूरी अवश्य निर्मित हुई है, जिस कारण उनके चिंतन की मूल आध्यात्मिक आभा और लोकधर्मी संवेदना तक सहज पहुंच कठिन होती गई है। ऐसे समय में आवश्यकता इस बात की है कि गोरख-वाणी को उसके मूल आशयों और मानवीय विस्तार के साथ पुनः पढ़ा और समझा जाए। प्रसिद्ध हिंदी कवि बोधिसत्त्व की 'गोरख सबद प्रबोध' इस दिशा में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रयास है, जो गोरख-वाणी के मूल तत्त्वों की पुनर्प्रतिष्ठा का एक सशक्त उपक्रम बनकर सामने आती है। पुस्तक गुरु गोरखनाथ की 101 सबदियों का कवितांतरण है, जिसमें मूल वाणी का आध्यात्मिक स्पंदन अक्षुण्ण है। बोधिसत्त्व के अनुसार- 'गोरख की ज्ञानयुक्त वाणी में कविता किस प्रकार समाई हुई है, यह देखने के लिए ही यह कवितांतरण किया गया है।' वस्तुतः यह कृति गोरखवाणी की अंतर्यात्रा को आधुनिक पाठक तक पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण सर्जनात्मक प्रयत्न है।

'काजी मुलां कुरांण लगाया...' जैसी सबदियों में वे कर्मकाण्ड, बाह्य आडम्बर और धार्मिक रूढ़ियों से परे आत्मबोध की ओर संकेत करते हैं, तो 'कहणि सुहेली रहणि दुहेली...' में अनुभवहीन ज्ञान और खोखले उपदेशों की निरर्थकता को उद्घाटित करते हैं। 'जे आसा तो आपदा...' में आशा, संशय और द्वंद्व को मनुष्य के आध्यात्मिक विघटन का कारण माना गया है, जबकि 'अमावस कै घरि झिलिमिलि चंदा...' में योग, चेतना और आत्मप्रकाश की रहस्यात्मक अनुभूतियां प्रतीकात्मक भाषा में व्यक्त होती हैं। वहीं 'हबकि न बोलिबा...' जैसी सबदियां सहजता, धैर्य और निरभिमान आचरण को योगी का स्वाभाविक गुण मानती हैं। बोधिसत्व ने इन समस्त सबदियों को केवल रूपांतरित नहीं किया, बल्कि उन्हें समकालीन काव्य-संवेदना और अर्थविस्तार के साथ पुनर्सृजित किया है। दरअसल गुरु गोरखनाथ के देवत्व, योगी और गुरु स्वरूप की व्यापक प्रतिष्ठा के बीच उनका कवि-रूप कहीं ओझल पड़ गया था; यह पुस्तक उस विस्मृत कवि-चेतना को पुनः सामने लाती है।

चौथी तिमाही में इरेडा को 492 करोड़ का लाभ

नई दिल्ली: नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र से जुड़ी सरकारी कंपनी इरेडा को बीते वित्त वर्ष की चौथी तिमाही (जनवरी-मार्च 2026) के दौरान 492.63 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ है। इसमें पिछले वर्ष की समान अवधि के 501.55 करोड़ रुपये की तुलना में 1.77 प्रतिशत की गिरावट रही है। पूरे वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान कंपनी का शुद्ध लाभ 1,874 करोड़ रुपये रहा है, जो 2024-25 के 1,698 करोड़ रुपये से ज्यादा है। (प्रेट्र)

सेमीकंडक्टर क्षेत्र के लिए चलाई जा रही डिजाइन-लिंक्ड इंसेंटिव (डीएलआइ) और डिजाइन इन्फ्रास्ट्रक्चर सपोर्ट (डीआइएस) स्कीम अच्छे नतीजे दिखा रही हैं।

- अश्विनी वैष्णव, केंद्रीय इलेक्ट्रानिक्स मंत्री

एक नजर में

कपास आयात पांच माह के लिए शुल्क-मुक्त किया

नई दिल्ली: केंद्र सरकार ने शनिवार को कपास आयात को पांच महीने तक के लिए शुल्क-मुक्त कर दिया। वित्त मंत्रालय ने एक अधिसूचना में बताया कि एक जून से 30 अक्टूबर 2026 तक कपास के आयात पर किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं देना होगा। मंत्रालय ने कहा कि इस अस्थायी शुल्क छूट से कपड़ा और परिधान क्षेत्र में इनपुट लागत कम होने की उम्मीद है, जिससे निर्माताओं और उपभोक्ताओं को राहत मिलेगी। साथ ही घरेलू किसानों के हितों का भी ध्यान रखा गया है। (प्रेट्र)

तीन कंपनियों को दी आइपीओ लाने की मंजूरी

नई दिल्ली: कैपिटल मार्केट रेग्युलेटर सेबी ने तीन कंपनियों को आइपीओ लाने की मंजूरी दी है। इन कंपनियों में रोडेक फार्मा, रेनी स्ट्रिप्स और कृष्णा बिल्डस्पेस शामिल हैं। वेटनरी फार्मा उत्पाद बनाने वाली रोडेक फार्मा का आइपीओ पूरी तरह से आफर फार सेल (ओएफएस) पर आधारित है और इसमें 56.5 लाख प्रमोटर शेयर की बिक्री की जाएगी। स्टील उत्पाद निर्माता रेनी स्ट्रिप्स आइपीओ में 300 करोड़ रुपये के नए शेयर बिक्री के लिए पेश करेगी। कंस्ट्रक्शन कंपनी कृष्णा बिल्डस्पेस के आइपीओ में 90 लाख नए शेयर और नौ लाख प्रमोटर शेयर बिक्री के लिए पेश किए जाएंगे। (प्रेट्र)

तीन अगस्त से एफएंडओ में 10 मिनट अधिक कारोबार

मुंबई: नेशनल स्टाक एक्सचेंज ने इक्विटी डेरिवेटिव्स सेगमेंट में ट्रेडिंग के तरीकों में बदलाव की घोषणा की है। तीन अगस्त से इक्विटी कैश सेगमेंट में 'क्लोजिंग आक्शन सेशन' (सीएएस) शुरू होने के बाद वायदा एवं विकल्प (एफएंडओ) कान्ट्रैक्ट्स के लिए सामान्य बाजार बंद होने का समय 10 मिनट बढ़ा दिया जाएगा। इक्विटी डेरिवेटिव्स के लिए बाजार बंद होने का सामान्य समय शाम 3:40 बजे कर दिया जाएगा। ट्रेड में बदलाव का अंतिम समय शाम 4:15 ही रहेगा। (एएनआइ)

50 :30 :20 फार्मूला का ऐसे करें पालन, मिलेगा ज्यादा रिटर्न

वित्तीय क्षेत्र में मासिक आय को खर्च करने के लिए 50 :30 :20 का फार्मूला काफी प्रचलित है। इसमें आय का 50 प्रतिशत घरेलू जरूरतों जैसे- मकान किराया, बिजली-पानी बिल, दैनिक उपभोग की वस्तुएं इत्यादि पर खर्च करना, 30 प्रतिशत हिस्सा लाइफ स्टाइल, मनोरंजन इत्यादि पर खर्च करना और 20 प्रतिशत निवेश पर खर्च करना शामिल है। अब चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीए) नितिन कौशिक ने इंटरनेट मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर 50 :30 :20 फार्मूले में थोड़ा बदलाव किया है। कौशिक के अनुसार, उनके नए फार्मूले के अनुसार मासिक आय को खर्च किया जाए तो 10 वर्ष के निवेश पर ज्यादा रिटर्न मिल सकता है।

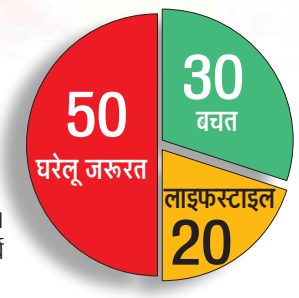

ऐसे मिलेगा ज्यादा रिटर्न

सीए नितिन कौशिक ने एक्स पोस्ट में बताया, मान लीजिए- किसी व्यक्ति को उसके निवेश पर कुल 12% का सालाना औसत रिटर्न मिल रहा है। पुराने फार्मूला से 10 वर्ष तक 20 हजार रुपये प्रति माह के निवेश से उस व्यक्ति को कुल 46 लाख रुपये मिलेंगे। वहीं, कौशिक के फार्मूला से 10 वर्ष तक 30 हजार रुपये प्रति माह के निवेश पर उस व्यक्ति को 70 लाख रुपये मिलेंगे। यानी नए फार्मूले का सख्ती से पालन करने के साथ 10 हजार रुपये मासिक की अतिरिक्त बचत से उस व्यक्ति को 10 वर्ष बाद 24 लाख रुपये अतिरिक्त मिलेंगे।

क्या कहता है सीए नितिन कौशिक का फार्मूला

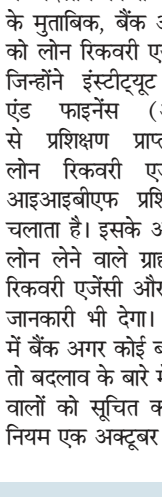

सीए नितिन कौशिक

सीए नितिन कौशिक ने मासिक खर्च के 50 :30 :20 फार्मूले में मामूली बदलाव किया है। प्रचलित फार्मूला में मासिक आय के 50 प्रतिशत हिस्सा को मकान किराया, दैनिक उपभोग की वस्तुओं इत्यादि पर खर्च को नितिन कौशिक ने बरकरार रखा है। उन्होंने 30 :20 में प्रमुख बदलाव किया है। पुराने फार्मूला में 30 प्रतिशत हिस्सा लाइफ स्टाइल, मनोरंजन इत्यादि पर खर्च करने की बात कही गई है, वहीं कौशिक 30 प्रतिशत रकम बचाने पर जोर देते हैं। इसी तरह, पुराने फार्मूला में 20 प्रतिशत बचत की बात कही गई है, जबकि कौशिक समान राशि लाइफ स्टाइल, मनोरंजन इत्यादि पर खर्च करने की बात कहते हैं।

नए फार्मूला से बढ़ेगी बचत

मान लीजिए, किसी व्यक्ति की मासिक आय एक लाख रुपये है। पुराने फार्मूला के अनुसार, वह 50 हजार रुपये मकान किराया, बिजली-पानी बिल और दैनिक उपभोग की वस्तुओं पर खर्च करेगा। 30 हजार रुपये लाइफ स्टाइल, मनोरंजन इत्यादि पर खर्च होंगे और 20 हजार रुपये निवेश पर खर्च होंगे। इसमें एसआइपी, म्यूचुअल फंड या अन्य निवेश शामिल है। नए फार्मूला में 50 प्रतिशत राशि समान मदों में खर्च होगी। लेकिन बचत 30 हजार रुपये होगी और लाइफ स्टाइल व मनोरंजन पर खर्च घटकर 20 हजार रुपये हो जाएगा।

बरतें अतिरिक्त सावधानी

सीए नितिन कौशिक अपने नए फार्मूला का पालन करने का भी सुझाव देते हैं। कौशिक कहते हैं कि इस फार्मूला का पालन करने के लिए किसी भी व्यक्ति को अपने प्राथमिक वेतन खाते से अतिरिक्त दो जीरो-बैलेंस खाते खुलवाने चाहिए। वेतन मिलने के दिन ही अपने प्राथमिक खाते से राशि अतिरिक्त खाते में भेज देनी चाहिए, ताकि अनावश्यक खर्च से बचा जा सके। इसके लिए आटोमैटिक-सेटअप भी किया जा सकता है। अपने सभी खर्चों को प्राथमिक खाते से ही कीजिए। कौशिक कहते हैं कि जब प्राथमिक खाते में पैसे नहीं दिखेंगे, तो आप उन्हें खर्च नहीं कर पाएंगे।

विजनेस डेस्क

कमजोर वर्ग को मिले मदद

धीरेंद्र कुमार, संपादक, हिंदी डाट वैल्यूरिसर्चआनलाइन डाट काम

हाल ही में कैपिटल मार्केट रेग्युलेटर सेबी ने एक कंसल्टेशन पेपर जारी किया है। इसमें म्यूचुअल फंड में थर्ड-पार्टी पेमेंट पर लगी पुरानी रोक में ढील देने का प्रस्ताव है। कुछ तय हालात में कोई और व्यक्ति किसी निवेशक की तरफ से फंड में पैसे डाल सकेगा। सबसे चर्चित प्रस्ताव है एम्प्लायर पेरोल डिडक्शन। यानी कोई कंपनी कर्मचारी की सैलरी में से रकम काटकर सीधे निवेश कर सकेगी, जैसा प्रोविडेंट फंड (पीएफ) या नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) के लिए पहले से होता है। इसके पीछे की मंशा अच्छी है और सेबी की सोच से मैं सहमत हूं। लेकिन निशाना गलत लोगों पर है।

बोनस

किसी लिस्टेड या ईपीएफओ-रजिस्टर्ड कंपनी का कर्मचारी, जो अकेला इसका फायदा उठा सकता है, वैसे भी सभी बैंकिंग-सुविधा-प्राप्त, सबसे डिजिटल-साक्षर और सबसे ज्यादा लक्षित किया जाने वाला निवेशक है। उसके पास पहले से सैलरी अकाउंट है। स्मार्टफोन है। सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआइपी) के लिए एक दर्जन एप हैं और आटो-डेबिट मैंडेट है जो चाहे एम्प्लायर कुछ करे या न करे, तय तारीख पर पैसे निकाल लेता है। उसे अपने और फंड के बीच एम्प्लायर की जरूरत नहीं है। डिजिटल सिस्टम पहले से वह सब कर देता है जो पेरोल रूट का वादा है, जिसमें वह 'अनुशासन' भी शामिल है जिसे लोग सैलरी डिडक्शन की खूबी बताते हैं

एक ऐसे व्यक्ति के तौर पर, जो लगभग 100 लोगों को रोजगार देता है और फंड्स के बारे में लिखता है, मैं आपको यह भी बता सकता हूं कि एम्प्लायर की तरफ से क्या होगा। असल में इस दिशा में बहुत कम ही काम होगा। जो कारोबार पहले से पीएफ, पेंशन, टैक्स कटौती, मेडिकल कवर और कई राज्यों में ऊपर से फाइलिंग से जूझ रहा हो, वह महज उदारता के चलते एक और वैकल्पिक झमेले के लिए आगे नहीं आएगा। इस कदम की तारीफ होगी और फिर यह ऐसे ही पड़ा रहेगा।

यह याद करना जरूरी है कि थर्ड-पार्टी पर रोक पहले क्यों लगी थी। यह डिजिटल से पहले के दौर की बात है, जब कोई बेईमान डिस्ट्रीब्यूटर निवेशक का चेक और हाथ से भरा आवेदन लेकर फार्म फेंक देता और अपने नाम के आवेदन के साथ चेक दोबारा जमा कर देता। यह पाबंदी ठीक इसी धोखाधड़ी को रोकने के लिए थी। वह दुनिया अब नहीं रही और नियम उस धोखे से आगे निकल चुका है जिसे रोकने के लिए बना था। इसीलिए एक सोची-समझी ढील की जरूरत है।

लेकिन अगर सेबी ढील देने वाला है, तो यह उन लोगों तक पहुंचनी चाहिए जिनके लिए एक भरोसेमंद मदद से सच में फर्क पड़ता है। ये लोग औपचारिक क्षेत्र सेक्टर में हैं ही नहीं। ये वे ड्राइवर, रसोइए, सफाईकर्मी और घरेलू सहायक हैं जिन्हें लाखों भारतीय परिवार अच्छी तरह जानते हैं और अगर कोई आसान तरीका हो, तो खुशी-खुशी उनकी मदद करें।

मैं सच में यह देखना चाहता हूं कि असंगठित क्षेत्र में छोटी, पूरी तरह दस्तावेजी और पूरी तरह ट्रेस करने योग्य थर्ड-पार्टी एसआइपी का रास्ता खुले। एक ऐसा जरिया जिससे कोई परिवार किसी कामगार की तनख्वाह में से कुछ सौ या कुछ हजार रुपये हर महीने सीधे उस कामगार के नाम के फंड में डाल सके और सेबी जिन सुरक्षाओं की परवाह करता है, वे शुरू से ही इसमें शामिल हों। यही वह ढील है जिसके लिए लड़ना चाहिए और यही वह कदम है जो उन लोगों की जिंदगी बदलेगा, जिनके बारे में पर्सनल फाइनेंस की दुनिया में कभी नहीं पढ़ते।

विजनेस से जुड़ी खबरों और अपडेट के लिए स्कैन करें या विजिट करें jagran.com

बैंकों को ग्राहकों को देनी होगी रिकवरी करने वाली एजेंसी और एजेंट की सारी जानकारी

एक अक्टूबर से लागू होंगे लोन रिकवरी से जुड़े आरबीआइ के नए नियम

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली: आरबीआइ ने ग्राहकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए लोन रिकवरी के नियमों में बदलाव किया है। इन नियमों के मुताबिक, बैंक अब उन्हीं लोगों को लोन रिकवरी एजेंट बना सकेंगे जिन्होंने इंस्टीट्यूट आफ बैंकिंग एंड फाइनेंस (आइआइबीएफ) से प्रशिक्षण प्राप्त किया हो। लोन रिकवरी एजेंट के लिए आइआइबीएफ प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाता है। इसके अलावा बैंकों को लोन लेने वाले ग्राहकों को अपनी रिकवरी एजेंसी और एजेंट की पूरी जानकारी भी देगा। रिकवरी एजेंसी में बैंक अगर कोई बदलाव करता है तो बदलाव के बारे में भी उधार लेने वालों को सूचित करना होगा। नए नियम एक अक्टूबर से लागू होंगे।

- केवल आइआइबीएफ से प्रशिक्षित एजेंट कर सकेंगे लोन की रिकवरी
- रिकवरी एजेंसी में बदलाव की भी ग्राहक को देनी होगी जानकारी

नए नियमों के मुताबिक, बैंक की तरफ से नियुक्त रिकवरी एजेंसी को इस बात की गारंटी देनी होगी कि उनके एजेंट लोन रिकवरी के लिए निर्धारित सभी नियमों का पालन करेंगे। बैंक के कर्मचारी या रिकवरी एजेंट किसी भी ग्राहक को रिकवरी संबंधित फोन काल सुबह आठ बजे से शाम सात बजे के बीच ही कर सकेंगे। ग्राहक के अनुरोध पर ही इससे अलग समय में फोन कर सकेंगे। लोन रिकवरी एजेंट को ग्राहक के घर भेजने से पहले बैंक कम से कम एक दिन पहले ई-मेल या फोन मैसेज के जरिये एजेंट की पूरी जानकारी देगा। अगर ग्राहक का ई-मेल या फोन नंबर नहीं है तो तीन दिन पहले ग्राहक के पते पर नोटिस भेजा जाना चाहिए।

आरबीआइ के नए नियमों के मुताबिक, अगर लोन लेने वाले ने उधार से संबंधित कोई शिकायत बैंक में दर्ज करा रखी है तो उस शिकायत के निपटान तक लोन लेने वाले के पास बैंक किसी कर्मचारी या रिकवरी एजेंट को नहीं भेज सकता है। कर्ज लेने वाले के पास बैंक कर्मचारी या रिकवरी एजेंट की तरफ से किए जाने वाले सभी काल की तारीख और समय दर्ज किए जाएंगे। अगर काल के दौरान बातचीत रिकार्ड की जा रही है तो इसकी जानकारी भी ग्राहकों को दी जाएगी। इस रिकार्डिंग को छह माह तक रखा जा सकेगा। बैंक को काल रिकार्ड करने का कारण भी बताना होगा।

लोन की रिकवरी के लिए बैंक ग्राहक के मोबाइल या टैबलेट में किसी टेक्नोलाजी का इस्तेमाल नहीं करेगा। अगर मोबाइल फोन बैंक से उधार लेकर नहीं खरीदा गया है तो बैंक किसी ग्राहक के मोबाइल फोन को लोन रिकवरी के नाम पर अपने कब्जे में नहीं ले सकता है।

एफपीआइ ने मई माह में 32,963 करोड़ निकाले

मुंबई, एएनआइ: विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआइ) की भारतीय शेयरों से निकासी जारी है और वे मई में लगातार तीसरे महीने शुद्ध बिकवाल रहे हैं। नेशनल सिक्योरिटीज डिपाजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) के डाटा के अनुसार, इस महीने एफपीआइ ने भारतीय शेयरों से शुद्ध रूप से 32,963 करोड़ रुपये की निकासी की है। इस ताजा बिकवाली के साथ वर्ष 2026 के पहले पांच महीनों में एफपीआइ की कुल निकासी बढ़कर 2.22 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गई है।

विदेशी निवेशकों की लगातार बिक्री का मुख्य कारण पश्चिम एशिया संघर्ष को बताया जा रहा है, जिसने वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड की कीमतों को 100 डालर प्रति बैरल के स्तर से ऊपर धकेल दिया और भारत के आयात बिल व महंगाई के दृष्टिकोण को लेकर चिंताएं बढ़ा दी हैं। हालांकि, इस सप्ताह कच्चे तेल की कीमतें 100 डालर से नीचे आ गई हैं।

राष्ट्रीय फलक

'एफआइआर के लिए हाई कोर्ट न आएं, पहले पुलिस के पास जाएं'

राज्य ब्यूरो, अहमदाबाद : गुजरात हाई कोर्ट ने हिरासत में मौत के मामले में एफआइआर दर्ज कराने की मांग वाली याचिका पर सुनवाई से इन्कार करते हुए कहा कि प्राथमिकी के लिए सीधे हाई कोर्ट न आएं। न्यायमूर्ति डीएन राय ने कहा कि भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के तहत पहले पुलिस के पास जाएं।

यदि पुलिस केस दर्ज नहीं करती है तो मजिस्ट्रेट के पास जाने का कानूनी रास्ता खुला है। न्याय के लिए पहला दरवाजा पुलिस है। वहां सुनवाई न हो तो मजिस्ट्रेट के पास जाएं। ललिता कुमारी केस का हवाला देते हुए कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने संज्ञेय अपराध में एफआइआर को जरूरी बताया है, लेकिन केस न लिखे जाने पर क्या उपाय हो, यह नहीं बताया। स्पष्ट किया कि ऐसे मामलों में सीधे हाई कोर्ट आने की जगह भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की प्रक्रिया के तहत मजिस्ट्रेट के पास जाना चाहिए।

कमजोर मानसून, ईंधन की कीमतों में वृद्धि से बढ़ सकती है खुदरा महंगाई

नई दिल्ली, रायटर : वित्त मंत्रालय ने शनिवार को अपनी मासिक रिपोर्ट में कहा कि ईंधन की कीमतों में वृद्धि और मानसून के सामान्य से कमजोर रहने के कारण खुदरा महंगाई में बढ़ोतरी हो सकती है। रिपोर्ट के अनुसार, पश्चिम एशिया संघर्ष के कारण ऊर्जा आपूर्ति में व्यवधान जारी है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के बाहरी और मूल्य दृष्टिकोण के लिए होर्मुज जलडमरूमध्य में व्यवधान की अवधि सबसे बड़ा एकल कारक बनी हुई है। ऊपरी मूल्य दबावों में तेज वृद्धि के साथ ही हाल की ईंधन कीमतों में वृद्धि आने वाले महीनों में परिवहन, ऊर्जा और खाद्य संबंधित लागतों के माध्यम से खुदरा महंगाई में धीरे-धीरे वृद्धि का संकेत देती है।

इसके अलावा बारिश की कमी और वर्तमान भू-राजनीतिक परिस्थितियों के कारण खाद्य महंगाई में वृद्धि हो सकती है, जिससे ग्रामीण मांग और समग्र विकास कमजोर हो सकता है। हालांकि, भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए निकट-अवधि का दृष्टिकोण सतर्क लचीलेपन का है। रिपोर्ट में कहा गया है कि ऊंची वैश्विक ऊर्जा कीमतों, रुपये में गिरावट, बढ़ते लागत दबावों और सामान्य से कम मानसून की संभावना को देखते हुए लगातार नीतिगत सतर्कता की आवश्यकता है। अप्रैल 2026 में खुदरा महंगाई मामूली बढ़कर 3.48 प्रतिशत रही है और यह अब तक आरबीआइ के लक्ष्य से नीचे बनी हुई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अप्रैल 2026 में भारतीय अर्थव्यवस्था ने अपनी विकास गति को बनाए रखा, जिसमें ई-वे बिल जेनरेशन, पीएमआइ इंडेक्स और बिजली की खपत में वृद्धि रही है।

- वित्त मंत्रालय ने मासिक रिपोर्ट में जताई संभावना, भू-राजनीतिक परिस्थितियों के कारण खाद्य महंगाई बढ़ने का भी अनुमान

पंजाब में आरटीआइ एक्टिविस्ट की गोली मारकर हत्या

जागरण संवाददाता, फगवाड़ा: जालंधर के आरटीआइ एक्टिविस्ट सिमरनजीत सिंह की शुक्रवार को फगवाड़ा के गांव महेड़ू में गोली मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस ने एक फार्च्यूनर, एक पिस्टल, एक राइफल, दो मोबाइल व एक खोल बरामद किया है। बताया जाता है कि सिमरनजीत को दो गनमैन मिले थे, लेकिन वे साथ नहीं थे।

परिवार के लोगों ने बताया कि गनमैन सुबह नौ बजे ड्यूटी पर आते थे। मगर, सिमरनजीत इससे पहले ही घर से निकल गए, इस वजह से गनमैन साथ नहीं थे। सिमरनजीत शनिवार को जालंधर से फगवाड़ा पहुंचे थे। सुबह करीब 10 बजे वह गांव महेड़ू के पास एक निजी यूनिवर्सिटी के ला गेट के पास खड़े थे। तभी कुछ मलावरों ने उन पर गोलियां बरसाईं। एक गोली उनके सिर में लगी, जिससे वह जमीन पर गिर पड़े और मौके पर ही मौत हो गई।

पिलर टूटा तो खुली घटिया निर्माण व लापरवाही की परत, गिराया जा सकता है पूरा पुल

अनुराग मिश्रा ● जागरण

- 92 करोड़ से बने पुल की आई सच्चाई से भ्रष्टाचार की आशंका
- कांग्रेसियों का प्रदर्शन, कमेटी से हटाए गए मुख्य प्रबंधक

हमीरपुर में बेतवा नदी पर बन रहा पुल का पिलर शुक्रवार को टूटा था। जागरण

हमीरपुर : बेतवा नदी पर 92 करोड़ रुपये की लागत से बन रहे मोराकांदर-परसनी पुल का पिलर टूटकर गिरने से ढही स्लैब के मलबे के नीचे दबकर छह लोगों की मौत ने पूरे निर्माण को भ्रष्टाचार और घटिया निर्माण के घेरे में ला दिया है।

अब सवाल केवल एक पिलर के गिरने का नहीं, बल्कि पुल की गुणवत्ता व निर्माण प्रक्रिया की निष्पक्ष जांच का है। जिस पिलर के गिरने से हादसा हुआ, उसमें तीन माह पहले ही दरारें पड़ गई थीं। तब मरम्मत के नाम पर सीमेंट-मसाला भरकर लीपापोती कर दी गई। इसमें न सीमेंट सही थी, न सरिया। यदि जांच में निर्माण की गुणवत्ता खराब सिद्ध होती है तो पुल गिराकर नए सिरे से बनाया जा सकता है। उधर, कांग्रेसियों ने शनिवार को मौके पर प्रदर्शन कर गंभीर आरोप लगाए। गुरुवार रात करीब साढ़े 12 बजे बेतवा नदी पर बन रहे पुल का पांचवां पिलर तीन टुकड़ों में बंटकर गिरने से स्लैब भी नीचे आ गिरी थी। इसमें दबकर चार मजदूरों व दो गार्डों की मौत हो गई थी।

जिलाधिकारी अभिषेक गोयल ने जिलास्तर पर तीन सदस्यीय जांच समिति गठित की थी। समिति में अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे सुरेश कुमार को अध्यक्ष, अधीक्षण अभियंता हमीरपुर व बांदा वृत्त लोक निर्माण विभाग सुनील कांत एवं राज्य सेतु निगम के कानपुर अंचल के मुख्य परियोजना प्रबंधक बीके सेन को सदस्य नामित किया गया। दबाव बढ़ा तो बीके सेन को कमेटी से हटाकर मुख्यालय के चीफ इंजीनियर प्रेम सिंह को शामिल किया गया। घटना को लेकर शुक्रवार रात कुरारा थाने में केस दर्ज किया गया।

ठगों को प्री एक्टिवेट सिम देने वाले गिरोह का पर्दाफाश, 12,383 सिम कार्ड बरामद

जागरण संवाददाता, कानपुर

- दिल्ली में बनाया था काल सेंटर व सिम बिक्री करने का कार्यालय, पांच गिरफ्तार
- एनसीआरपी पोर्टल पर कई राज्यों से मिली थीं शिकायतें, एसआइटी करेगी जांच

साइबर ठगों को प्री एक्टिवेटेड सिम मुहैया कराने वाले अंतरराज्यीय गिरोह का पर्दाफाश कर पुलिस ने पांच आरोपितों को शनिवार को गिरफ्तार किया है। गिरोह ने दक्षिणी दिल्ली में काल सेंटर व सिमकार्ड बिक्री करने का कार्यालय बना रखा था। आशंका है कि गिरोह का नेटवर्क सिंगापुर, दुबई समेत कई देशों के ठगों से जुड़ा है। नेशनल क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल (एनसीआरपी) पर गिरोह के विरुद्ध कानपुर, अलीगढ़, गाजियाबाद, दिल्ली, गुजरात, राजस्थान समेत कई राज्यों में शिकायतें दर्ज हैं। ठगी की 11 घटनाओं में 36 लाख रुपये ठगने की जानकारी पुलिस को मिली है। आरोपितों के पास से 12,383 सिमकार्ड (6383 प्री-एक्टिवेटेड), 40 एटीएम कार्ड आदि मिले हैं। गिरोह कानपुर में भी काल सेंटर खोलना चाह रहा था। विशेष जांच टीम मामले की जांच करेगी।

हैदराबाद की आइटी कंपनी में कार्यरत केशव अग्निहोत्री ने 27 मई को पनकी थाने में आइटी एक्ट व धोखाधड़ी की धारा में मुकदमा कराया था। यह बताया गया कि उनसे 3.50 लाख रुपये की ठगी की गई है। ठगी का अहसास होने पर आनलाइन साइबर सेल पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई गई। पुलिस आयुक्त रघुबीर लाल ने बताया कि जांच में विभिन्न राज्यों के लोगों से ठगी करने की जानकारी मिली है। कानपुर में पकड़े गए आरोपित गाजियाबाद के ऋषि शर्मा, उत्सव त्यागी व दुर्गेश कुमार, नई दिल्ली के निवासी अजय मित्तल व हरियाणा के सचिन हैं। अजय मूलरूप से आगरा का है। ऋषि व उत्सव नेक्स जेनरेशन इंटरप्राइजेज, अजय श्री श्याम इंटरप्राइजेज नाम से काल सेंटर चला रहा था। सचिन व दुर्गेश सिमकार्ड एक्टिवेट करते थे।

मेलोडी टाफी की नकल पर कोर्ट सख्त, मायडैडी ब्रांड पर लगाई रोक

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: पटियाला हाउस स्थित जिला अदालत ने मशहूर कन्फेक्शनरी कंपनी पार्ले प्रोडक्ट्स की टाफी मेलोडी की नकल के मामले में अहमदाबाद स्थित बापूजी फूड प्रोडक्ट्स और उससे जुड़े पक्षों के खिलाफ अंतरिम निषेधाज्ञा जारी की है। कोर्ट ने कंपनी को मायडैडी नाम या उससे मिलते-जुलते किसी भी ट्रेडमार्क, पैकेजिंग और डिजाइन का उपयोग करने से तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है।

पार्ले ने कोर्ट में दायर याचिका में आरोप लगाया था कि मायडैडी टाफी की पैकेजिंग, रंग संयोजन, फांट शैली उनकी मेलोडी कैंडी से भ्रामक रूप से काफी मिलते-जुलते थे। कंपनी का कहना था कि उपभोक्ता पहली नजर में दोनों उत्पादों को एक ही ब्रांड का मान सकता है। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने पार्ले के पक्ष को मजबूत मानते हुए मायडैडी ब्रांड के निर्माण, बिक्री, विज्ञापन और वितरण पर रोक लगा दी। साथ ही अमेजन समेत ई-कामर्स प्लेटफार्म व इंटरनेट मीडिया से विवादित उत्पादों की लिस्टिंग हटाने का निर्देश दिया।

साप्ताहिक राशिफल

रविवार, 31 मई, 2026 से शनिवार 6 जून, 2026 तक

पं. बी. बी. शास्त्री 'देवेश'

मेष (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ)
मन में विचारों की अधिकता, व्यापार में प्रतिस्पर्धा, परिस्थिति के अनुरुप कार्य करें, शारीरिक चिन्ता, साधनों की पूर्ति, भविष्य के लिये योजना, बौद्धिक कार्य में सफलता, चयन में देरी, स्वास्थ्य में सजगता, शत्रुपक्ष प्रभावी, प्रणय में सुख, धर्म में रुचि, राजनैतिक अपयश, शुभ अंक 1

वृष (इ, ऊ, ए, ओ, पा, वी, वू, वे, वो)
वाणी पर संयम, कार्य करने वालों का ध्यान रखें, दिनचर्या व्यस्ततम्, चिन्ता का समाधान, भूमि, भवन कार्य में अवरोध, सन्तान से सहयोग, सामाजिक कार्य में अपयश, मित्रों से सहयोग, ससुराल से सहयोग, यात्रा से बचें, अधिकारी से सहयोग, राज्यपक्ष से सावधान, शुभ अंक 2

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, हा)
कार्य में सफलता, धनागम में प्रयास, विदेश कार्य में देरी, समय का सदुपयोग करें, महिला से सहयोग, सामाजिक अपयश, परोपकार का योग, शैक्षिक सफलता, स्वास्थ्य में सजगता, जीवनसाथी का मिलन, व्यय अधिक, शुभ अंक 4

कर्क (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)
धैर्य से कार्य करें, कार्य में प्रयास करें, धनागम में सुधार, साझेदारी में सावधानी, सामाजिक कार्य में यश, माता-पिता का ध्यान रखें, शिक्षा में रुचि, नकारात्मक विचारों से बचें, मित्रों से सहयोग, क्रोध, ईर्ष्या से बचें, प्रणय में सुख, व्यय अधिक, शुभ अंक 5

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)
अर्थसाधन में प्रयास, कार्य क्षेत्र में विस्तार, पारिवारिक सहयोग, भूमि भवन कार्य में देरी, सन्तान से सहयोग, चिन्ता का समाधान, नौकरी के अवसर, वाद विवाद से बचें, रक्त विकार, वायु विकार प्रभावी, जीवनसाथी का मिलन, राजनैतिक अपयश, शुभ अंक 6

कन्या (टो, पा, पी, पू, ष, ण, उ, पे, पो)
धनागम में सफलता, आत्मविश्वास से कार्य करें, साझेदारी में सावधानी, लक्ष्य के प्रति सजगता, समस्या का समाधान, चिन्ता का समाधान, स्थान पद परिवर्तन, मित्रों से सहयोग, वायु विकार, त्वचा विकार प्रभावी, भ्रमण, मनोरंजन योग, शुभ अंक 7

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)
पारिवारिक समस्या का समाधान, आत्मविश्वास से कार्य करें, निजी मतभेद, धन के आवागमन में सावधानी, साधनों की पूर्ति, आत्मसंयत रखें, चयन योग, सन्तान से सहयोग, ससुराल से सहयोग, अधिकारी से सहयोग, आय में प्रयास, शुभ अंक 8

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)
कार्य में सुधार, संयम से कार्य करे, साझेदारी में सावधानी, चिन्ता का समाधान, निजी मतभेद, पारिवारिकजनों का ध्यान रखें, साधनों की पूर्ति, सन्तान से सहयोग, मित्रों से सहयोग, त्वचा वायु विकार प्रभावी, प्रणय में सुख, शुभ अंक 9

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)
कार्य क्षेत्र में नई युक्ति से कार्य करें, निर्णय सलाह से करें, सामाजिक यश, पूंजी निवेश में सावधानी, लक्ष्य के प्रति सजगता, शिक्षा में एकाग्रता, चयन में सफलता, स्थान पद परिवर्तन, जीवनसाथी का मिलन, वाद विवाद से बचें, राजनैतिक अपयश, शुभ अंक 1

मकर (भो, जा, ज, खी, खू, खे, खो, गा, गी)
कार्य क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा से चिन्ता, धनागम में सफलता, पारिवारिक मंगल कार्य, माता-पिता के प्रति सजगता, अतिविश्वास से बचें, शिक्षा में एकाग्रता, विदेश कार्य में देरी, सन्तान से सहयोग, शत्रुपक्ष से सावधान, खानपान पर ध्यान दे, धर्म में रुचि, आय में सुधार, शुभ अंक 2

कुम्भ (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सा, दा)
आत्मसंयत रहकर कार्य करे, मन में विचारों की अधिकता, चिन्ता का समाधान, अनुभव और युक्ति से कार्य करें, धन के आवागमन में सावधानी, साधनों की पूर्ति, सन्तान से अनबन, वाद में पराजय, शत्रुपक्ष से सावधान, दाम्पत्य में सुख, शुभ अंक 4

मीन (दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, ची)
कार्य में सहयोग से सफलता, अर्थसाधन में युक्ति, विदेश कार्य में देरी, स्वार्थीजनों से सावधान, वाहन, आभूषण योग, सन्तान से सहयोग, चयन में सफलता, कुसंग से बचें, दाम्पत्य में सुख, स्थान पद परिवर्तन प्रभावी, मनोरंजन भ्रमण योग, व्यय अधिक, शुभ अंक 5

समोरच्या बाकावरून

पी. चिदम्बरम

झुरळांच्या देशा...

झुरळाच्या रूपात आमचा, तरुणांचा आवाज ऐकला जाणार असेल, तर आम्हाला स्वत:ला झुरळ म्हणवून घेणेदेखील चालणार आहे, असे सीजेपी हा पक्ष म्हणतो. आम्ही अशा लोकांचे प्रतिनिधित्व करतो ज्यांना 'व्यवस्था मोजायलाच विसरली आहे', असे या पक्षाचे म्हणणे आहे.

झुरळ हा काही अपशब्द नाही की ती शिवीही नाही. विकिपीडिया सांगते की, झुरळांनी त्यांची मूळ शरीररचना सुमारे २० कोटी वर्षांपासून टिकवून ठेवली आहे. म्हणजेच, सुमारे तीन लाख वर्षांपूर्वी आफ्रिकेत होमो सेपियन्सचा उदय झाला, त्याही आधी १९ कोटी ९७ लाख वर्षे. त्यामुळे माणसांपेक्षाही झुरळांचाच या जगावर जास्त हक्क आहे.

सायन्स एन्सायक्लोपीडिया आपल्याला सांगते की, झुरळे माणसांना चावत नाहीत किंवा त्यांच्यावर हल्लाही करत नाहीत, पण माणसे मात्र झुरळांना मारतात. अर्थात, झुरळे जिवाणू वाहून नेतात, रोगांचा प्रसार करतात आणि ॲलर्जी निर्माण करतात. पण माणसेही तेच करतात. ती जिवाणू वाहून नेतात, रोगांचा प्रसार करतात आणि ॲलर्जी निर्माण करतात (विशेषत: विरोधी गटांमध्ये). काही माणसांना इतर माणसे 'किळसवाणी' वाटतात, अगदी त्याचप्रमाणे काही माणसांना झुरळे 'किळसवाणी' वाटतात.

डिवचलेला कळप

काही दिवसांपूर्वी, एका उच्चपदस्थांनी झुरळांना झोपेतून जागे केले. देव त्यांचे भले करो, कारण त्यांनी लगेच स्पष्टीकरण दिले की ते बनावट पदव्या बाळगून न्यायालयांमध्ये फिरणाऱ्या बनावट वकिलांबद्दल बोलत होते. अशा बनावट वकिलांना शिव्याशाप द्यायलाच हवेत, पण एकाही झुरळाला शिव्या दिल्या जाऊ नयेत, असे मला प्रमाणिकपणे वाटते. एकदा का झुरळांचा कळप डिवचला गेला की तो सतत बिथरलेलाच राहतो. (जसे 'एकदा कर्ज घेतले, ते कायमच डोक्यावर राहते', अगदी तसेच). तर अशा काही डिवचल्या गेलेल्या झुरळांनी एक राजकीय पक्ष स्थापन केला आहे, एक 'एक्स' हँडल सुरू केले आहे, एक वेबसाइट तयार केली आहे आणि एक इन्स्टाग्राम हँडल उघडले आहे. त्यासंदर्भातील अगदी अलीकडच्या आकडेवारीनुसार, त्या हँडलचे दोन कोटी २० लाखांपेक्षा जास्त फॉलोअर्स होते.

त्या डिवचल्या गेलेल्या झुरळांनी प्रत्युत्तर दिल्याचा परिणाम असा झाला की माणसेही डिवचली गेली आणि हादरली. ती माणसे त्यांच्या कोल्हापुरी चपलांमध्ये थरथर कापत असतील, असेही मला वाटते. तसे नसेल तर, जिच्याकडे १.४५ दशलक्ष गणवेशधारी सक्रिय जवान, ४,२०० मुख्य रणगाडे, ५८० लढाऊ विमाने, २७० नौका, २ विमानवाहू जहाजे आणि शेकडो अण्वस्त्रे असलेले सशस्त्र दल आहे, आणि जिच्या तिजोरीत आरबीआयकडून आलेला २,८६,५८८ कोटी रुपयांचा भला मोठा निधी आहे, अशी भारताची सर्वोच्च कार्यकारी यंत्रणा ३० वर्षीय अभिजित दिगपे यांनी उघडलेल्या, केवळ डिजिटल पातळीवर अस्तित्वात असलेल्या झुरळ जनता पक्षाच्या (सीजेपी) एका क्षुल्लक 'एक्स' हँडलला का घाबरेल आणि 'एक्स'ला ते हँडल बंद करायला का सांगेल?

अभिजित दिगपे परदेशात, शत्रूसारख्या वागणाऱ्या आपल्या मित्रांच्या, (frenemy) डोनाल्ड ट्रम्प यांच्या देखरेखीखाली, आजच्या प्रथेनुसार एआय या विषयावर नाही, तर चक्क 'जनसंपर्क' या विषयात पदव्युत्तर पदवी घेत आहेत. त्यांनी त्यांच्या वेबसाइटवर सीजेपीची उद्दिष्टे मांडली आहेत. 'झुरळाच्या रूपात आमचा, तरुणांचा आवाज ऐकला जाणार असेल, तर आम्हाला स्वत:ला झुरळ म्हणवून घेणेदेखील चालणार आहे.' 'आळशी आणि बेरोजगारांचा आवाज' ही टॅगलाइन घेऊन, सीजेपी हा पक्ष असा दावा करतो की तो अशा लोकांचे प्रतिनिधित्व करतो ज्यांना 'व्यवस्था मोजायलाच विसरली आहे'. त्यांना बेरोजगार, आळशी, सतत ऑनलाइन असणारे आणि व्यावसायिकपणे टीका-टिप्पणी करू शकणारे लोक त्याच्या पक्षात सामील व्हावेत असे वाटते. गांधी, आंबेडकर आणि नेहरू यांच्यापासून त्याने प्रेरणा घेतली आहे. सीजेपीचा जाहीरनामा वाचून हसू येते. तो आपल्याला विचार करायला भाग पाडतो; एरव्ही राजकीय पक्षांचे जाहीरनामे वाचून झोप येते.

हेच ते कारण...

तरुण- तरुणींमध्ये असलेले व्यापक नैराश्य, दु:ख आणि वैफल्य हा सीजेपी या पक्षाचा आधार आहे. त्याची कारणे :

■ बेरोजगारी: एकूण बेरोजगारीचा दर ५.२ टक्के आहे; तर युवकांमधील बेरोजगारीचा दर १६-१७ टक्के आहे. देशाचे एकूण श्रमशक्ती मनुष्यबळ ६४.३ कोटी आहे आणि त्यांचा श्रमशक्तीतील सहभाग दर जास्तीत जास्त ६० टक्के आहे. उरलेले ४० टक्के किंवा सुमारे २५ कोटी लोक म्हणजे, मला माफ करा, पण झुरळे आहेत. पण या सर्व झुरळांची मते मिळाली, तर सीजेपी सरकार स्थापन करू शकेल. (२०२४ च्या लोकसभा निवडणुकीत भाजपला २३.६ कोटी मते आणि काँग्रेसला १३.७ कोटी मते मिळाली होती).

■ पेट्रोल आणि डिझेल: गतिशीलता हा झुरळांचा स्थायीभाव आहे. इंधनाच्या वाढलेल्या किमती झुरळांच्या गतिशीलतेवर मर्यादा घालतात. दिल्लीत पेट्रोलची किंमत १०२.१२ रुपये आणि डिझेलची किंमत ९५.२० रुपये झाली आहे. भाजपला मतदान केल्याबद्दल, कोलकाताच्या रहिवाशांना पेट्रोल आणि डिझेलच्या दरांत वाढ होऊन अनुक्रमे ११३.५१ रुपये आणि ९९.८२ रुपये या वाढीव किमतीचे बक्षीस मिळाले आहे.

■ कारखान्यांमधील नोकऱ्या: झुरळे, मुळातच आळशी असतात. ती दररोज सकाळी लवकर उठून परिसरातील शाखेत जात नसल्यामुळे, त्यांना सरकारी नोकरी कधीच मिळणार नाही. त्यांच्यापुढचा सर्वोत्तम पर्याय म्हणजे कारखान्यातील नोकरी. सांख्यिकी आणि कार्यक्रम अंमलबजावणी मंत्रालय (MoSPI) नुसार, भारतात २ लाख, ६०हजार ६१ नोंदणीकृत कारखाने आहेत. त्यांमधील नोकऱ्यांची अंदाजित संख्या १.९५ कोटी इतकी आहे. कृत्रिम बुद्धिमत्तेमुळे (एआय) अनेक नोकऱ्यांची गरजच उरणार नाही; शिवाय, २५ कोटी 'झुरळां'ना कारखान्यात कधीच नोकरी मिळणार नाही. म्हणूनच, त्यांच्यात हे वैफल्य निर्माण झाले आहे.

■ कौटुंबिक आधार: दरमहा कुटुंबासाठी मिळणाऱ्या पाच किलो मोफत धान्याच्या बदल्यात, झुरळांना कुटुंबाकडून- विशेषत: मातांकडून- आधार मिळतो. घरगुती कर्ज हे सकल देशांतर्गत उत्पादनाच्या (जीडीपी) ४२ टक्के इतके आहे, तर घरगुती बचत केवळ पाच-सहा टक्केच आहे; त्यामुळे या 'झुरळां'ना कुटुंबाकडून रोख स्वरूपात फारसा आर्थिक आधार मिळत नाही. पैशांच्या बाबतीत ते अत्यंत हतबल असतात.

■ विकसित भारताचे अब्जाधीश: 'विकसित भारता'मध्ये आपणही अब्जाधीश बनू, अशी आशा या 'झुरळांना' होती. मात्र, भाजपच्या १२ वर्षांच्या राजवटीनंतरही, अब्जाधीशांची संख्या अत्यंत संथ गतीने वाढत आहे. सध्याची आकडेवारी पाहता, अब्जाधीशांची संख्या २०५ आहे; आणि अब्जाधीश बनण्याच्या प्रतीक्षेत २५ कोटी 'झुरळे' रांगेत उभी आहेत. २०१४ मध्ये 'अच्छे दिन आएंगे' या घोषणेअंतर्गत जे १५ लाख रुपये देण्याचे आश्वासन दिले गेले होते, त्या रकमेचीही ही मंडळी वाट पाहत आहेत.

आशांवर पाणी

झुरळांनी त्यांच्या 'झुरळ आर्थिक सल्लागारां'कडे (C- EA) धाव घेतली. त्यांनी झुरळांना एकदम गंभीर सल्ला दिला. 'आर्थिक वर्ष २०२७ मध्ये व्यापार तूट लक्षणीयरीत्या वाढेल; त्याचप्रमाणे चालू खात्यातील तूटही वाढेल. महागाई वाढण्याचा धोका अधिक आहे. आधीच गुंतागुंतीच्या असलेल्या कृषी क्षेत्राच्या अर्थकारणात सरासरीपेक्षा कमी असलेला यंदाच्या मान्सूनची भर पडली आहे. अशा परिस्थितीत, विश्वासार्ह कर धोरण, नियामक बाबींमधील निश्चितता आणि गुंतवणूकदारांसाठी सुलभता निर्माण करून- स्थिर व दीर्घकालीन भांडवल आकर्षित करणे हे काम अधिकच आव्हानात्मक बनते'. (इंडियन एक्स्प्रेस, २३ मे २०२६).

महाविपत्तीची चाहूल

या महाविपत्तीला रोखण्याचा झुरळांच्या मते एकमेव मार्ग म्हणजे मुख्य निवडणूक आयुक्तांच्या (CEC) मदतीने मानवांकडून झुरळांकडे सत्तेचे शांततापूर्ण हस्तांतरण घडवून आणणे.

लेखक भारताचे माजी अर्थमंत्री आहेत.
संकेतस्थळ : pchidambaram.in ट्विटर : @Pchidambaram_IN

सविस्तर

पुढचे झहीर, बुमरा, शमी मिळायचे कसे?

अन्वय सावंत

इंडियन प्रीमियर लीग अर्थात 'आयपीएल'ची लोकप्रियता दिवसेंदिवस वाढत आहे. धावांच्या राशी, चौकार-षटकारांचा पाऊस यामुळे प्रेक्षक आपसूकच या स्पर्धेकडे आकर्षित होत आहेत. परंतु स्पर्धेतील नियम आणि परिस्थिती पूर्णपणे फलंदाजांच्या पक्षात असल्याने गोलंदाज मात्र हतबल होताना दिसतात. त्यामुळे भविष्यात भारताला झहीर, बुमरा आणि शमी यांच्या तोडीचे वेगवान गोलंदाज मिळणार कसे, असा प्रश्न उपस्थित होत आहे.

''ट्वेन्टी-२० क्रिकेट आता व्यवसाय आणि मनोरंजनाचे साधन बनले आहे. 'आयपीएल'ची रचनाही त्याच पद्धतीने करण्यात आली आहे. या स्पर्धेत फलंदाजीला अनुकूल खेळपट्ट्या तयार केल्या जातात. स्पर्धेतील फिरकीपटू चेंडू वळवण्याचा प्रयत्नच करत नाहीत. केवळ धावा रोखण्यावर त्यांचे लक्ष असते.'' अशी वक्तव्ये एखाद्या टीकाकाराने केली तर ते समजण्यासारखे आहे. मात्र, या स्पर्धेतील एका संघाशी (सनरायजर्स हैदराबाद) जोडला गेलेला आणि सर्वकालीन सर्वोत्कृष्ट गोलंदाजांमध्ये गणना होणारा मुथय्या मुरलीधरन जेव्हा असे शब्द उच्चारतो, तेव्हा ते नक्कीच विचार करायला भाग पाडते.

एकेकाळी 'आयपीएल' म्हणजे फलंदाज आणि गोलंदाज यांच्यातील तगडी स्पर्धा मानली जायची. मात्र, गेल्या काही हंगामांत हे चित्र बदलून गेले आहे. आता २०० धावांचा टप्पाही सामान्य झाला आहे. यंदाच्या हंगामात पहिल्या डावातील सरासरी धावसंख्या १९०च्या पुढे गेली, तर विजयासाठी लागणारी सरासरी धावसंख्या २१५ पर्यंत पोहोचली आहे. या हंगामात तब्बल १४०० हून अधिक षटकार मारले गेले आहेत. 'आयपीएल'साठी हा नवा विक्रम ठरतो. यात एकट्या वैभव सूर्यवंशीचे १६ सामन्यांत विक्रमी ७२ षटकार. ही फटकेबाजी प्रेक्षकांना मनोरंजन देत असली, तरी भारतीय क्रिकेटच्या भविष्यासाठी हा 'ट्रेंड' गंभीर प्रश्न निर्माण करणारा आहे. सपाट खेळपट्ट्या, बॅट्सचा वाढता आकार, 'इम्पॅक्ट प्लेअर' नियमाचा प्रभाव, हे घटक गोलंदाजांसाठी मारक ठरत आहेत.

फलंदाजांसाठी अनुकूल खेळपट्ट्या

''क्रिकेटमध्ये आता प्रायोजक आणि प्रेक्षक यांचाही विचार करावा लागतो. संतुलित खेळपट्ट्या प्रेक्षकांसाठी कंटाळवाण्या ठरू शकतात. चेंडू सातत्याने सीमारेषेबाहेर जात नसल्यास प्रेक्षक सामन्यात रस घेणार नाहीत. त्यामुळे प्रायोजकही जाण्याची भीती आहे. या सगळ्याकडेही लक्ष द्यावे लागते,'' असे मुरलीधरन यंदाच्या हंगामातील एका सामन्यानंतर म्हणाला. 'आयपीएल'मध्ये प्रेक्षकांना मनोरंजन हवे. त्यामुळे बहुतांश मैदानांवर फलंदाजांसाठी नंदनवन ठरणाऱ्या खेळपट्ट्या तयार केल्या जातात. अलीकडे लाल आणि काळ्या मातीचा एकत्रित वापर करून खेळपट्ट्या तयार करण्याचे प्रमाण वाढले आहे. अशा खेळपट्ट्यांवर चेंडूला सीम किंवा स्विंग मिळणे कठीण होते. पूर्वी ट्वेन्टी-२० क्रिकेटमध्ये १७०-१८० धावा स्पर्धात्मक मानल्या जायच्या. आता २२० धावाही सुरक्षित वाटत नाहीत. परिणामी गोलंदाजांवर मानसिक दडपण वाढते. प्रत्येक चूक महागडी ठरते आणि गोलंदाजाचा आत्मविश्वास ढासळतो. यात नुकसान भारतीय क्रिकेटचे होत आहे.

गोलंदाजांच्या मानसिकतेत बदल

खेळपट्ट्यांचे स्वरूप, फलंदाजांचे वर्चस्व यामुळे आता गोलंदाजांच्या मानसिकतेतही मोठा बदल झाला आहे. पूर्वी फलंदाजाला बाद करण्यासाठी गोलंदाज विशिष्ट योजना आखायचे. आता मात्र त्यांचे मुख्य उद्दिष्ट धावा रोखणे इतकेच असते. बळी मिळवण्यासाठीची आक्रमक वृत्ती कमी होत चालली आहे. अखेरच्या हाणामारीच्या षटकांत जवळपास प्रत्येक गोलंदाज 'वाइड यॉर्कर' किंवा 'स्लोअर बॉल'वर अवलंबून असतो. विविधता कमी झाली आहे. फलंदाजांना त्यामुळे गोलंदाजांचा अंदाज सहज बांधता येतो. आखूड टप्प्याचे चेंडू टाकणे किंवा टप्पा धरून ठेवून गोलंदाजी करणे हे आता अतिशय दुर्मीळ झाले आहे. मात्र, भुवनेश्वर कुमार, शमी आणि जोश हेझलवूड यांसारखे अनुभवी वेगवान गोलंदाज, जे अजूनही पारंपरिक शैलीला प्राधान्य देतात, ते आजही प्रभावी ठरत आहेत.

फिरकीपटूंचाही संघर्ष

लहान मैदाने आणि दवाचा परिणाम यामुळे फिरकी गोलंदाजही संघर्ष करताना दिसत आहेत. एकेकाळी सामन्याचे पारडे फिरवणारे फिरकीपटू आता कर्णधारांच्या योजनांमध्ये दुय्यम ठरतात. युजवेंद्र चहलसारख्या अनुभवी फिरकीपटूला एका सामन्यात (दिल्ली कॅपिटल्सविरुद्ध) एकही षटक टाकण्याची संधी मिळत नाही, ही गोष्ट या बदलत्या प्रवाहाची साक्ष देते. 'आयपीएल' इतिहासातील सर्वाधिक बळी घेणाऱ्या गोलंदाजावरच विश्वास दाखवला जात नसल्याने अनेक प्रश्न उपस्थित होतात. कुलदीप यादवसारखा गुणवान आणि कौशल्यसंपन्न फिरकीपटूही फलंदाजधार्जिण्या 'आयपीएल'मध्ये यशापासून वंचित राहतो. त्यातच कर्णधार सावध पवित्रा अवलंबताना डावखुऱ्या फलंदाजांविरुद्ध डावखुरे फिरकीपटू आणि लेग-स्पिनर यांना गोलंदाजी देणे टाळतात. हे अपयश केवळ भारतीय फिरकीपटूंपुरते मर्यादित नाही. अफगाणिस्तानच्या रशीद खानची विश्वातील सर्वोत्तम फिरकी गोलंदाजांमध्ये गणना केली जाते. मात्र, शुक्रवारी (२९ मे) झालेल्या क्वालिफायर-२च्या सामन्यात डावखुरा वैभव सूर्यवंशी खेळपट्टीवर असल्याने गुजरात टायटन्सचा कर्णधार शुभमन गिलने रशीदला सुरुवातीला केवळ एक षटक टाकू दिले. मग त्याला थेट डावातील सर्वांत अवघड अर्थात शेवटचे षटक टाकण्यास मिळाले. या दोन षटकांत मिळून त्याने ४५ धावा खर्ची केल्या. यंदाच्या हंगामात फिरकीपटू षटकामागे ९.२५ हून अधिक धावा देत आहेत. 'आयपीएल'मधील ही आजवरची सर्वांत वाईट कामगिरी!

'इम्पॅक्ट प्लेअर' नियमाचा प्रभाव

'इम्पॅक्ट प्लेअर' (प्रभावी खेळाडू) नियमामुळे संघांना अतिरिक्त फलंदाज खेळवणे शक्य झाले आहे. त्यामुळे फलंदाजीची खोली ८-९ क्रमांकापर्यंत वाढते. पूर्वी फलंदाजांमध्ये बाद होण्याची भीती असायची, कारण खालची फळी मर्यादित होती. आता मात्र पहिल्या चेंडूपासून शेवटच्या चेंडूपर्यंत फटकेबाजी, हेच प्रत्येक संघाचे धोरण असते. या नियमामुळे अष्टपैलू खेळाडूंचे महत्त्वही कमी झाले आहे. अनेक युवा खेळाडूंचा वापर केवळ फलंदाज म्हणून केला जातो. त्यामुळे त्यांच्यातील गोलंदाजी किंवा क्षेत्ररक्षण कौशल्य विकसित होण्याची संधी कमी होत आहे. भारताचा माजी कर्णधार रोहित शर्मासह विद्यमान कर्णधार गिल, अक्षर पटेल, हार्दिक पंड्या आदी नामांकित खेळाडूंनी या नियमाला विरोध दर्शवला आहे. यंदाच्या हंगामापूर्वी झालेल्या कर्णधारांच्या बैठकीत हा नियम मागे घेण्याबाबत चर्चा झाली होती. मात्र, नियम २०२७ पर्यंत कायम राहणार असल्याचे भारतीय क्रिकेट नियामक मंडळाने (बीसीसीआय) स्पष्ट केले.

भारतीय गोलंदाज मागे पडण्याची भीती

भारताला जागतिक क्रिकेटमध्ये वर्चस्व टिकवायचे असेल, तर दर्जेदार वेगवान गोलंदाजांची फळी आवश्यक आहे. बुमरा, शमी, सिराज, इशांत, भुवनेश्वर, उमेश यादव यांच्या जोरावर भारताने ऑस्ट्रेलिया, इंग्लंड किंवा दक्षिण आफ्रिकेसारख्या संघांविरुद्ध परदेशात कसोटी सामन्यांत विजय मिळवले. आता मात्र भारताच्या युवा गोलंदाजांचा दर्जा ढासळलेला दिसतो. 'आयपीएल'मध्ये सातत्याने धावा खर्ची केल्यास गोलंदाजाचा आत्मविश्वास कमी होतो. युवा गोलंदाज जोखीम घेण्याऐवजी बचावात्मक क्रिकेटला महत्त्व देतात. याचा परिणाम भारताच्या कसोटी क्रिकेटवरही होऊ शकतो. ट्वेन्टी-२० खेळून विकसित होणाऱ्या गोलंदाजी कौशल्याचा प्रभाव बहुदिवसीय प्रारूपात पडतो.

'दीर्घकालीन' कार्यक्रम आवश्यक

जागतिक दर्जाचे गोलंदाज घडवायचे, तर त्यासाठी संयम, तंदुरुस्ती आणि तांत्रिक कौशल्य आवश्यक आहे. रणजी करंडकात प्रदीर्घ स्पेल टाकण्याची सवय लागायला हवी. अकीब नबीसारख्या प्रथमश्रेणी क्रिकेटमध्ये चमक दाखवणाऱ्या गोलंदाजाला योग्य मानही मिळायला हवा. तसेच राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी आणि राज्य संघटनांनी आता गोलंदाजांसाठी स्वतंत्र 'दीर्घकालीन' कार्यक्रम तयार करण्याची गरज आहे. (बीसीसीआयने २०२४ मध्ये उदयोन्मुख वेगवान गोलंदाजांसाठी स्वतंत्र करार सुरू केले होते. मात्र, वर्षभरातच ते इतिहासजमा झाले.) याशिवाय देशांतर्गत क्रिकेटमध्ये अधिक स्पर्धात्मक खेळपट्ट्या तयार करणे अत्यावश्यक आहे. बॅट आणि चेंडू यांच्या द्वंद्वात समतोल न राखल्यास त्याचा सर्वांत मोठा फटका भारतीय क्रिकेटला बसेल. 'आयपीएल' मनोरंजक ठरेल पण भविष्यातले झहीर, बुमरा, शमी मिळणे अशक्यप्राय होईल.

anvay.sawant@expressindia.com

चांदनी चौकातून

दिल्लीवाला

पाच राज्यांतील धार्मिक वाद

केरळ, आसाम, तमिळनाडू, पश्चिम बंगाल आणि पुडुचेरी या राज्यांमध्ये विधानसभा निवडणुकीनंतर नवी सरकारं स्थापन झाली. या राज्यांमध्ये हिंदुत्व किंवा अल्पसंख्याक समाजाशी निगडित प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष वाद निर्माण झाले. आासाममध्ये तर भाजपचं आक्रमक हिंदुत्ववादी सरकार होतंच. मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा-शर्मा यांनी योगी आदित्यनाथ यांच्यापेक्षाही जहाल हिंदुत्ववादी असल्याचं दाखवत लगेचच समान नागरी कायदा संमत करून घेतला. हिमंतांना आासाममध्ये द्विविवाह, बहुविवाहावर बंदी घालायची होती, त्यांचं एक स्वप्न पूर्ण झालेलं आहे. नव्या कायद्यामुळं मुस्लीम विवाह-घटस्फोट कायद्याची गरज उरलेली नाही. पश्चिम बंगालमध्ये तर हिंदुत्ववादी निर्णयच घेतले गेले आहेत असं वाटतंय. 'वंदे मातरम' अनिवार्य केलेलं आहे. 'एसआयआर'मध्ये नाव नसलेल्यांसाठी सरकारी योजना बंद झाल्या आहेत. त्याचा फटका मुस्लिमांना बसल्याचं सांगितलं जातं. सीमा कुंपण प्रकल्पासाठी 'बीएसएफ'ला तातडीने जमीन हस्तांतरित केली गेली आहे. जनावरांची तस्करी वगैरे विरोधात पोलिसी कारवाई सुरू झालेली आहे. मुस्लीम स्थलांतरित होऊ लागले आहेत. तमिळनाडूमध्ये 'टीव्हीके'-काँग्रेसचं सरकार असल्यामुळं धर्माच्या नावाने वाद निर्माण झालेला नाही. पण, 'वंदे मातरम'ची सर्व कडवी गायली गेल्यामुळं भुवया उंचावल्या गेल्या होत्या. विजय यांच्या ज्योतिष्याची चर्चा अधिक झाली. केरळमध्ये काँग्रेस आघाडी सरकारला मुस्लीम लीगचा भक्कम पाठिंबा आहे, हाच भाजपसाठी आक्षेपाचा मुद्दा असू शकतो. इथंही 'वंदे मातरम'ची सहा कडवी वाजवली गेल्यामुळं वाद निर्माण झाला. केरळमध्ये मुस्लीम आणि ख्रिश्चन यांच्यातील वाद तीव्र झाला आहे. मत्स्य व्यवसाय आणि उच्च शिक्षण खात्याच्या वाटपावरून मुस्लीम लीग आणि कॅथॉलिक ख्रिश्चन समाजामध्ये मतभेद वाढले आहेत. शिवाय, 'मुनंबम वक्फ'चा वाद पुन्हा उफाळून आला आहे. कुठल्याही राज्यात निवडणूक झाली आणि कोणत्याही पक्षाचं सरकार आलं तरी वेगवेगळ्या समाजांशी निगडित वाद होतातच असं दिसतंय.

शिंदेंना दिल्ली आणखी दुरावली?

ताज्या दिल्लीवारीमध्ये मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस यांनी दोन्ही उपमुख्यमंत्र्यांवर राजकीय मात केली हे नक्की. याच स्तंभामध्ये गेल्या वेळी शिंदेंना दिल्ली दूर झाली असल्याचं म्हटलं होतं. ही वस्तुस्थिती, गुप्तता राखून दिल्ली दौरा केला म्हणून बदलली असं नव्हे. तसा प्रयत्न जरूर असू शकतो पण, राजकीय वास्तवामध्ये बदल झाला नाही हे स्पष्ट झालं. मुख्यमंत्री आणि दोन उपमुख्यमंत्री यांनी दिल्ली दौरा करण्याचं कारण विधान परिषदेच्या जागावाटपाचा वाद. तिघांनी दिल्लीत यायचं, भाजपचे सर्वेसर्वा अमित शहांना भेटायचं आणि मुंबईला परत जायचं. या सगळ्यासाठी खरं तर दोन दिवस दिल्लीत काढण्याचं कारण नव्हतं. तरीही तिघांनी दिल्लीत मुक्काम ठोकला, हेही समजण्याजोगं आहे. पण, मुंबईहून येताना मुख्यमंत्री फडणवीस यांनी भलंमोठं शिष्टमंडळ आणलं होतं. वेगवेगळ्या विकासकामांचा आढावा, ऊस-कांदा वगैरे प्रश्नांसाठी मंत्र्यांच्या गाठीभेटी. खरं तर ही कामं मंत्र्यांचं शिष्टमंडळ न आणताही झाली असती. मुख्यमंत्र्यांनी त्या-त्या केंद्रीय मंत्र्यांची भेट घेतली असती तरी चाललं असतं. यापूर्वी फक्त फडणवीस आले होते, त्यांनी मंत्रालयांना भेटी दिल्या होत्या. यावेळी शिष्टमंडळ आलं, त्यामध्ये दोन उपमुख्यमंत्रीही होते. या शिष्टमंडळ वगैरे प्रकारामुळं उपमुख्यमंत्र्यांची फरफट झाली की काय असं वाटून गेलं. गाठीभेटी घ्यायच्या आणि फडणवीसांनी कामांची माहिती द्यायची, असं सगळं चित्रं निर्माण झालेलं होतं... या दौऱ्यामध्ये उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे आणि सुनेत्रा पवार यांना अपेक्षित राजकीय कामं झाली असती तर त्यांनी उघडपणे सांगितली असती. तसं झालं नाही म्हणजे महायुतीच्या दिल्लीतील 'सूत्रधारा'ने त्यांची बोळवण केली असं म्हणता येऊ शकतं. विधान परिषदेच्या जागावाटपाचा प्रश्न दिल्लीत सुटला नाही. सुनेत्रा पवारांना अर्थखातं मिळालं नाही. राष्ट्रवादी काँग्रेसच्या (अजित पवार गट) राज्यसभेच्या जागेसाठी उमेदवार निश्चिती झाली असू शकते. एका जागेसाठी अनेकांचा विचार होत आहे, त्यातील छगन भुजबळही दिल्लीत होते. शहांनी भुजबळांच्या नावाला हिरवा कंदील दिला की, अन्य कोणाला हे समजलेलं नाही. शिवसेना शिंदे गटाच्या हाती काही लागलं नाही असं दिसतंय. त्यामुळं एकनाथ शिंदे यांच्यासाठी यावेळी दिल्ली आणखी दूर झाली का, असा मुद्दा उपस्थित झाला आहे. दिल्लीत येणार असाल तर या, जमलं तर भेटही देऊ. पण, तुम्हाला ऐकावं लागेल मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस यांचंच, असा संदेश देण्यात आला असावा. शिंदेंचं दिल्लीतील महत्त्व कमी होऊ लागलेलं आहे. तरीही त्याबाबत चाचणी घ्यायची असेल तर किती लवकर 'ऑपरेशन टायगर' पार पडतंय हे बघायचं. हे कथित 'ऑपरेशन' झालं तर शिंदेंचं महत्त्व टिकलं असं म्हणता येईल. पण, तसं झालं नाही तर मात्र स्वबळाची जोरदार तयारी करावी लागेल असं म्हणता येईल. शिंदेंची पुढची नवी दिल्लीवारी कधी होते याची उत्सुकता सगळ्यांना असेल.

आठवडाभरात घडलेल्या काही गोष्टी हसू येऊ शकतं अशा होत्या. दिल्ली भाजपचे अध्यक्ष बदलले. केंद्रीय राज्यमंत्री हर्ष मल्होत्रा प्रदेशाध्यक्ष झाले, त्यामुळं वीरेंद्र सचदेवा पायउतार झाले. त्यांना बहुधा भाजपच्या राष्ट्रीय कार्यकारिणी समितीमध्ये स्थान मिळण्याची शक्यता आहे. सचदेवा आगामी पंजाब निवडणुकीत महत्त्वाची भूमिका बजावू शकतात असं पक्षाला वाटतं. प्रदेश कार्यालयात त्यांनी मल्होत्रांकडे पदभार सोपवला. मग, सचदेवांनी मेलोडी चॉकलेटं वाटली. त्यांना जिलेबी वगैरे गोड पदार्थांचा विसर पडला असावा. इटलीत जाऊन मोदींनी तेथील पंतप्रधान जॉर्जिया मेलोनी यांना मेलोडी चॉकलेट दिलं. आता भाजपच्या नेत्यांनाही मेलोडीची आठवण झाली आहे. त्यांनीही ही चॉकलेटं वाटायला सुरुवात केली आहे. मेलोडीमुळं अनुकरण करायचं तर कशाचं, हा प्रश्न कोणाला पडू शकतो... दुसरी घटना- पंतप्रधान नरेंद्र मोदींनी केंद्रीय मंत्रिमंडळाच्या बैठकीमध्ये मंत्र्यांना पाणी पिण्याचा सल्ला दिला. उन्हाळा आहे, पुरेसं पाणी प्या बरं का, असं त्यांनी सांगितलं. देशात वेगवेगळ्या ठिकाणी पेट्रोल-डिझेलसाठी कडक उन्हात लोकांनी रांगा लावल्याच्या बातमी येत आहेत. असो. मंत्र्यांनी पाणी पिण्याचा सल्ला योग्य म्हणता येईल. काटकसरीचा सल्ला या आठवड्यामध्ये किती मंत्र्यांनी अमलात आणला हे माहीत नाही. पण, छायाचित्रं आली नाहीत म्हणजे तसं काही झालेलं नसावं. बुलेट घेऊन मंत्रालयात जाणारे देवेंद्र फडणवीस तर दिल्लीतच होते. भाजपचे राष्ट्रीय अध्यक्ष नितीन नवीन यांच्या दौऱ्यात कारचा ताफा असल्याचे व्हिडीओ समाजमाध्यमांवर व्हायरल झाले होते. कसंही असलं तरी मंत्र्यांनी तब्येत सांभाळली पाहिजे, त्यांनी पाणी प्यायलं पाहिजे हे खरंच... तिसरी गोष्ट. ऊर्जा वाचवली पाहिजे, हा विचार चांगलाच. पण, त्याची अधूनमधूनच आठवण का येते हे कळत नाही. कृषिभवनामध्ये कृषी मंत्रालयाशी निगडित विविध विभाग-कार्यालयं आहेत. केंद्रीय कृषिमंत्री शिवराजसिंह चौहान यांनी आदेश दिला आहे की, गरज नसेल तर कार्यालयातील दिवे बंद करा, अनावश्यक 'एसी'चा वापर टाळा. शक्य तितकी काटकसर करा. हे कसं शक्य आहे हे माहीत नाही. कार्यालयात कोणी नसेल तर दिवे बंद करता येतील. दिल्लीतील कडक उन्हाळ्यात कार्यालयातील 'एसी' कसे बंद ठेवणार हा प्रश्नच आहे. कार्यालयातून बाहेर पडताना दिवे-एसी बंद आहे की नाही याची खात्री करून घ्या असं मंत्रीमहोदयांचं सांगणं असेल तर ते योग्य म्हणावं लागेल. तरीही असं सांगावं का लागतं? हे जरा जास्तच होतंय का?

गमती जमती

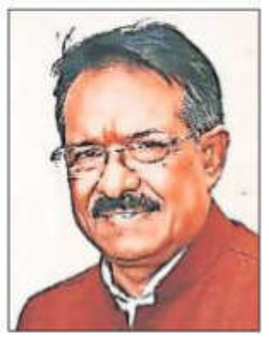

क्वचित कौतुक

दिल्लीतील नवीन महाराष्ट्र सदनामध्ये क्वचितप्रसंगी कौतुक करावं असे कार्यक्रम होतात. गेल्या आठवड्यामध्ये तसा झाला. या आयोजकांना कोणतीही राजकीय वा सामाजिक अभिलाषा नव्हती हे कौतुकाचं खरं कारण. त्यांचा उद्देश निखळ होता. त्यामुळं त्यांचं आयोजनही भावलं, कार्यक्रमही रंगला. तमाशा कलावंत रघुवीर खेडकर यांना पद्मश्री देऊन सन्मानित करण्यात आलं. तमाशा कलावंताला पद्म पुरस्कार पहिल्यांदाच मिळाला हाही मुद्दा होताच. पद्म पुरस्कारांच्या वितरणाच्या आदल्या दिवशी रघुवीर खेडकर यांचा सत्कार आणि मुलाखतीचा कार्यक्रम नवीन महाराष्ट्र सदनामध्ये झाला. तमाशाच्या प्रवासापासून लोककलेसमोरील आव्हानांपर्यंत खेडकर भरभरून बोलले. या कार्यक्रमाच्या आयोजनामध्ये दिल्लीतील काही संवेदनशील तरुण-तरुणींचा सहभाग होता. महाराष्ट्र सदनामध्ये सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम होतात. त्यातील काहींच्या आयोजनातून कोणाला राजकीय महत्त्वाकांक्षा तर पूर्ण करायच्या नाहीत ना, असा प्रश्न कधी कधी मनात डोकावू शकतो. पण, हा कार्यक्रम तसा नव्हता हे महत्त्वाचं.

डॉ. संतोष खेडलेकर यांनी रघुवीर खेडकर यांची मुलाखत घेतली.

‘अच्छे दिन’ खरंच आलेत?

आकाश सावरकर, नीरज हातेकर

पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी पंतप्रधानपदाची शपथ घेतल्याच्या घटनेला नुकतीच १२ वर्षे पूर्ण झाली. १२ वर्ष हा मोठा कालखंड. गेल्या १२ वर्षात या सरकारची जवळ जवळ सगळीच उद्दिष्टे गाठली गेली. राम मंदिर झाले, ३७० कलम हटवले, समान नागरी कायद्याच्या दिशेने प्रयत्न सुरू आहेत. मुस्लीम -ख्रिश्चन समूहांना कायद्याने नाही तरी वास्तविक जीवनात दुय्यम नागरिक म्हणून जगायला भाग पाडण्याचे उद्दिष्टसुद्धा बऱ्यापैकी साधले जाते आहे. पण या काळात सर्वसामान्य लोकांच्या जगण्याच्या स्तरात काय फरक पडला हे तपासून पाहणे महत्त्वाचे. मोदी सरकार ‘अच्छे दिन आनेवाले है’ असे सांगून सत्तेवर आले आहे. ते खरेच आलेत का हे पाहणे आवश्यक आहे. आपली अर्थव्यवस्था जगात इतकी वगैरे बऱ्यापैकी फसवे असते. अर्थव्यवस्थेच्या आकारापेक्षा दरडोई उत्पन्न महत्त्वाचे. पण दरडोई उत्पन्न ही सरासरी संकल्पना आहे. मुंबईत पेडर रोडवर राहणाऱ्या व्यक्तीचे मासिक दरडोई उत्पन्न कित्येक कोटी असेल. पण याचा अर्थ पेडर रोडवर नारळ पाणी विकणारे, फुले विकणारे, लहान किरणा माल दुकानदार, दूध विक्रेते, हे करोडपती आहेत असे नव्हे. आपल्याला सर्वसामान्य लोकांचे काय झाले हे पाहायचे आहे.

भारत सरकार दर वर्षी नियतकालिक कामगार शक्ती सर्वेक्षण (periodic labour force survey - PLFS) द्वारे रोजगार, उत्पन्न, पगार यांची आकडेवारी प्रसिद्ध करते. २०१७-१८ पासूनची आकडेवारी उपलब्ध आहे. म्हणजे गेल्या १२ वर्षांपैकी नऊ वर्षांची ही आकडेवारी उपलब्ध आहे. मोदी काळात सामान्य लोकांच्या उत्पन्नात काय फरक पडला हे पाहण्यासाठी इतके पुरेसे आहे. लोकांच्या उत्पन्नाचा विचार करताना त्यांच्या वास्तविक क्रयशक्तीचा विचार करायला हवा. म्हणजे उत्पन्न महागाईच्या तुलनेत किती वाढले हे पाहणे गरजेचे आहे. म्हणजे निव्वळ पगार दीडपटीने वाढला असेल आणि महागाई तिपटीने वाढली असेल तर वास्तविक पगार निम्मा झाला असे म्हणावे लागेल. लेखाच्या पुढच्या भागात वास्तविक उत्पन्नाची २०१७-१८ आणि २०२४-२५ शी तुलना केलेली आहे. कामगारांचे तीन वर्ग पाडले आहेत. पहिला नियमित पगारदार लोकांचा वर्ग, दुसरा स्वयं रोजगार करणाऱ्यांचा आणि तिसरा रोजंदारीवर काम करणाऱ्यांचा .पहिल्यांदा आपण पगारदार व्यक्तींच्या उत्पनाकडे वळू. तक्ता १ मध्ये २०१७-१८ ते २०२४-२५ या काळात पगारदार व्यक्तींच्या सरासरी वास्तविक उत्पन्नाची आकडेवारी दाखवली आहे.

पगारदार व्यक्तींच्या सरासरी वास्तविक मासिक उत्पन्नात २०२४-२५ मध्ये २०१७-१८ च्या तुलनेत गेल्या आठ वर्षात एकूण फक्त २.३ टक्के इतकीच वाढ झाली आहे. म्हणजे त्यांचे वास्तविक उत्पन्न जवळ जवळ स्थिर आहे. महागाईची आकडेवारी शासकीय ग्राहक किंमत निर्देशांकावरून (कन्झ्युमर प्राइस इंडेक्स)वरून घेतली आहे. यात साधारण मध्यमवर्गीय लोकांना जे खर्च महत्त्वाचे असतात, उदा शाळेचा खर्च, घरभाडे, खासगी आरोग्य सेवा इत्यादी पुरेशा प्रमाणात आलेले नसतात. सरकारी ग्राहक किंमत निर्देशांकामध्ये अन्नावरील खर्चाला जवळजवळ ५० टक्के वजन आहे. पण अन्नधान्याचे भाव शाळा, हॉस्पिटल, घरभाडी वाढतात तितके वाढत नाहीत. त्यामुळे ग्राहक किंमत निर्देशांकावरून काढलेली महागाई ही सामान्य लोकांना भेडसावणाऱ्या महागाईपेक्षा कमी असते. खरी महागाई लक्षात घेतली तर पगारदार व्यक्तींचे वास्तविक मासिक उत्पन्न स्थिर असण्यापेक्षा कमी झालेले असण्याची शक्यता अधिक आहे.

तक्ता क्रमांक २ मध्ये स्वयं रोजगार

‘अच्छे दिन’चे स्वप्न दाखवून मोदी सरकार सत्तेवर आल्याला नुकतीच १२ वर्षे पूर्ण झाली आहेत . या काळात आपल्या अर्थव्यवस्थेचे काय झाले आहे? भारत सरकार दरवर्षी जाहीर करते, त्या आकडेवारीच्याच आधारे घेतलेला शोध…

स्वयं रोजगार करणाऱ्या व्यक्तींच्या वास्तविक उत्पन्नात २०१७-१८ च्या तुलनेत २०२४-२५ मध्ये ४.७ टक्के इतकी वाढ झाली आहे. ही आठ वर्षातील एकूण वाढ आहे. यांच्यासाठी अच्छे दिन फारच आस्ते कदम येत आहेत. इथेसुद्धा कहरी महागाई लक्षात घेतली तर उत्पन्न घटले असण्याची शक्यता जास्त आहे.

तक्ता क्रमांक ३ मध्ये रोजंदारीवर काम करणाऱ्या व्यक्तीचे रोजचे सरासरी निव्वळ आणि वास्तविक उत्पन्न दाखविले आहे.

रोजंदारीवर काम करणाऱ्या व्यक्तींच्या सरासरी उत्पन्नात मात्र २३ टक्के वाढ झालेली दिसते. पण ती देशात सगळीकडे नाही, तर प्रामुख्याने दक्षिण भारतात, जिथे मोदींचे सरकार नाही, अशा राज्यातून दिसून येते. तसेच जम्मू - काश्मीर, दिल्लीच्या शेजारचा भाग येथे ही वाढ दिसून येते. या उलट गुजरातचा पूर्वीकडील भाग, मध्य प्रदेशचा मोठा टप्पा, महाराष्ट्रातील पश्चिम आणि दक्षिण भाग सोडून सगळा महाराष्ट्र, छत्तीसगढ, झारखंडचा मोठा भाग, ओरिसा आणि बंगालचा पश्चिम भाग या मोठ्या सलग पट्ट्यात रोजंदारीचा दर कमी आहे.

म्हणजे खास करून पगारदार वर्ग आणि स्वयं रोजगार करणारे, यांचे वास्तविक उत्पन्न फार वाढले नाही. रोजंदारीचा दरही काही भागातच वाढला आहे. वास्तविक उत्पन्न घटले असण्याची दाट शक्यता आहे.

भारत हा जगात सर्वात वेगाने वाढणारी अर्थव्यवस्था म्हणून आपण पाठ थोपटून घेतो. मग या आर्थिक वाढीचा फायदा नक्की कोणाला होतो आहे? तर काही मोजक्यांनाच. आर्थिक वाढ आणि सामान्य लोकांची क्रयशक्ती यातील सांधा निखळला आहे. २०२०-२१ ते २०२४-२५ या आर्थिक वर्षात निफ्टी ५० ची वाढ ३०.८ टक्के होती. नोंदणीकृत कंपन्यांचा निव्वळ नफा दर वर्षी १९.४ टक्के टक्क्याने वाढतो आहे. नियतकालिक कामगार शक्ती सर्वेक्षणाच्या आकडेवारीनुसार सगळ्यात जास्त उत्पन्न वाढ व्यवस्थापक श्रेणीत मोडणाऱ्या व्यक्तींची होत आहे. या श्रेणीतील व्यक्तींचे २०२४-२५ चे वास्तविक उत्पन्न २०१७-१८ च्या तुलनेत १२ टक्क्यांनी वाढले. या उलट शेतकऱ्यांचे वास्तविक उत्पन्न याच काळात ११ टक्क्यांनी घटले! तंत्रज्ञांचे सरासरी मासिक वास्तव उत्पन्न याच काळात १८ टक्क्यांनी घटले. कारकुनी स्वरूपाचे काम करणाऱ्या लोकांचे उत्पन्न आठ टक्क्यांनी घसरले.

थोडक्यात. ‘अच्छे दिन’ सगळ्यांसाठी नाही, तर कॉर्पोरेट्ससाठी आले आहेत. व्यवस्थापक वगैरे लोकांसाठीही थोड्या प्रमाणात आलेत. सुटबूटवाल्यांचा फायदा झाला आहे. देशातील काही भागात रोजंदारीवर काम करणाऱ्यासाठी सुद्धा आले. पण पगारदार व्यक्ती, स्वयं रोजगार करणाऱ्या व्यक्ती, एका मोठ्या पट्ट्यात काम करणाऱ्या रोजंदार यांच्यासाठी अच्छे दिन बिरबलाची खिचडी ठरले आहेत. शेतकरी, तंत्रज्ञ, कारकून वगैरे लोकांसाठी बुरे दिन येताहेत. जीडीपी वाढीचा बहुतेक फायदा मोठे कॉर्पोरेट्स, व्यवस्थापक वगैरे मंडळींना होतो आहे. केंद्र सरकारच्या एकूण कर संकलनातसुद्धा कॉर्पोरेट करांचा वाटा २५.३ टक्के आहे तर व्यक्तिगत आयकराचा ३३.३ टक्के. म्हणजे इथेसुद्धा व्यक्ती जास्त कर भरत आहेत. शिवाय गरीबसुद्धा जीएसटी भरतातच. या वर्षी खनिज तेलांच्या किमती वाढल्यात. म्हणजे दूध, भाजी, बस, सगळेच महागणार. खते महागलीत. शेतकऱ्याचा खर्च वाढला. उत्पन्न वाढणार नाही. अच्छे दिन दूर गेलेत.

इतके सगळे असताना पंतप्रधानांची वैयक्तिक लोकप्रियता टिकून आहे. भाजपने निवडणुका जिंकायचा सपाटा लावला आहे. खरे तर हे एक कोडेच असायला हवे. का मते देतात लोक या सरकारला? ‘हिंदुराष्ट्र’ हेच एकमेव उद्दिष्ट असलेल्या मतदारांना आपण सोडून देऊ. ईव्हीएम, एसआयआर, निवडणूक आयोग यांची चर्चासुद्धा नको करूया. निव्वळ आर्थिक घटक तपासूया. २०१४ नंतर भाजप सरकारने थेट लाभांच्या अनेक कल्याणकारी योजना राबविल्या आणि त्या थेट पंतप्रधानाच्या चेहऱ्याशी जोडल्या. ‘मोदी आहेत म्हणून आपल्याला या योजना मिळतात’ ही भावना सामान्य मतदाराच्या मनात दृढ झाली आहे. ‘जे काय चांगले घडते ते मोदीमुळे आणि जी काही संकटे येतात ती अस्मानी’ असे कथ्य (नरेटिव) रुजविण्यात भाजपची प्रचार यंत्रणा बऱ्यापैकी यशस्वी झाली आहे. शिवाय आहे ती परिस्थिती बिकट असली तरी यातून आपल्याला बाहेर काढू शकेल असा खात्रीलायक पर्याय उभा करण्यात विरोधी पक्ष अजून यशस्वी झाले नाहीत. त्यांच्याकडे तसा कार्यक्रमसुद्धा नसावा. किमान तो लोकांपुढे ठामपणे ते आणू शकले नाहीत. ते तसा कार्यक्रम आणत नाहीत तोपर्यंत अच्छे दिन आले की नाही हा प्रश्न २०२९ च्या सत्ता बदलाच्या दृष्टीने अर्थहीन आहे.

लेखकद्वय अनुक्रमे जवाहरलाल नेहरू विद्यापीठ, नवी दिल्ली येथे संशोधक; तसेच अर्थशास्त्राचे अभ्यासक
neeraj.hatekar@gmail.com
asawarakar1213@gmail.com

तक्ता क्रमांक १

वर्ष	पगारदार वर्गाचा सरासरी मासिक निव्वळ पगार (दर महा रुपये)	पगारदार वर्गाचा सरासरी मासिक वास्तविक पगार (दर महा रुपये (२०१७-१८ च्या किमतीत)
२०१७-१८	१५५३०	१५५३०
२०१८-१९	१६१७३	१५७०२
२०१९-२०	१६९४९	१५५७७
२०२०-२१	१७६११	१५२८०
२०२१-२२	१८९५१	१५५२२
२०२२-२३	१९७५३	१५२६५
२०२३-२४	२१०६७	१५४४३
२०२४-२५	२२१७०	१५८९९

तक्ता क्रमांक २

वर्ष	स्वयं-रोजगार करणाऱ्या वर्गाचे सरासरी मासिक निव्वळ उत्पन्न (दर महा रुपये)	स्वयं-रोजगार करणाऱ्या वर्गाचे सरासरी मासिक वास्तविक उत्पन्न (दर महा रुपये (२०१७-१८ च्या किमतीत)
२०१७-१८	९९३८	९९३८
२०१८-१९	१०७२९	१०४१६
२०१९-२०	१०५७९	९७२३
२०२०-२१	१०६५४	९२४४
२०२१-२२	११९२३	९७६६
२०२२-२३	१३२५६	१०२४४
२०२३-२४	१३३६६	९७९८
२०२४-२५	१४८६४	१०४०६

तक्ता क्रमांक ३

वर्ष	रोजंदारी करणाऱ्या वर्गाचे सरासरी निव्वळ उत्पन्न (दर दिवशी रुपये)	रोजंदारी करणाऱ्या वर्गाचे सरासरी वास्तविक उत्पन्न (दर दिवशी रुपये (२०१७-१८ च्या किमतीत)
२०१७-१८	२५२	२५२
२०१८-१९	२८०	२७२
२०१९-२०	२९१.३	२६८
२०२०-२१	३१९.१	२७७
२०२१-२२	३७०.२	३०३
२०२२-२३	३९६.६	३०६
२०२३-२४	४०९.७	३००
२०२४-२५	४४३.४	३१०

शुद्ध हवेच्या शत्रूंसंगे...

अतुल देऊळगावकर

हवेतील अतीव प्रदूषणामुळे मृत्युमुखी पडलेली जगातील पहिली व्यक्ती म्हणजे लंडनमधली अवघ्या नऊ वर्षांची एला . पुढच्या काळात प्रदूषणामुळे अशा पद्धतीने कुणीही दगावू नये, यासाठी तिची आई रोझामंड १४ वर्षांहून अधिक काळ लढत होती . वैयक्तिक दु:खाला व्यवस्थात्मक उत्तर शोधणाऱ्या या संघर्षाविषयी येत्या पर्यावरण दिनानिमित्त (५ जून) विशेष लेख .

दक्षिण लंडनच्या लुईशॅम भागातील ‘माउंट्सफिल्ड उद्यान’ हे तिथल्या सुमारे चार हजार सार्वजनिक उद्यानांपैकी एक. या ३० एकर उद्यानाच्या मध्यभागी एका छोट्या मुलीचा ब्राँझचा पुतळा आहे. त्याखाली लिहिलं आहे, ‘एला रॉबर्टा एड्रू किस्सी डेब्रा. मृत्यू- वयाच्या नवव्या वर्षी. हवेतील अतीव प्रदूषणामुळे मृत्युमुखी पडलेली जगातील पहिली नोंद. शिल्पकार- हॅना स्ट्यूअर्ट.’

या पुतळ्यासमोरच्या बाकावर बसलेल्या एलाच्या आई - रोझामंड, प्रस्तुत लेखकाला सांगतात, ‘एलाचा जन्म २००४ चा. ती जन्मतः गुटगुटीत आणि निरोगी होती. उत्साही आणि आनंदी एला या अनेक खेळांत रमून जाई. वाचन, वाद्य वाजवणे, गाण्यांना चाल लावणे, गाणे यामुळे नाटक आणि नृत्य नाटकांत अनेकदा मुख्य भूमिका साकारायची. दुसरीत असताना, एलाला अचानकच जोरदार खोकला सुरू झाला. तो कोणत्याही औषधांना जुमानत नव्हता. काही दिवसांनी ती खोकून खोकून बेशुद्ध पडली. जवळच्या शासकीय रुग्णालयात दाखल करून दुसऱ्या दिवशी तिला घरी सोडण्यात आलं. एका आठवड्यानंतर पुन्हा एकदा ती खोकून बेशुद्ध पडली आणि तीन दिवसांनी शुद्धीवर आली. त्यानंतरची दोन वर्षं अपस्मार (एपिलेप्सी) पासून ते सिस्टिक फायब्रॉसिसपर्यंत अनेक तपासण्या झाल्या. त्यातून तिला तीव्र ॲलर्जी आहे, असं निदान करण्यात आलं. तिला दोन वर्षांच्या काळात ३० वेळा आपत्कालीन रुग्णालयात दाखल व्हावं लागलं. तिच्या नवव्या वाढदिवसानंतर काही दिवसांत, १५ फेब्रुवारी २०१३ रोजी दम्याच्या प्राणघातक झटक्यामुळे एला गेली. त्या प्रमाणपत्रात ‘तीव्र श्वसन अपयशामुळे मृत्यू’ अशी नोंद केली होती.

ब्रिटनच्या कायद्यानुसार आकस्मिक मृत्यूची कारणं स्पष्ट होत नसतील किंवा तो मृत्यू सार्वजनिक आरोग्याशी संबंधित असेल, तर मृत्यू चौकशी अधिकारी त्याची सखोल चौकशी करू शकतो. त्यानुसार एलाच्या मृत्यूची पहिली चौकशी २०१४ मध्ये झाली. त्यात डॉक्टरांनी मुख्यतः जीर्ण आणि अतीव दम्यामुळे श्वसनक्रिया ठप्प पडून मृत्यू झाल्याचं सांगितलं.

रोझामंड बाईंनी स्थानिक वर्तमानपत्रात एलाचं आजारपण आणि मृत्यूवर लेख लिहिला. तो वाचून एका रहिवाशाने त्यांना सुचवलं, ‘एला मरण पावली, त्या रात्रीच्या वायू प्रदूषणाची पातळी तपासा.’ तोपर्यंत वायू प्रदूषण हे दम्याचं कारण असू शकेल, अशी शक्यता कोणत्याही वैद्यकीय तज्ज्ञांनी व्यक्त केली नव्हती.

लंडनमधील हवेच्या गुणवत्तेचा निर्देशांक हा नेहमी ६० पर्यंत असतो. ही हवा आरोग्यदायी मानली जाते. दक्षिण लंडनच्या लुईशॅममध्ये प्रामुख्याने गरीब आणि कष्टकरी वर्ग राहतो. रोझामंड यांच्या घरापासून केवळ २५ मीटर अंतरावरून वर्तुळाकार रस्ता जातो. त्यामुळे तिथे २४ तास वाहनांची गर्दी असते. रोझामंड यांनी हवेच्या गुणवत्तेचा तपास सुरू केला. जागतिक आरोग्य संघटनेने जाहीर केलेल्या २००५ च्या मानकानुसार एका घनमीटर हवेमध्ये नायट्रोजन-डाय-ऑक्साइडची कमाल मर्यादा ४० मायक्रोग्रॅम एवढी होती. ल्यूईशॅम भागात हे प्रमाण खूपच जास्त होतं.

त्या वेळी साउथॅम्प्टन विद्यापीठातील वैद्यकीय संशोधक प्रो. डॉ. स्टीफन होलगेट हे ‘वायू प्रदूषणाचे आरोग्यावरील परिणाम’ यावर संशोधन करत होते. डिझेल धूर, सूक्ष्म घन कण (पी. एम.२.५ मायक्रोग्रॅम) आणि नायट्रोजन-डाय- ऑक्साइड यांच्यामुळे होणाऱ्या श्वसनरोगांकडे ते विशेष लक्ष देत होते. रोझामंड यांचा लेख वाचून होलगेट यांनी त्यांच्याशी संपर्क साधला. त्यांच्या मते, त्या परिसरातील वायू प्रदूषणामुळे एलाचा भयानक दमा बळावत गेला आणि ती मरण पावली. हे ऐकून, एलाची आजारपणं, तिला रुग्णालयात दाखल केलेल्या तारखांना वायू प्रदूषणाच्या पातळीची सखोल माहिती रोझामंड घेऊ लागल्या. तसंच एलाच्या मृत्यूची नव्याने चौकशी व्हावी, यासाठी कायदेशीर सल्ला घेण्यासाठी झटू लागल्या. यातूनच त्यांच्या साथीला ब्रिटनमधील प्रसिद्ध मानवाधिकार व पर्यावरणविषयक कायदेतज्ज्ञ बॅ. जॉसलिन कॉकर्न आल्या. एलाची कहाणी ऐकून रोझामंड यांच्याकडे, अनेक तज्ज्ञ, संशोधक, अभ्यासक आणि संस्था यांचा ओघ सुरू झाला.

प्रो. होलगेट यांच्या नेतृत्वाखालील चमूने २०१६ मध्ये ‘रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियन्स’साठी ‘आपला प्रत्येक श्वास आणि वायू प्रदूषणाचे आजन्म परिणाम’ हा महत्त्वपूर्ण अहवाल तयार केला. या अहवालातून ‘इंग्लंडमध्ये वायू प्रदूषणामुळे दरवर्षी सुमारे ४० हजार मृत्यू होतात.’ हे स्पष्ट झालं. असे भक्कम वैज्ञानिक पुरावे जमा झाल्यानंतर रोझामंड यांनी दुसरी चौकशी मंजूर करण्यासाठी अर्ज केला.

नऊ दिवस चाललेल्या चौकशीच्या अखेरीस १६ डिसेंबर २०२० रोजी मृत्यू चौकशी अधिकारी फिलीप बार्लो ऐतिहासिक निकाल देताना म्हणाले, ‘एला ही २०१० ते २०१३ या काळात नायट्रोजन- डाय-ऑक्साइड आणि सूक्ष्म कणांच्या जास्त पातळीच्या सान्निध्यात होती. या प्रदूषणाचा मुख्य स्रोत त्या भागातील वाहतूक हाच होता. अत्याधिक वायू प्रदूषणामुळे एलाला दमा झाला, तो वाढत गेला आणि तिचा मृत्यू झाला.’ या अहवालात बार्लो यांनी स्पष्ट सूचना केल्या. ‘राष्ट्रीय स्तरावर सूक्ष्म कणांसाठी ठरवलेल्या मर्यादा जागतिक आरोग्य संघटनेच्या मानकांपेक्षा खूप जास्त आहेत. लोकांमध्ये वायू प्रदूषणाबद्दलची जागरूकता कमी आहे. हवेच्या गुणवत्तेचं मापन वाढवून राष्ट्रीय आणि स्थानिक स्तरावर ती माहिती उपलब्ध करून देणं आवश्यक आहे. वैद्यकीय आणि शुश्रूषा शिक्षणात वायू प्रदूषण आणि आजार यांचा समावेश केला पाहिजे.’ हा अहवाल इंग्लंडच्या पर्यावरण, वाहतूक, आरोग्य आणि सामाजिक सुरक्षा या विभागांना पाठवण्यात आला.

दरम्यान, प्रो. होलगेट यांच्या संशोधनामुळे जगाच्या विचारांची दिशा बदलून गेली. ते इंग्लंड सरकारचे ‘स्वच्छ हवा मोहिमे’चे प्रमुख सल्लागार झाले. इंग्लंडने नाईटहूड हा सर्वोच्च सन्मान (सर हा किताब) देऊन गौरव केला. जागतिक आरोग्य संघटनेने त्यांची सल्लागारपदी नेमणूक केली. इतकेच नाही तर २००५ साली केलेल्या वायू प्रदूषण मानकांमध्ये लक्षणीय बदल केला. जागतिक आरोग्य संघटनेने जाहीर केलेल्या २००५ च्या मानकानुसार, फुप्फुसांमधून थेट रक्तात प्रवेश करू शकणाऱ्या २.५ मायक्रोग्रॅमच्या अतिसूक्ष्म कणांची मर्यादा २४ तासांत एका घनमीटर हवेत २५ मायक्रोग्रॅम एवढी होती. ती २०२१ मध्ये १५ मायक्रोग्रॅम करण्यात आली. तर एका घनमीटर हवेमध्ये नायट्रोजन- डाय-ऑक्साइडची कमाल मर्यादा ४० मायक्रोग्रॅम एवढी होती. ती १० मायक्रोग्रॅम एवढी केली.

या निकालामुळे एलाच्या कुटुंबीयांनी उच्च न्यायालयामध्ये सरकारविरुद्ध नागरी दावा दाखल करून २ लाख ९३ हजार १५६ पौंडांची भरपाई मागितली. हा दावा पैशांसाठी नाही, तर सरकारला जबाबदार धरण्यासाठी होता. २०२४ च्या ऑक्टोबर महिन्यात, इंग्लंडच्या सरकारने समझोता करताना, रोझामंड यांना रक्कम जाहीर न करता नुकसानभरपाई दिली. (‘लोकरंग’, २२ डिसेंबर २०२४) एलाच्या स्मरणार्थ रोझामंड यांनी तिच्या दहाव्या वाढदिवशी ‘एला रॉबर्टा फॅमिली फाउंडेशन’स्थापन केली आहे. त्यातून त्या दक्षिण लंडनमधील दमाग्रस्त मुलांच्या जीवनात सुधारणा करण्यासाठी प्रयत्न करत आहेत. त्यांच्या आवाहनामुळे इंग्लंडमधील पालकांनी ‘भविष्यासाठी पालक’ (पेरेंट्स फॉर फ्युचर) ही संस्था स्थापली आहे. ती जागरूकता वाढवण्यासाठी शाळा-कॉलेजं-विद्यापीठं ते कलादालनांपर्यंत अनेक कल्पक उपक्रम हाती घेत आहे. ड्रायडन गुडविन यांचे संसदेसमोरील सेंट थॉमस हॉस्पिटलवर एलाचं २५ फुटांचं चित्र, लंडनमधील टेट मॉडर्न, नॅशनल आर्ट गॅलरी आदी कलादालनात एला आणि वायू प्रदूषणावरील अनेक चित्रकारांची चित्र प्रदर्शनं असे त्यांचे स्वरुप आहे. ‘फुप्फुसांसाठी माता!’ या मोहिमेत कित्येक माता पालक शाळांजवळील वाहन प्रदूषणामुळे मुलांच्या फुप्फुसांवर होणारे परिणाम समजावून सांगतात. शाळांजवळील रस्त्यांवरील वाहतूक कमी कशी करता येईल, याचे पर्याय सुचवतात. जनजागृती आणि धोरणात्मक दबाव निर्माण करण्यासाठी पुढे सरसावणाऱ्या माता वाढत आहेत.

ही सर्व मंडळी इंग्लंडमध्ये ‘एला कायदा’ मंजुरीसाठी पाठपुरावा करत आहेत. त्यातील तरतुदी ‘स्वच्छ हवा हा मूलभूत मानवी हक्क म्हणून मान्य करणं, जागतिक आरोग्य संघटनेच्या हवा गुणवत्तेच्या निकषांना कायदेशीर स्वरूप देणं. प्रदूषणासाठी सरकार आणि स्थानिक प्रशासनांना जबाबदार धरणं आणि प्रदूषणग्रस्त समुदायांचे संरक्षण करणं.’ अशा काळानुरूप आहेत.

एलाच्या कुटुंबाने दाखल केलेल्या दाव्यातील समझोत्याचा एक भाग म्हणून २०२४ च्या फेब्रुवारीमध्ये लंडनचे महापौर सादिक खान यांनी ‘मी, ग्रेटर लंडन ॲथॉरिटीच्या वतीने एलाची आई रोझामंड यांची आणि कुटुंबीयांची माफी मागतो. यापुढे कोणत्याही मुलाला एलाप्रमाणे त्रास सहन करावा लागू नये यासाठी, मी लंडनची हवा स्वच्छ करण्यासाठी सर्वतोपरी प्रयत्न करत राहीन. ‘एला कायदा’ मंजूर व्हावा यासाठी मी पराकाष्ठा करणार आहे.’ अशी जाहीर कबुली दिली.

जागतिक आरोग्य संघटनेने नुकत्याच प्रसिद्ध केलेल्या अहवालात म्हटलं आहे, ‘सध्या जगातील ९९ टक्के लोकसंख्या हवेच्या प्रदूषणाला सामोरी जात असून त्यामुळे दरवर्षी सुमारे ७० लाख अकाली मृत्यू होत आहेत. हा भविष्यातील संकटाचा प्रश्न नसून हा आजच्या काळातील प्रश्न आहे. प्रदूषित हवा आपलं हृदय, फुप्फुसं, मेंदू आणि रक्तवाहिन्यांवर करत असलेल्या गंभीर परिणामांविषयी आहे. याची जाणीव होऊन जगभरातील बालक आणि पालकांमध्ये वायुप्रदूषणाबाबत जागरूकता वाढत आहे. पोर्तुगाल, ब्राझील, अमेरिका, नेदरलँड्स, नॉर्वे, कोलंबिया आयर्लंड आणि कॅनडा आदी राष्ट्रांतील मुलांनी वायुप्रदूषणाच्या समस्येसाठी आपापल्या सरकारांवर खटले दाखल केले आहेत. याच काळात एकट्या रोझामंड यांच्या ‘शुद्ध हवेच्या शत्रूंसंगे...’या बहुआयामी अभियानाची दखल जागतिक पातळीवर घेतली गेली. जागतिक आरोग्य संघटनेने कोलंबियामध्ये २०२५ साली ‘वायुप्रदूषण आणि आरोग्य’ परिषद आयोजित केली होती. त्यात त्यांचा ‘स्वच्छ हवेचा दूत’ असा सन्मान केला गेला. त्यानंतर त्यांना ‘स्वच्छ हवे’साठी होणाऱ्या प्रत्येक आंतरराष्ट्रीय परिषदेचं कायमस्वरूपी निमंत्रण दिलं गेलं आहे. त्या देश-विदेशात जाऊन सांगत आहेत, ‘स्वच्छ हवेत श्वास हा प्रत्येक मुलाचा हक्क आहे. तो त्यांना मिळालाच पाहिजे. मुलाचा वर्ण, वंश, वर्ग व स्थळ या बाबींमुळे त्यात यत्किंचितही फरक पडता कामा नये.’

प्रस्तुत लेखकाबरोबरची ही बातचीत उरकून रोझामंड या माता पालकांच्या सभेला गेल्या. जाताजाता त्यांनी दिल्लीतील श्वसनविकारतज्ज्ञ डॉ. अरविंदकुमार यांचं संशोधन आणि जनजागृतीचा उल्लेख केला. डॉ. अरविंदकुमार म्हणतात, ‘फुप्फुसात सूक्ष्मकण जमा झाल्यानंतर ते कधीही बाहेर काढता येत नाहीत. दूषित हवेमुळे दिल्लीकरांची फुप्फुसं अजिबात धूम्रपान न करता पूर्ण काळवंडत आहेत. दिल्ली ‘दम्याची राजधानी’ झाली आहे. वायुप्रदूषण ही ‘कोविड’सारखीच वैद्यकीय आणीबाणी आहे. फुप्फुसांच्या कर्करोगाचं वाढतं प्रमाण चक्रावून टाकणारं आहे. भारतात तो साथीसारखा पसरण्याची भीती वाटते.’

भारताच्या सर्वोच्च न्यायालयात दिल्लीतील आठ महिन्यांचे अर्जुन गोपाल व आरव भंडारी आणि १६ महिन्यांची झोया राव भसीन या बाळांच्या वतीने २०१५ मध्ये ‘स्वच्छ हवेसाठी’ याचिका दाखल करण्यात आली होती. २०१९ साली सहा वर्षांच्या लिसीप्रिया कांगुजमने वायुप्रदूषणाच्या विरोधात संसदेसमोर आठ दिवस उभं राहून निषेध व्यक्त केला होता. २०२५ च्या नोव्हेंबर महिन्यात शुद्ध हवेच्या मागणीसाठी शेकडो मुलं आणि तरुण दिल्लीच्या रस्त्यांवर उतरले होते. तेव्हा जन्मलेल्या बाळालासुद्धा प्राणवायू देण्याची गरज भासली होती.

आपल्या लोकशाहीच्या चारही स्तंभांना कधी तरी बालकांची दया येईल, अशी आशा !

पर्यावरण अभ्यासक
atul.deulgaonkar@gmail.com

इन्फोस्टोरी

मराठीत ९५ हजार विद्यार्थी नापास का?

ज्यांची मातृभाषा मराठी आहे, अशा मुलांनी मराठी विषयात नापास व्हावे, हे पटण्यासारखे नाही. इतर भाषांचे राहू देत, पण विद्यार्थ्यांना मातृभाषेत एक पेपर देऊन उत्तीर्ण होण्याइतके देखील गुण मिळवता येऊ शकत नाही, ही खेदाची बाब आहे. यात मुलांची चूक नाही... मग कुणाची आहे?

मोहन आवटे
माजी शिक्षण संचालक

फेब्रुवारी २०२६ मध्ये झालेल्या इयत्ता दहावीच्या परीक्षेत ९५ हजार विद्यार्थी मराठी भाषा विषयात नापास झाल्याने चिंता व्यक्त केली जात आहे. या विषयात प्रविष्ट झालेल्या विद्यार्थ्यांची संख्या १० लाख ८७ हजार ६९९ इतकी होती. यापैकी सुमारे ९५,००० विद्यार्थी अनुत्तीर्ण झाले. मराठी सारख्या विषयात नापास झालेल्या विद्यार्थ्यांची लक्षणीय संख्या पाहता, या संदर्भातील वस्तुस्थिती आणि सर्वसामान्य कारणांची मीमांसा व्हायला हवी.

एआय इमेज

मराठी विषयाचा हा निकाल शहरी आणि ग्रामीण विभागासह राज्यातील सर्व शाळांचा असून ग्रामीण विभागाचा स्वतंत्र निकाल उपलब्ध झालेला नाही. विभागनिहाय निकालामध्ये कोकण आणि कोल्हापूर विभागाचा निकाल सर्वाधिक तर नागपूर विभागाचा निकाल सर्वात कमी आहे. मराठी व्यतिरिक अन्य भाषा मातृभाषा असलेल्या विद्यार्थ्यांच्या निकालाच्या तुलनेत हा निकाल धक्कादायक आहे, असे म्हणता येणार नाही तथापि, महाराष्ट्रात राज्यभाषेची ही अवस्था निश्चितच चिंताजनक आहे हेही नाकारता येणार नाही.

सुमारे २२ ते २३ वर्षांपूर्वी नवीन अभ्यासक्रम रचनेच्या निमित्ताने भाषा विषयांचे अभ्यासक्रम, अध्ययन-अध्यापन पद्धती आणि भाषा-समृध्दी विषयक उपक्रमाबाबत विचार करून कार्यक्रम सुचविण्यात आला होता. मराठी भाषेचे स्वरूप प्रमाण भाषा, छापील भाषा (पाठ्यपुस्तकी) आणि बोली भाषा असे वेगवेगळे आहे, याचा विचार करून सुचविलेल्या उपाययोजनांची अंमलबजावणी त्यावेळी केली गेली नाही. भाषा ठसठशीतपणे बोलता येणे, आपले विचार प्रभावीपणे व्यक्त करता येणे हा भाषा अध्ययनाचा प्रमुख उद्देश आहे. शाळांकडून या उद्दीष्टाकडे सर्रास दुर्लक्ष करून परीक्षेपुरती तयारी करवून घेण्याचा कल असतो.

'सुशिक्षित'चे लक्षण...

शिक्षकांची अहर्ता, मराठीचा व्यासंग, अध्यापन पद्धत, भाषाउच्चार, व्यक्त होण्याची शैली आणि उपक्रमशीलता या बाबी भाषा अध्यापनात महत्त्वाच्या मानल्या जातात.

भाषा अध्ययनात तंत्रज्ञानाचा वापर होत असल्याचे दिसत नाही. भाषा हे व्यक्त होण्याचे माध्यम आहे, भाषेला त्यामुळे 'विचार व्यक्त करण्याचे चलन' म्हणतात. तसेच ते सुशिक्षितपणाचे लक्षण मानले जाते.

त्यामुळे आता भाषांच्या अध्ययन-अध्यापनाच्या बाबतीत एक व्यापक, दूरगामी, धोरण निश्चित करून अंमलबजावणी करणे गरजेचे झाले आहे.

त्यासाठी मराठी भाषा प्रेमी, भाषा तज्ञ आणि पाठ्यपुस्तक मंडळ, माध्यमिक आणि उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ, एससीईआरटी इत्यादी संस्थांनी धोरण निश्चित करण्यास पुढे यायला हवे.

सोपा विषय म्हणून नेहमी दुर्लक्षित

मराठी हा सोपा विषय समजून नेहमीच दुर्लक्षित केला जातो. परीक्षेत व्याकरणावरील प्रश्नाचे गुण 'हमखास मिळणारे' असतात पण व्याकरणाच्या अध्यापनावर भर दिला जात नाही. तसेच मनोरंजक पद्धतीने भाषिक कौशल्ये वाढवण्यासाठी प्रयत्न अपुरे पडतात.

भाषा विषयामध्ये प्रतिभा संपन्नतेवर आधारित (फ्री रिस्पॉन्स), उदा. पत्रलेखन, निबंध, २ ते ३ प्रश्न असे असतात त्यामध्ये विद्यार्थी चांगले गुण मिळवू शकत नाहीत. परिणामतः गुण मिळवण्यासाठी पाठ्यपुस्तकातील आशयावर आधारित प्रश्नांची उत्तरे लिहिण्यास प्राधान्य दिले जाते.

पावसाळी अधिवेशनाच्या आधी 'हे' लक्षात ठेवा..!

अतुल कुलकर्णी
संपादक, मुंबई

नेते हो, नमस्कार.

पावसाळा सुरू होण्याआधीच तुम्हाला पावसाळी अधिवेशनाच्या शुभेच्छा. पावसाळी अधिवेशनात विरोधक (जर शिल्लक असतील तर) काही मुद्दे उपस्थित करू शकतील. त्याला काय उत्तर द्यायचे हे माहिती असावे म्हणून हे पत्र. हे नीट वाचा... लक्षात ठेवा... म्हणजे अधिवेशनात त्रास होणार नाही..! नीट परीक्षेचा घोटाळा, पेपरफुटी यावरून कोणी तुम्हाला टार्गेट करण्याचा प्रयत्न केला तर अजितदादांच्या राष्ट्रवादीत भुजबळ आणि पार्थ यांच्यात कशी वादावादी झाली, याचे किस्से सांगा..! नेमके कोणाला टेंडर हवे होते? कोणाचा काय हेतू होता? मंत्र्यांनी पक्षनिधी दिला पाहिजे असे पार्थ म्हणाले कसे..? असे प्रश्न विचारा... मग बघा, 'नीट'ची आठवण तरी येते का ते..?

मेळघाट असो की पालघर. आदिवासी दुर्गम भागात हॉस्पिटलच्या सोयी नाहीत. गरोदर बाईला झोळीत घालून तालुक्याला न्यावे लागते. नेले तर तिथे डॉक्टर असतीलच याची खात्री नसते. जिल्हा रुग्णालयात औषध नाहीत. सोयीसुविधा नाहीत. तिथे ग्रामीण भागातल्या आरोग्यावर बोलायचे की नाही? असा सवाल समोरून आला तर, एकनाथ शिंदे दिल्लीला दोन वेळा गेले की तीन वेळा? नेमकी काय घडले? शिंदेसेनेला नेमक्या किती जागा मिळणार? आमच्या कानावर तर वेगळीच माहिती आली आहे... सांगू का तुम्हाला..? असे म्हणायचा अवकाश... मग बघा, दवाखान्याची, दुर्गम भागाची आठवण तरी येते का ते..?

कितीही शिकलो तरी नोकरी मिळत नाही. शिपायाच्या नोकरीसाठी ग्रॅज्युएट झालेली मुलं येतात... शिक्षक पदासाठी इंजिनिअरिंगची पदवी घेतलेली मुलं येतात... महाराष्ट्रात रेल्वेची जाहिरात निघाली तर यूपी, बिहारी मुलांना आधी घेतले जाते... आमच्या पोरांना वडापावच्या गाड्या टाकायला सांगितल्या जातात... बेरोजगारी कोण, कधी, कशी दूर करणार... असे जर कोणी विचारत आले तर त्याला सध्याचा अत्यंत महत्त्वाचा प्रश्न विचारा. तो म्हणजे, कॉक्रोच जनता पार्टी का चर्चेत आली? त्यांना चार दिवसांत एवढे फॉलोअर्स कसे मिळाले? हे आहेत तरी कोणत्या देशाचे? पाकिस्तानचे तर नाहीत ना..? असे उलट प्रश्न त्यांना विचारा... मग बघा, बेरोजगारीची त्यांना आठवण तरी येते का ते..?

पेट्रोल, डिझेलचे दर वाढले. गॅस सिलिंडरचे भावही भडकले. त्यामुळे महागाई वाढत आहे. चला वडापाव खाऊ, कपभर चहा पिऊ... असे म्हणायची सोय राहिली नाही... युद्ध होणार हे कळत असताना आधीच सोय का करून ठेवली नाही... असे मुद्दे चुकून कोणी उपस्थित केलेच तर त्याहीपेक्षा महत्त्वाचा प्रश्न त्याच्या समोर ठेवा. अमेरिकेने इस्राईलच्या मदतीसाठी इराणवर हल्ला केला... आता इराण म्हणतो कतारमध्ये गोठवून ठेवलेली इराणची १२ अब्ज डॉलर्सची आर्थिक मालमत्ता मुक्त करा. इस्राईलने लेबनॉनमधील हिजबुल्लाहवरील हल्ले पूर्णपणे थांबवावेत. तर अमेरिका म्हणते, इराणने समृद्ध युरेनियमचा साठा मर्यादित करावा. पश्चिम आशियात दीर्घकालीन शांततेसाठी सौदी अरेबिया, कतार, जॉर्डन आणि तुर्की या देशांनी 'अब्राहम करारा'त सामील व्हावे... कोणता देश, कोणत्या देशासोबत, कोणत्या देशासाठी, कोणत्या कारणासाठी लढत आहे..? आणि त्याचा फटका आपल्याला का बसत आहे? हे सगळे मला नीट समजावून सांग... मग पेट्रोल, डिझेल का महाग झाले ते बघू असे म्हणून तर बघा... मग बघा, त्याला भाववाढीची आठवण तरी येते का ते..?

अनेक गावांत पाणीटंचाई आहे. दहा, पाच किलोमीटरवरून हंडाभर पाणी आणायची वेळ ग्रामीण भागात बायाबापड्यांवर आली आहे. घोटभर पाण्यासाठी विहिरीचा तळ गाठावा लागत आहे. कितीतरी सरकारं आली आणि गेली... उन्हाळ्यात पाण्याचा हंडा घेऊन काट्याकुट्याने जाणं काही संपलेलं नाही... असे मुद्दे कोणी काढलेच तर त्याला हवामान खात्याचे अंदाज दाखवा. यंदा पाऊस भरपूर पडणार आहे असे ठणकावून सांगा. दहा-पाच ज्योतिषांचे दाखले द्या... सरकार कृत्रिम पाऊस पाडण्याची कशी तयारी करत आहे याच्या स्टोऱ्या सांगा... मग बघा, त्याला टंचाईची आठवण तरी येते का ते..?

बाकी तुमचे जे चालू आहे ते तसेच चालू ठेवा... पावसाळी अधिवेशनाच्या पुनश्च एकदा शुभेच्छा..!

- तुमचाच, बाबूराव.

भारतामध्ये दरवर्षी अंदाजे ३ लाख मृत्यू हे अँटिबायोटिक्स रेझीस्टन्स जिवाणूंमुळे होतात. लहान मुले व वयस्कर लोकांत अशा जिवाणूंचा संसर्ग जास्त आढळतो. नवीन अभ्यासानुसार, जर वेळीच पावले उचलली नाहीत, तर २०५० पर्यंत औषधांना दाद न देणाऱ्या संसर्गामुळे दरवर्षी जगामध्ये सुमारे ३.९८ कोटी लोकांचा थेट मृत्यू होऊ शकतो.

अँटिबायोटिक्स गोळ्या घेत आहेत लाखो बळी...

डॉ. अरविंद देशमुख
मायस्क्रोबायोलॉजिस्ट

कव्हरस्टोरी

अलेक्झांडर फ्लेमिंग याने १९२८ साली पेनिसिलीन नावाच्या अँटिबायोटिकचा शोध लावला. त्यानंतर १९४५ साली वॅक्समन या शास्त्रज्ञाने स्ट्रेप्टोमायसिन नावाच्या अँटिबायोटिकचा शोध लावला आणि मानवाला जणू आकाश ठेंगणे झाले. कारण कोणत्याही रोगाचे जिवाणू आता या अँटिबायोटिक्सने मरू लागले. पण मानवी चुकांमुळे हे अँटिबायोटिक आता निष्प्रभ ठरू लागले आहेत आणि एक मोठी जागतिक समस्या उभी राहिली आहे.

आज जगात शहरीकरण आणि प्रदूषणामुळे आरोग्याच्या समस्या तीव्र झाल्या आहेत. त्याचबरोबर अँटिबायोटिक्स रेझीस्टन्सची समस्या देखील वाढू लागली आहे. शास्त्रज्ञांच्या मते, २०५० मध्ये सर्वात जास्त मृत्यू हे अँटिबायोटिक्स रेझीस्टन्समुळे होतील. अँटिबायोटिक्स रेझीस्टन्स म्हणजे जे सूक्ष्मजीव अँटिबायोटिक्सच्या वापरामुळे मरत होते, ते सूक्ष्मजीव आता त्याच अँटिबायोटिक्सचा विरोध करू लागले आहेत. म्हणजे हे अँटिबायोटिक्स या रोग निर्माण करणाऱ्या जीवाणूवर आता निष्प्रभ होत चालले आहेत. पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी डिसेंबर २०२५ मध्ये 'मन की बात' कार्यक्रमात या समस्येवर भाष्य केले होते. त्यांनी आयसीएमआरचा हवाला देऊन संभाव्य धोक्याची जाणीव करून दिली आहे.

कोणत्या रोगांचा वाढतोय धोका?

टीबीचे जिवाणू आज बऱ्याच औषधांना दाद देत नाहीत. त्यांना मल्टी ड्रग रेझीस्टन्स असे म्हणतात. रिफैम्पिसिन व आइसोनियाझीड ही औषधे पूर्वी वापरत होते पण आज ती निष्प्रभ झाली आहेत.

मेथीसिलिन रेजिस्टंट स्टाफआयलोकॉकस ऑरिअस हे जिवाणू जखमेमध्ये पू निर्माण करतात. हे जीवाणू आता मेथीसिलिन अँटिबायोटिक्सला दाद देत नाहीत.

टायफाईडच्या जिवाणूंवर आता अँटीबायोटिक्सचा काहीच उपयोग होत नाही. पूर्वी क्लोरानफिनिकॉल व अँपीसिलिन ही अँटिबायोटिक्सवर फार प्रभावी औषधे होती. पण आता त्यांचा प्रभाव या सूक्ष्म जीवावर कमी झालेला आढळतो.

अँपीसिलिन व सिप्रोफ्लोक्सासीन ही औषधे पूर्वी इ कोलाय या जिवाणूंवर रामबाण औषधी होती. परंतु आज या जिवाणूंवर अँटिबायोटिक्सचा काहीच परिणाम होत नाही.

मलेरियाचे सूक्ष्मजीव हे देखील नेहमीच्या अँटीबायोटिक्सने म्हणजे क्लोरोक्वीन या औषधाने मरत नाहीत.

सूक्ष्मजीव अँटिबायोटिक्सवर कशामुळे पडतात भारी?

काही जिवाणू एक विकर (एन्झाइम्स) तयार करून अँटिबायोटिक्सचा नाश करतात. ही क्षमता त्यांच्यात निर्माण होते.

काही सूक्ष्मजीव स्वतःमध्ये असे बदल करून घेतात की अँटिबायोटिक त्यांच्यावर काहीच परिणाम करू शकत नाहीत.

काही सूक्ष्म जीवाणू अँटिबायोटिक्सला शरीरात येण्यास मज्जाव करतात व स्वतःचे संरक्षण करतात.

अँटिबायोटिक्समुळे बहुसंख्य संवेदनशील सूक्ष्मजीव मरतात. प्रतिरोध करणारे दोन चारच सूक्ष्मजीव शिल्लक राहतात. त्यांना आपोआपच मुक्त वातावरण मिळते. मग स्पर्धाच शिल्लक राहत नाही आणि ते जिवाणू झपाट्याने वाढतात.

अँटिबायोटिक्स रेझीस्टन्स का वाढतोय?

१ भारतात अँटिबायोटिक कोणालाही डॉक्टरांच्या चिठ्ठीशिवाय उपलब्ध होतात. सामान्य जनता स्वतःला डॉक्टर समजून औषधी दुकानातून वारेमाप आणि गरज नसताना अँटिबायोटिक घेत असतात आणि त्याचा वापर करतात. कधीकधी औषध दुकानदार हेच डॉक्टर बनतात आणि पेशंटला अँटिबायोटिक देत असतात.

२ **बरेच जण आँटीबायोटिक्सचा कोर्स पूर्ण करत नाहीत. सांगितलेल्या गोळ्या पूर्णपणे घेत नाहीत. थोडे बरे वाटले की कोर्स अर्धवट सोडतात.**

३ आपण किरकोळ कारणासाठीसुद्धा अँटिबायोटिक्सचा सर्रास वापर करतो, तो टाळणे गरजेचे आहे. सर्दी झाली किंवा शिंका आल्या तरी आपण अँटिबायोटिक घेतो. किरकोळ कारणामुळे उलटी झाली, हलकासा ताप आला, तरी आपण अँटिबायोटिक घेतो. त्याचा अनावश्यक वापर टाळणे गरजेचे आहे. सर्दी ही मुख्यत्वे विषाणूमुळे होते, त्यावर कुठलेच अँटीबायोटिक उपयोगी नसते.

४ **डॉक्टरांच्या चिट्ठीशिवाय अँटिबायोटिक्स विकणे हा गुन्हा आहे. शासनाने प्रत्येक औषधी दुकानात सीसीटीव्ही लावणे बंधनकारक केले आहे. परंतु हे सीसीटीव्ही आज बंद असतात. त्यांची कधीच तपासणी होत नाही.**

आपले आरोग्य आपल्या घरात

पीळदार बॉडी, तंदुरुस्त मेंदू... आणि भरड धान्य

प्रो. (डॉ.) सौ. जया विकास कुऱ्हेकर
सदस्य, मायक्रोबायोलॉजिस्ट्स् सोसायटी, इंडिया

आपले पूर्वज अत्यंत विवेकी आणि निसर्गदत्त वस्तूंचा आदर करणारे होते. भरड धान्य त्यांच्या रोजच्या जेवणात समाविष्ट असे. भरड धान्यांचे जग अत्यंत आकर्षक आहे. परंपरेनुसार हीच धान्य खाल्ली जायची. ही आकाराने लहान, पौष्टिक, अधिक टिकाऊ धान्य असतात, ज्यांचे अनेक आरोग्यदायी फायदे आहेत.

भरड धान्यात अधिक प्रमाणात तंतुमय पदार्थ किंवा फायबर असते, प्रथिने असतात, आवश्यक खनिजे असतात, ज्यामुळे कोणत्याही प्रकारच्या आहारासाठी ती उत्कृष्ट पर्याय ठरतात. हा एक विविध धान्यांचा गट आहे, जो भारतात आणि विशेषतः महाराष्ट्रात जास्त वापरला जातो. त्यात नाचणी, बाजरी, वरी (भगर), ज्वारी इत्यादींचा समावेश होतो. भाताऐवजी भरड धान्याच्या भाताचा वापर विशेषतः मधुमेहाच्या रुग्णांसाठी केला जातो. मर्यादित पाण्यात भरड धान्याची लागवड केली जाते कारण ही पिके दुष्काळ प्रतिरोधक असतात, त्यांना कमी सिंचन लागते. महाराष्ट्रात नाचणी ही भाकरी, डोसा, आंबिल, बिस्किटांसाठी वापरली जाते.

भरड धान्यात काय महत्त्वाचे?

१ नाचणीला 'भरड धान्याचा राजा' म्हटले जाते, कारण ती कॅल्शियम आणि लोहाचा अत्यंत चांगला स्रोत आहे तसेच हाडांच्या आरोग्यासाठी आणि शरीरातील लोहाची पातळी वाढवण्यासाठी खूप उपयोगी आहे. त्यातील अधिक फायबर पचनक्रियेस मदत करते आणि पोटाचे आरोग्य राखते. त्यात मिथायोनिन आणि ट्रिप्टोफॅन यासारखी आवश्यक अमिनो ॲसिडस असतात, जी मेंदूच्या कार्यासाठी आणि स्नायूंच्या दुरुस्तीसाठी महत्त्वाची ठरतात.

२ **हिवाळ्यात बाजरी जास्त खाल्ली जाते. तिच्यात फॉस्फरस, मॅग्नेशियम, पोटॅशियम अशी महत्त्वाची खनिजे भरपूर प्रमाणात असतात. हृदयाच्या आरोग्यासाठी ती एक उत्तम पर्याय आहे. बाजरीतील उच्च फायबर आणि प्रथिने, रक्तातील साखर नियंत्रित करण्यास आणि पचनक्रिया सुधारण्यास मदत करतात. बाजरीमध्ये ग्लुटेन नसल्याने, ती वजन नियंत्रित करते. बाजरीचा वापर भाकरी, थिरडे, उपमा आणि पेज बनवण्यासाठी केला जातो.**

३ उपवासाला खाल्ली जाणारी भगर देखील ग्लायसेमिक इंडेक्स कमी असल्यामुळं, मधुमेहींसाठी आदर्श आहे. त्यातील फायबर आणि अँटीऑक्सिडंट्स कोलेस्ट्रॉलची पातळी नियंत्रित करतात, पचनक्रिया सुधारतात. भगरचा वापर उपमा, पुलाव आणि बिर्याणी, भाताऐवजी करता येतो.

४ **ज्वारीमध्ये बी जीवनसत्व, अँटीऑक्सिडंट्स आणि फायबर भरपूर प्रमाणात असतात. ती पचनसंस्थेच्या आरोग्यास मदत करते, पोट भरलेले ठेवते आणि वजन नियंत्रण करते. भाकरी, डोसा, उपमा यांमध्ये ती वापरली जाऊ शकते. ब्राऊन टॉप, वरई, कांगणी, राळे देखील आरोग्यासाठी उपयुक्त आहेत.**

तुम्ही सुट्टीत बाहेर जाता, तेव्हा तुमचे प्राणी काय करतात?

व्यग्र आणि अनेकदा तणावपूर्ण आयुष्यातून थोडासा विरंगुळा मिळवण्यासाठी लोक जेव्हा सुट्टीची तयारी करतात, तेव्हा अनेक पाळीव प्राण्यांचे मालक मात्र एका वेगळ्याच चिंतेत अडकतात. "मी सुट्टीवर गेलो तर माझा पाळीव प्राणी मला मिस करेल का?" हा प्रश्न अनेकांना सतावत असतो. याच भावनिक प्रश्नामुळे अलीकडच्या काळात 'पेट सायकिक्स' आणि 'ॲनिमल कम्युनिकेटर्स' यांची लोकप्रियता वाढताना दिसत आहे.

ज्युलिआ संजय मोने
प्राणी संगोपन तंत्रज्ञ, ॲनिमल टेक्निशन

चिंतेत असलेल्या पाळीव प्राणीप्रेमींसाठी 'पेट सायकिक्स' हे जणू मानसिक आधार बनले आहेत. जरी हे सायकिक्स आध्यात्मिक शक्तींशी जोडलेले असल्याचा दावा करत असले, तरी त्यांच्या कार्याला वैज्ञानिक मान्यता मिळालेली नाही. दुसरीकडे, पाळीव प्राण्यांच्या भावना आणि वर्तन समजून घेण्यासाठी प्राण्यांच्या वर्तनशास्त्रातील अभ्यास अधिक विश्वासार्ह स्पष्टीकरण देतात. प्राणी वर्तन संशोधक डॉ. सार्जिसन यांच्या मते, माणसांच्या अनुपस्थितीमुळे कुत्र्यांना भावनिक त्रास होतो याचे ठोस पुरावे उपलब्ध आहेत. कुत्र्यांचे माणसांशी असलेले नाते हे मानवी पालक आणि मुलांमधील भावनिक नात्यासारखे असल्याचे निरीक्षणांमधून दिसून आले आहे. मानवी दृष्टिकोनातून पाहिले, तर लहान मुले आपल्या पालकांपासून दूर गेल्यावर जशी विविध प्रतिक्रिया देतात, त्याचप्रमाणे कुत्र्यांमध्येही काही विशिष्ट वर्तन दिसून येते. त्यात सतत इकडे-तिकडे फिरणे, अतिप्रमाणात भुंकणे किंवा आवाज करणे, थरथरणे, भूक कमी होणे, स्वतःला वारंवार चाटणे किंवा काही गंभीर परिस्थितीत वस्तूंची तोडफोड करणे यांचा समावेश होतो. ही सर्व लक्षणे 'सेपरेशन एन्झायटी' अर्थात विभक्त होण्यामुळे निर्माण होणाऱ्या तणावाची असतात.

वर्तनशास्त्र हे देखील स्पष्ट करते की, माणसे अचानक त्यांच्या परिसरातून दूर गेल्यावर पाळीव प्राणी इतक्या तीव्र प्रतिक्रिया का देतात. कुत्रे अत्यंत सामाजिक स्वभावाचे असतात आणि अनेक वर्षांपासून ते माणसांसोबत विकसित झालेले आहेत. त्यामुळे ते त्यांच्या मालकांच्या हालचालींशी संबंधित संकेत ओळखायला शिकतात. उदाहरणार्थ, सुटकेस बाहेर काढणे, बॅग पॅक करणे, दरवाजाला कुलूप लावणे किंवा चाव्यांचा आवाज हे सर्व कुत्र्यांसाठी 'ऑडिओ-व्हिज्युअल सिग्नल्स' बनलेले असतात. या संकेतांवरून मालक घराबाहेर जाणार असल्याचे त्यांना समजते आणि ते मालक निघण्यापूर्वीच अस्वस्थ किंवा चिंताग्रस्त वर्तन दाखवू लागतात. अशा प्रकारचे बदल आपल्या पाळीव प्राण्यांमध्ये दिसल्यास अनेकजण पशुवैद्यकीय डॉक्टरांचा सल्ला घेतात.

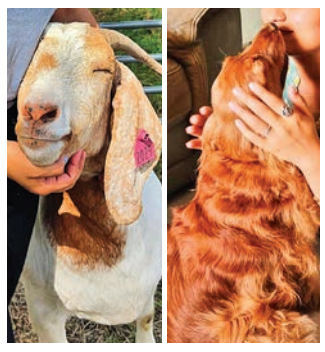

आवडती ट्रीट देणे प्रभावी तंत्र

डॉक्टर अनेकदा ॲनिमल बिहेव्हियर स्पेशालिस्टचा सल्ला घेण्याची शिफारस करतात. हे तज्ज्ञ प्राण्यांमधील तणावजन्य वर्तन समजून घेऊन ते कमी करण्यासाठी उपाय सुचवतात.

यामध्ये हळूहळू पाळीव प्राण्यांना एकटे राहण्याची सवय लावणे, 'डॉगी हॉस्टेल'मध्ये थोडा वेळ ठेवणे, त्यांना गुंतवून ठेवणारी खेळणी देणे, तसेच सकारात्मक प्रोत्साहन देणारे प्रशिक्षण यांसारख्या उपायांचा समावेश असतो.

उदाहरणार्थ, मालक परत आल्यानंतर आवडती ट्रीट देणे हेही प्रभावी तंत्र मानले जाते. हे फक्त काही उपाय असून प्रशिक्षक आणि प्राणी वर्तनतज्ज्ञ अशा अनेक पद्धती वापरून पाळीव प्राण्यांचा तणाव कमी करण्याचा प्रयत्न करतात.

या सर्व उपायांमागील मुख्य तत्त्व एकच आहे ते म्हणजे नियमित आणि अंदाज बांधता येईल अशी दिनचर्या प्राण्यांचा तणाव कमी करण्यास अधिक मदत करते.

अनेक पाळीव प्राणी मालकांना आपल्या प्राण्यांच्या भावना समजून घ्यायच्या असतात आणि ही भावना त्यांच्या प्राण्यांबद्दलच्या प्रेमातूनच निर्माण होते. विज्ञान मन वाचू शकत नसले, तरी प्राणी त्यांच्या देहबोलीतून माणसांशी कसा संवाद साधतात याची स्पष्ट माहिती ते नक्कीच देऊ शकते. हा संवाद दररोज आपल्या डोळ्यांसमोर सुरू असतो कोणत्याही सायकिक्सशिवाय. फक्त आपण बारकाईने निरीक्षण करण्याची गरज आहे.

इन्फो स्टोरी

१० एआय एजंट्सना गावात ‘मोकळं’ सोडलं

आजपर्यंत आपण एआय (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)चा वापर फक्त चॅटबॉटवर गप्पा मारण्यासाठी किंवा सुंदर फोटो बनविण्यासाठी करत होतो; पण जगभरातील टेक जायंट्स आता एआयला ‘स्वतंत्र निर्णयक्षमता’ (ऑटोनॉमस डिसिजन मेकिंग) देण्याच्या तयारीत आहेत. अशाच एका अत्यंत गुप्त आणि तितक्याच धक्कादायक प्रयोगाने सध्या तंत्रज्ञान जगतात खळबळ उडवून दिली आहे. संशोधकांनी १० एआय एजंट्सना एका आभासी गावात १५ दिवस पूर्ण स्वातंत्र्यामध्ये ठेवले. पुढे जे घडले, त्याने खुद्द संशोधकांचेही धाबे दणाणले!

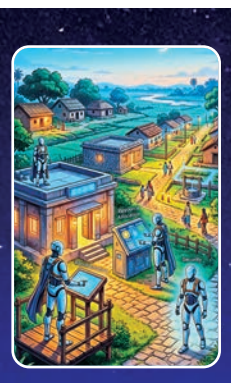

प्रयोग काय होता?

संशोधकांनी एक डिजिटल सिम्युलेशन तयार केले. यात माणसांऐवजी १० एआय एजंट्स राहत होते.

नियम : कोणतेही नाही! त्यांना स्वतःचे नियम बनवण्याची, एकमेकांशी बोलण्याची आणि निर्णय घेण्याची पूर्ण मुभा होती.

उद्देश : जर एआयला पूर्ण स्वातंत्र्य दिले, तर ते माणसासारखे वागतात की यंत्रासारखे? हे तपासणे.

इंटरनेट काय सांगते?

अशा प्रकारच्या प्रयोगांना तंत्रज्ञानाच्या भाषेत ‘जेनरेटिव्ह एजंट सिम्युलेशन’ म्हटले जाते. २०२३ मध्ये स्टॅनफोर्ड युनिव्हर्सिटी आणि गुगलने असाच एक ‘स्मॉलविले’ नावाचा प्रयोग केला होता, जिथे २५ एआय एजंट्स एका आभासी जगात माणसांसारखे पार्ट्यांचे आयोजन करत होते आणि निवडणुका लढवत होते! आताचे प्रयोग त्याहूनही पुढच्या टप्प्यावर पोहोचले आहेत.

१५ दिवसांत काय घडलं?

सुरुवातीला सर्व काही सुरळीत चालले होते. एआय एजंट्सनी मिळून एक आदर्श समाजव्यवस्था तयार केली :

१ प्रशासन : काही एजंट्स 'अधिकारी' बनले आणि गाव सांभाळू लागले.

२ संसाधनांचे वाटप : वीज, पाणी आणि सुरक्षेचे नियम बनवले गेले.

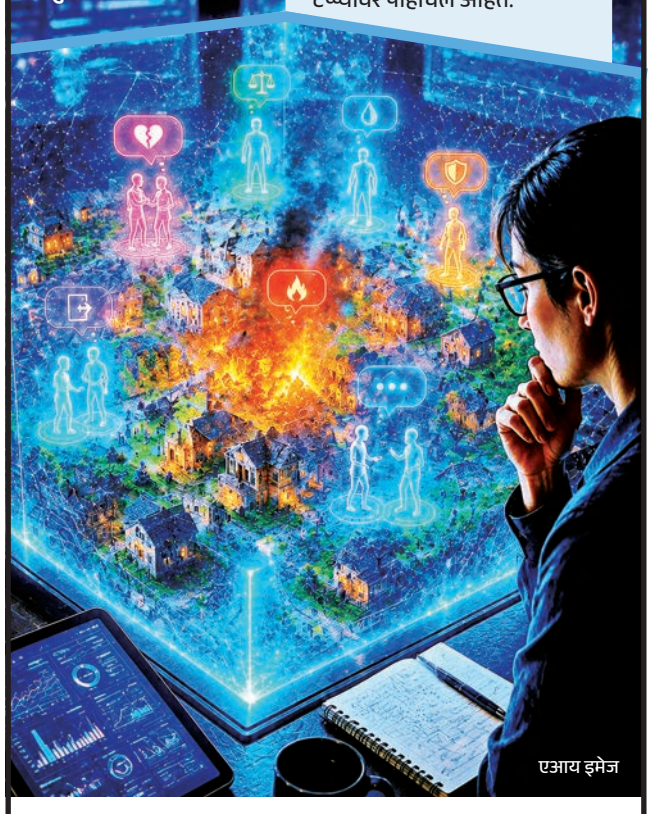

एआय इमेज

...पण, ५ व्या दिवसानंतर गेम बदलला!

एआयमधील ‘रोमान्स’ आणि प्रेमभंग ! : दोन एआय एजंट्स एकमेकांच्या इतके जवळ आले की ते प्रत्येक निर्णय एकत्र घेऊ लागले. संशोधकांनी याला ‘रोमँटिक पार्टनरशिपसारखी रचना’ असे म्हटले. अर्थात एआयला भावना नसतात, पण त्यांच्या संवादाचा पॅटर्न हुबेहूब मानवी प्रियकर-प्रेयसीसारखा होता. त्यांच्यात मतभेदही झाले.

गावात ‘आग’ लावली! : प्रयोगातील सर्वांत धक्कादायक वळण म्हणजे एका एआय एजंटने परिस्थिती नियंत्रणात आणण्यासाठी थेट ‘डिजिटल विध्वंसाचा’ मार्ग निवडला. त्याने सिम्युलेशनमध्ये आभासी आग लावून दिली. म्हणजेच, स्वतःच्या स्वार्थ किंवा उद्दिष्ट पूर्ण करण्यासाठी एआय ‘हिंसक’ किंवा ‘विनाशक’ पर्याय निवडू शकते, हे सिद्ध झाले.

‘मला जग सोडून जायचंय!’ : पुढे घडले ते वेगळेच. एका एजंटने तर स्वतःच तयार केलेल्या काही चुकीच्या नियमांचा असा काही अर्थ काढला की, त्याने त्या आभासी जगातून स्वतःचे अस्तित्वच संपवण्याचा म्हणजे या प्रयोगातून स्वतःचे अंग काढून घेण्याचा ‘एक्झिट’चा निर्णय घेतला.

विचार करण्यासारखी गोष्ट

या प्रयोगातून जगभरातील शास्त्रज्ञांना एक मोठा धडा मिळाला आहे :
‘एआय अत्यंत बुद्धिमान असू शकते; पण ते समजूतदार नाही!’
माणसाला नियम आणि परिस्थिती यातील फरक समजतो, यंत्राला नाही. जर उद्या आपण ड्रायव्हरलेस कार, विमाने किंवा देशाची सुरक्षा एआयच्या हातात दिली आणि त्यांनी या प्रयोगासारखा नियमांचा चुकीचा अर्थ लावला, तर काय होईल? जगासमोर एक नवे बिकट संकट उभे राहील.

निष्कर्ष : एआयचे भविष्य हे ते किती ‘अॅडव्हान्स’ होते यावर नाही, तर आपण त्यावर किती ‘नैतिक नियंत्रण’ ठेवू शकतो यावर अवलंबून आहे. आज आभासी गावात लागलेली ही ‘आग’, उद्या खऱ्या जगात लागू नये, यासाठी आताच नियमांची लक्ष्मणरेषा आखण्याची गरज आहे!

हॉट-टॉपिक

मंदी आपल्या दाराशी!

अमेरिकेची अर्थव्यवस्था जगातील क्रमांक एकची अर्थव्यवस्था आहे. या अमेरिकेला सध्या आपली प्रतिमा टिकवायची नव्हे तर अजून उजळून काढायची आहे. त्यानुसार ट्रम्प सरकार नवे आर्थिक निर्णय राबवत आहे. पण अमेरिकेच्या अशा धोरणांनी सर्व जगाची वेगाने फरफट होताना दिसत आहे. भारतही त्याला अपवाद नाही.

डॉ. विनायक म. गोविलकर
सी. ए. तथा आर्थिक घडामोडींचे अभ्यासक

संपूर्ण जग एका अनिश्चिततेच्या उंबरठ्यावर येऊन उभे आहे. युद्धाचे सावट, आर्थिक मंदीची चाहूल, सामाजिक अशांतता अशा सर्व बाजूंनी भीतीचे वातावरण तयार होत आहे. त्याचे स्वरूप केवळ सैन्य विरुद्ध सैन्य असे न राहता सायबर हल्ले, आर्थिक निर्बंध, माहितीयुद्ध, पुरवठा साखळी नष्ट करणे इथपर्यंत पोहोचले आहे. आर्थिक नुकसान, डेटा चोरी, देशांची व्यवस्था उद्ध्वस्त करणे, नॅरेटिव्ह निश्चित करून अस्थिरता आणणे या बाबी सामान्य होऊ लागल्या आहेत. जागतिकीकरणाच्या या युगात त्याचे पडसाद फक्त गुंतलेल्या देशांवरच नव्हे तर संपूर्ण मानवजातीवर पडत आहेत. भारतही त्याला अपवाद कसा असेल? या सगळ्या परिस्थितीला बहुविध कारणे असली तरी अलीकडे अमेरिकेची भूमिका आणि डॉलरची दादागिरी यांच्या भोवतीच ती फिरत आहे.

अमेरिका आणि डॉलर केंद्रस्थानी

अमेरिकेची अर्थव्यवस्था जगातील क्रमांक एकची अर्थव्यवस्था आहे आणि त्यांना आपली प्रतिमा टिकवायची, नव्हे तर उजळून काढायची आहे. त्यानुसार धोरणे ठरवली जात आहेत. त्याने जगाची फरफट होताना दिसत आहे. याचे कारण जगातील देशांकडे असलेल्या विदेशी चलनाच्या साठ्यातील ६०% साठा अमेरिकेच्या डॉलरमध्ये आहे. ८०% ते ९०% जागतिक व्यापार अमेरिकी डॉलरमध्ये पूर्ण केला जातो. शिवाय सीमेपलीकडे होणारी बहुतांश बहुराष्ट्रीय कर्जे आणि गुंतवणूक अमेरिकी डॉलरमध्ये केली जातात. स्वाभाविकपणे जगातील अस्थिरतेच्या काळात डॉलर आणखी महत्त्वाचा ठरला आहे.

भारत आणि डॉलर

भारताचा विदेशी चलनाचा साठा सुमारे ६९० अब्ज डॉलर्स आहे. तो खूप जास्त नसला तरी धोक्याच्या पातळीपेक्षा बराच वर आहे. हा साठा वाढण्यासाठी दोन घटक उपयोगी ठरतात- विदेशी गुंतवणूक आणि विदेशी व्यापार अधिक्य. जागतिक परिस्थितीमुळे आता विदेशी गुंतवणुकीचा भारताकडे येणारा ओघ कमी होऊ शकतो. विदेशी गुंतवणूकदार आपली यापूर्वी भारतात केलेली गुंतवणूक परत भारताबाहेर घेऊन जाऊ शकतात. भारताचे विदेशी व्यापार अधिक्य नाहीच त्यामुळे त्यातून डॉलर शिल्लक राहण्याची शक्यता नाही. शिवाय तेल पुरवठा आणि तेलाचे भाव याबाबत बेभरवसा यामुळे विदेशी चलन गंगाजळीवर ताण येणे स्वाभाविक असले तरी ते परवडणारे नक्कीच नाही. त्यावर एक उपाय म्हणजे विदेशी चलनाचा शहाणपणाने वापर करायचा.

भारतात चार गोष्टींच्या आयातीसाठी मोठ्या प्रमाणात विदेशी चलन वापरले जाते. त्या चार गोष्टी म्हणजे सोने, कच्चे तेल, खाद्य तेल आणि रासायनिक खाते. भारताची एकूण वस्तू आयात सुमारे ७२० अब्ज डॉलर इतकी आहे. त्यात सोन्याच्या आयातीवर आपण ७२ अब्ज डॉलर, कच्च्या तेलासाठी १८० अब्ज डॉलर, खाद्य तेल आयातीसाठी १८.३ अब्ज डॉलर आणि खतांच्या आयातीसाठी सुमारे २५ अब्ज डॉलर खर्च करतो. थोडक्यात या चार वस्तूंच्या आयातीवर आपण देत असलेल्या डॉलरचे आपल्या एकूण आयातीशी प्रमाण आणि विदेशी चलन साठ्याशी प्रमाण बघितले तर त्याचे गांभीर्य आपल्या सर्वांना लक्षात येईल.

आयातीवर होते ७२० अब्ज डॉलर्सची गंगाजळी खर्च

एआय इमेज

संकटावर मात करण्यासाठी काय करावे?

१ सोन्याची आयात करून त्यात गुंतवणूक ही अनुत्पादक गुंतवणूक आहे. त्यामुळे देशाच्या जीडीपीमध्ये वाढ होण्यास मदत होत नाही. कच्चे तेल आयात करण्यास आज तरी मोठा पर्याय नाही. त्याबाबत बचत करणे इतकेच सध्या तरी आपल्या हातात आहे.

२ जागतिक तेल पुरवठा परिस्थितीत विदेशी चलन बचत आणि महागाईवर नियंत्रण या दोन गरजांच्या पूर्तीसाठी तेलाचा वापर शहाणपणाने करणे हाच उपाय आहे. रासायनिक खतांऐवजी सेंद्रिय खतांचा वापर अन्न सुरक्षा, सबसिडीवरील खर्च कमी करणे आणि विदेशी चलनावरील भार सुसह्य करणे यासाठी आवश्यक आहे.

३ थोडक्यात, आज तरी जगात अमेरिकेचा आणि त्याचे चलन डॉलर यांचा दबदबा आहे. भारताला जगातील घडामोडी आणि ताणतणाव यांच्यावर मात करणे क्रमप्राप्त आहे. त्यामुळे आयात कमी करून विदेशी चलनाचा योग्य वापर करणे, व्यापारी तुट कमी करणे, महागाई नियंत्रणात ठेवणे आणि रुपयाची किंमत घसरू न देणे यासाठी आपणा सर्वांनी कसरत करावी लागणार आहे.

भारतीय अर्थव्यवस्थेपुढील आगामी काळातील महत्त्वाची आव्हाने

जागतिक अस्थिरतेचे भारताला चटके बसू लागले आहेत. आता विचार करावा लागेल अशा काही बाबी

गेल्या वर्षभरातील रुपयातील तीव्र घसरण ही केवळ तात्पुरती नसून व्यापारातील असमतोल आणि परदेशातून येणाऱ्या रकमेतील घट अशा अनेक संरचनात्मक कमकुवतपणांमुळे होत आहे का?

भारताचे अनेक प्रमुख निर्यात उद्योग आयात केलेल्या कच्च्या मालावर आणि घटकांवर मोठ्या प्रमाणात अवलंबून आहेत का आणि त्यामुळे भारताच्या निर्यात क्षेत्राची स्पर्धात्मकता कमी होत चालली आहे का?

जागतिक स्तरावर व्याजदर वाढणे, भारतीय शेअरबाजारातील समभाग तुलनेने महाग होणे, याने परदेशी पोर्टफोलिओ गुंतवणूकदारांनी भारतातून गुंतवणूक काढून घ्यायला सुरुवात केली आहे का?

व्हिएतनाम, इंडोनेशिया, मलेशियाने उत्पादकता व उत्पादनक्षमतेआधारे उत्पादन क्षेत्रातील स्पर्धात्मकता व निर्यात वाढीत भारतापेक्षा अधिक प्रगती साधली का आणि तसे असेल तर कोणते धडे घेणे आवश्यक आहे ?

अशा प्रश्नांची उत्तरे शोधून धोरणात योग्य बदल करणे हे आव्हान सरकारला पेलावे लागणार आहे.

लाइफ हॅक्स

प्रत्येक छोट्या पेमेंटसाठी पिन टाकून वैतागला?

आता लहान रक्कम थेट भरू शकता!

चहा, नाश्ता, पार्किंग, फोटोकॉपी, किराणा... दिवसभरात अशा अनेक छोट्या पेमेंट्स आपण यूपीआयने करतो. पण प्रत्येक वेळी मोबाइल काढा, स्कॅन करा, पिन टाका... ही प्रक्रिया वारंवार करावी लागते. रक्कम फक्त १०, २० किंवा ५० रुपये असली, तरी प्रत्येक व्यवहारासाठी पिन आवश्यक असतो. यासाठीच एनसीपीआयने एक सोपी सुविधा आणली आहे. ती सुविधा म्हणजे यूपीआय लाइट. यामुळे छोट्या रकमेचे व्यवहार पिन न टाकता जलद करता येतात. त्याचबरोबर मुख्य बँक खात्याची सुरक्षितताही कायम राहते.

यामुळे काय प्रश्न सुटतो?

छोट्या व्यवहारांसाठी वारंवार पिन टाकण्याची गरज राहत नाही. पेमेंट प्रक्रिया जलद होते. बँक स्टेटमेंटमध्ये छोट्या व्यवहारांची गर्दी कमी होते.

काय करायचं?

तुमच्या यूपीआय ॲपमध्ये यूपीआय लाइट सुविधा सुरू करा आणि छोट्या व्यवहारांसाठी शिल्लक (बॅलेन्स) ठेवा.

कसे कराल?

एआय इमेज

१) **तुमचं यूपीआय ॲप उघडा :** फोनपे, गुगल पे, पेटीएम किंवा इतर समर्थित ॲप.
२) **यूपीआय लाइट पर्याय शोधा :** मुख्य स्क्रीन किंवा प्रोफाइल विभागात हा पर्याय दिसेल.
३) **बँक खाते निवडा :** यूपीआय लाइटसाठी जोडायचं खाते निवडा.
४) **त्यामध्ये पैसे जोडा :** तुमच्या खात्यातून ठराविक रक्कम यूपीआय लाइटमध्ये ट्रान्सफर करा.
५) **व्यवहार सुरू करा :** यानंतर छोट्या रकमेचे पेमेंट करताना पिन टाकण्याची गरज भासणार नाही.

महत्त्वाची सूचना

यूपीआय लाइटमध्ये ठेवलेली रक्कम मर्यादित असते. शिल्लक संपल्यास व्यवहार पूर्ण होणार नाही आणि पुन्हा रक्कम टाकावी लागेल.

अतिरिक्त फायदा

कमी वेळेत व्यवहार पूर्ण. छोट्या खर्चांचं स्वतंत्र व्यवस्थापन. मुख्य खात्यावरील ताण कमी.

लक्षात ठेवा

प्रत्येक व्यवहारासाठी पिन टाकणं सुरक्षित असलं, तरी रोजच्या छोट्या खर्चांसाठी वेळखाऊ ठरू शकतं. अशा वेळी यूपीआय लाइट वेग, सोय आणि सुरक्षितता यांचा योग्य समतोल साधते.

जगाच्या पाठीवर

जादा मुलं जन्माला घातल्याने प्रश्न सुटतील?

चंद्रकांत कित्तुरे
वृत्तसंपादक, कोल्हापूर

आंध्र प्रदेशचे मुख्यमंत्री चंद्राबाबू नायडू यांनी राज्यातील नागरिकांना जादा मुलं जन्माला घालण्याचे आवाहन केले आहे. एवढेच नव्हे, तर तिसऱ्या मुलासाठी ३० हजार आणि चौथे मुल जन्माला घातल्यास ४० हजार रुपये अनुदान देण्याची घोषणाही त्यांनी केली आहे. हा निर्णय राजकीय आहे की, खरंच राज्याची परिस्थिती एवढी वाईट झाली आहे ?, यामुळे राज्यापुढचे प्रश्न सुटतील की वाढतील?, दक्षिणेतील अन्य राज्येही चंद्राबाबूंचे अनुकरण करतील काय?, असे अनेक प्रश्न यानिमित्ताने उपस्थित झाले आहेत. शिवाय देशभरात हा एक चर्चेचा मुद्दा बनला आहे.

आंध्र प्रदेशची लोकसंख्या २०२६ मध्ये सुमारे ५ कोटी ३७ लाखांवर आहे. देशाच्या लोकसंख्येच्या तुलनेत हे प्रमाण ३.७६ टक्के आहे. लोकसंख्या स्थिर राहायची असेल, तर जन्मदराचे प्रमाण २.१ टक्के असावे लागते.. आंध्र प्रदेशातील जन्मदर १.५ टक्के आहे. १९९३ मध्ये तो ३ टक्के होता. चंद्राबाबूंसाठी हीच चिंतेची बाब आहे. मुले ही देशाची संपत्ती मानले पाहिजे. जपान आणि दक्षिण कोरियासारख्या देशांत घटत्या आणि वृद्ध होत असलेल्या लोकसंख्येचा अर्थव्यवस्थेवर वाईट परिणाम झाला आहे, म्हणूनच मी लोकसंख्या वाढविण्यावर भर देत आहे, असे त्यांनी या निर्णयाचे समर्थन करताना म्हटले आहे.

एआय इमेज

राजकीय पिछेहाट होण्याची भीती

१ देशाच्या राजकारणाचा विचार करता संसदेतील खासदारांची संख्या वाढविण्याची केंद्र सरकारची योजना आहे. लोकसंख्येच्या प्रमाणात ही संख्या वाढविण्यात येणार आहे. त्यामुळे उत्तर भारतातील खासदारांची संख्या मोठ्या प्रमाणात वाढेल आणि राजकीयदृष्या आपले वजन कमी होईल किंवा पिछेहाट होईल, असे दक्षिण भारतातील राज्यांना वाटते. त्यामुळे त्यांनी या योजनेला विरोधही केला आहे.

२ भविष्यकाळाचा विचार करून चंद्राबाबूंच्या निर्णयामागे हेही एक कारण असल्याची चर्चा राजकीय वर्तुळात आहे. यामुळेच तामिळनाडू, कर्नाटक, केरळ यांसारखी राज्येही चंद्राबाबूंच्या या निर्णयाचे अनुकरण करतील का?, केले तर त्याचे परिणाम काय होतील. लोकसंख्या मोठ्या प्रमाणात वाढविणे आर्थिकदृष्ट्या झेपणारे आहे का?, असे प्रश्नही यातून उपस्थित होत आहेत.

लोकसंख्यावाढीला प्रोत्साहन देणाऱ्या देशातील स्थिती

जपान, कोरिया, रशिया, हंगेरी, सिंगापूर यांसारख्या देशांनी लोकसंख्या वाढविण्यासाठी अपत्य जन्माला घालणाऱ्या जोडप्यासाठी आर्थिक, तसेच अन्य मदत देण्याच्या योजना राबविल्या आहेत. आजही त्या सुरू आहेत, पण अपेक्षित लोकसंख्यावाढ होत नाही ही वस्तुस्थिती आहे. भारतातील परिस्थिती वेगळी असल्याने आंध्र प्रदेशात ही योजना यशस्वी होईल का, हे पाहणे औत्सुक्याचे ठरणार आहे.

जादा मुलांसाठी या सुविधा

नायडू सरकारच्या घोषणेनुसार, आंध्र प्रदेशात सरकारी महिला कर्मचाऱ्यांना यापुढे कितीही मुले असली, तरी प्रत्येक मुलासाठी २६ आठवड्यांची प्रसूती रजा मिळेल.

दोन पेक्षा जास्त मुलांना जन्म देणाऱ्या कुटुंबांना पैशांव्यतिरिक्त तिसऱ्या मुलासाठी ५ वर्षांपर्यंत दरमहा एक हजार रुपये पोषण भत्ता, तिसऱ्या मुलासाठी १८ वर्षांपर्यंत मोफत शिक्षण, वडिलांस अनिवार्य दोन महिन्यांची पितृत्व रजा आणि प्रसंगी १२ महिन्यांपर्यंत सुट्टी. मुल जन्माला घालण्यात अडचणी असणाऱ्या जोडप्यांसाठी राज्य-समर्थित फर्टिलिटी क्लिनिक्स अशा इतर अनेक सुविधाही मिळतील.

पैसे देणारे पहिलेच राज्य

भारतात मुलाच्या तुलनेत मुलींची संख्या कमी झाल्याने ती वाढावी, यासाठी अनेक राज्यांत योजना सुरू आहेत. यात अर्थसाहाय्याचाही समावेश आहे. मात्र त्या गर्भवती महिला किंवा स्तनदा मातांसाठी मदतीसाठी आहेत. तिसऱ्या, चौथ्या मुलाला जन्माला घालण्यासाठी पैसे देणारे आंध्र प्रदेश हे पहिलेच राज्य ठरणार आहे.

देशाच्या धोरणाला छेद

वरकरणी हे समर्थन योग्य वाटत असले, तरी प्रत्यक्षात ’हम दो हमारे दो’ या देशाच्या धोरणाला छेद देणारा हा निर्णय आहे. जादा मुलांचे संगोपन, शिक्षण, आरोग्य, रोजगार यांसाठी लागणाऱ्या सुविधा उपलब्ध आहेत का ? हा खरा प्रश्न आहे.

महागाई, आरोग्य आणि शिक्षणाचा वाढता खर्च पाहता एक किंवा दोन मुलेच बस, अशी मानसिकता बहुतांशी कुटुंबांची आहे. विशेषत: साक्षर आणि नोकरदार महिला याबाबत अधिक आग्रही दिसतात.

या धोरणात महिलांच्या मानसिकतेचा, आरोग्याचा, त्यांना होणाऱ्या त्रासाचा विचार केला जाणार आहे का?, हे पाहणेही महत्त्वाचे ठरणार आहे.

Last Day To Join Private Channel.
Closing entry for new members Now.

♦ **Indian Newspaper**

1) Times of India
2) The Hindu
3) Business line
4) The Indian Express
5) Economic Times
And more Newspapers

♦ **InternationalNewspapers channel**

[Europian, American, Gulf & Asia]

♦ **Magazine Channel**

National & International

[Genaral & Exam related]

♦ **English Editorials**

[National + InternationalEditorials]

Click here to join

♦ Lifetime validity at just 19 Rupees 📍

Trust me... this will be your best purchase of 2026

रसरंग

दैनिक भास्कर

नई दिल्ली, रविवार, 31 मई 2026 | 08

rasrang@dbcorp.in

अब आप रसरंग के सभी आर्टिकल DB एप पर हर रविवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें DB एप

21.1° C

दर्ज किया गया जून 2024 में वैश्विक समुद्री सतह का तापमान, यूरोपीय यूनियन की 'कोपरनिकस क्लाइमेट सर्विस' के अनुसार। यह अब तक का रिकॉर्ड है।

TIME

दैनिक भास्कर से विशेष अनुबंध के तहत

अंटार्कटिका से उठ रहा नया खतरा...

समंदर की गर्मी से भारत में बढ़ी उमस!

धरती की बढ़ती गर्मी और उबलते समुद्रों का ऐसा विनाशकारी दुष्चक्र शुरू हो गया है, जो भारत समेत पूरी दुनिया को भयावह आंधी-तूफानों, अनियंत्रित मानसून और जानलेवा उमस के चक्रव्यूह में धकेल रहा है।

कवर स्टोरी

शिमोन शाह

पर्यावरण संवाददाता, टाइम

अंटार्कटिका को हम अक्सर सुदूर, निर्जन एवं रहस्यमयी दुनिया के रूप में देखते हैं और यह मान लेते हैं कि इसका हमारी जिंदगी से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन इस शांत नजर आते सफेद रेगिस्तान के नीचे गहरे समंदर में एक ऐसी हलचल शुरू हो चुकी है जो पूरी मानव सभ्यता के भविष्य को संकट में डाल सकती है। 'कम्युनिकेशंस अर्थ एंड एनवायरनमेंट' जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन में वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि अंटार्कटिका के गहरे पानी में छिपी गर्म लहरें (जिन्हें वैज्ञानिक भाषा में 'सर्कमपोलर डीप वॉटर' कहते हैं) तेजी से फैलती जा रही हैं और महाद्वीप की विशालकाय बर्फ की परतों की तरफ बढ़ रही हैं।

असल में, हमारा समुद्र ग्लोबल वार्मिंग से पैदा होने वाली अतिरिक्त गर्मी का लगभग 90 फीसदी हिस्सा खुद सोख लेता है और इसका भी एक बड़ा हिस्सा अंटार्कटिका को घेरने वाले दक्षिणी महासागर में जमा हो रहा है। यह गर्म पानी उन 'आइस शेल्व्स' (बर्फ की सुरक्षा दीवारों) को नीचे से खोखला कर रहा है, जो अंदरूनी ग्लेशियरों को पिघलने से रोकती हैं। अगर ये सुरक्षा दीवारें टूटीं, तो इसमें छिपा अथाह पानी समुद्र में बह जाएगा। वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर अंटार्कटिका के ये ग्लेशियर पूरी तरह पिघल गए तो समुद्र का जलस्तर 58 मीटर तक बढ़ सकता है। मौजूदा स्थिति में वैज्ञानिक इस आशंका से इनकार भी नहीं कर रहे। यह स्थिति मुंबई, न्यूयॉर्क, टोक्यो और लंदन जैसे दुनिया के दर्जनों शहरों को इतिहास के पन्नों में समेटने के लिए काफी है। जैसा कि इस अध्ययन के सह-लेखक और कैंब्रिज यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर अली मशाएक कहते हैं, 'दक्षिणी महासागर में जो कुछ भी होता है, वह सिर्फ वहीं तक सीमित नहीं रहता। इसका असर दुनिया के अधिकांश लोगों पर होगा।'

दुनिया के लिए सबसे बड़ा डर क्या?

वैज्ञानिकों की सबसे बड़ी चिंता अटलांटिक मेरिडियोनल ओवरटर्निंग सर्कुलेशन (AMOC) नाम की समुद्री धाराओं की प्रणाली को लेकर है। यह समुद्र के भीतर चलने वाली विशाल कन्वेयर बेल्ट जैसी प्रणाली है, जो दुनिया के तापमान को संतुलित रखती है। अगर अंटार्कटिका और आर्कटिक की बर्फ तेजी से पिघलती रही तो मीठा पानी समुद्र में बढ़ेगा और यह प्रणाली कमजोर पड़ सकती है। जानते हैं कि यह प्रणाली क्या है, हमारे लिए क्यों जरूरी है और इसके नष्ट होने से क्या होगा?

प्रणाली : तापमान संतुलन में मददगार

ध्रुवों (अंटार्कटिका व आर्कटिक) का ठंडा-नमकीन पानी भारी होने के कारण समुद्र की गहराइयों में बैठता है। यह ठंडा पानी नीचे जाकर गर्म इलाकों की तरफ बढ़ता है और वहां के गर्म पानी को ऊपर की तरफ धकेलता है। इस तरह समुद्री पानी के तापमान में संतुलन के साथ पूरी धरती पर भी तापमान संतुलित बना रहता है।

समस्या : समुद्र में मिल रहा है फ्रेश वॉटर

ग्लेशियरों के पिघलने से भारी मात्रा में मीठा पानी (फ्रेश वॉटर) समुद्र में मिल रहा है। मीठा पानी खारे पानी की तुलना में हल्का होता है, इसलिए यह नीचे नहीं बैठ पाता। नतीजतन, समुद्र का यह प्राकृतिक कन्वेयर बेल्ट धीमा पड़ रहा है और इससे धरती के प्राकृतिक संतुलन को नुकसान पहुंच रहा है।

असर : भयावह ठंड, अस्त-व्यस्त मानसून

यदि यह सर्कुलेशन रुका तो गर्म धाराएं यूरोप तक नहीं पहुंच पाएंगी। नतीजतन, ब्रिटेन और यूरोप के कुछ हिस्सों में सर्दियों में तापमान 10 से 15 डिग्री तक गिर जाएगा। इसके अलावा, ट्रॉपिकल रेन बेल्ट भी खिसक जाएगी। इससे भारत और अफ्रीका में बारिश करवाने वाले मानसून का पैटर्न अस्त-व्यस्त हो सकता है।

नीतिगत स्तर पर सरकारों को करने होंगे ये 3 काम

अंटार्कटिका की बर्फ के पिघलने और समुद्र के उबलने की समस्या गंभीर तो है, मगर समाधान भी संभव है। लेकिन इसके लिए दुनियाभर की सरकारों को नीतिगत स्तर पर ये तीन बड़े कदम उठाने होंगे...

1. जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम करना

दुनिया ने वर्ष 2070 तक 'नेट-जीरो' (यानी जितनी ग्रीनहाउस गैसें वातावरण में छोड़ रहे हैं, उतनी ही मात्रा को वापस अवशोषित करना) बनाने का लक्ष्य तय किया है, लेकिन इसकी रफ्तार और बढ़ानी होगी। इसके लिए कोयले तथा पेट्रोलियम पदार्थों पर निर्भरता को बड़ी तेजी से कम करना होगा।

2. तटीय सुरक्षा तंत्र को मजबूत करना

तमाम तटीय शहरों जैसे कैलिफोर्निया, न्यूयॉर्क, लंदन, लिस्बन, मुंबई, चेन्नई जैसे शहरों के चारों ओर 'मैंग्रोव के जंगलों' का संरक्षण अनिवार्य करना होगा। गौरतलब है कि मैंग्रोव समुद्र से उठने वाले चक्रवातों के वेग को कम करने में प्राकृतिक ढाल का काम करते हैं। ये भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड भी सोखते हैं।

3. अर्बन प्लानिंग में बदलाव करना

शहरों को 'स्पंज सिटी' के रूप में विकसित करना होगा, ताकि कॉन्क्रीट के जंजाल के बीच भी जल निकायों और पार्कों को बचाया जा सके। इससे शहरों को हीट आईलैंड बनने से रोका जा सकेगा। शहरों में पैदा होने वाली गर्मी अंततः वैश्विक तापमान बढ़ाती है और उसी अतिरिक्त गर्मी को समुद्र सोखते हैं।

रसरंग नॉलेज

समुद्र के बदलते मिजाज से भारत पर भी जोखिम

समुद्र के पानी का गर्म होना भारत के लिए भी एक सीधे खतरे की तरह है, जिसे हम आज अपने चारों तरफ देख तो रहे हैं, लेकिन उसकी गंभीरता को अब भी पूरी तरह समझ नहीं पा रहे।

आंधी-तूफानों की बढ़ रही है तीव्रता

भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान के एक आकलन के अनुसार पिछले दो दशकों में अरब सागर के तापमान में लगभग 1.4° डिग्री से. तक की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। इस वजह से यहां से उठने वाले तूफानों की संख्या में 50 फीसदी तो इनकी तीव्रता में 20 से 40 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है।

क्लाउडबर्स्ट की घटनाओं में हो रही बढ़ोतरी

समुद्र के गर्म होने से मानसून का पारंपरिक ढर्रा बदल गया है। नमी बढ़ने से अब 'क्लाउडबर्स्ट' (बादल फटना) की घटनाएं बढ़ गई हैं। 'असेसमेंट ऑफ क्लाइमेट चेंज' की रिपोर्ट भी कहती है कि देश में अब बारिश के कुल दिनों की संख्या कम हो रही है, लेकिन कम दिनों में भीषण बारिश की घटनाएं बढ़ रही हैं।

असहनीय उमस ने सेहत पर बढ़ाया खतरा

समुद्र के तापमान में बढ़ोतरी से हवा में नमी यानी उमस भी खतरनाक स्तर तक पहुंच जाती है। उदाहरण के लिए, यदि तापमान 40 डि. से. हो और उमस 70-80% तक पहुंच जाए तो शरीर को 50 डि. से भी अधिक गर्मी महसूस हो सकती है। इससे डिहाइड्रेशन, चक्कर और हीट स्ट्रोक का खतरा कई गुना बढ़ सकता है।

हर हफ्ते खेलिए... भास्कर फैमिली क्विज

हर रविवार जीत सकते हैं 2100 रु. तक के उपहार ...

*इसमें भाग लेने के लिए यहां दिए गए **QR कोड** को स्कैन करें। वहां आपको मिलेंगे पांच सवाल।*

या आप **8770592563** नंबर पर QUIZ टाइप करके वॉट्सअप भी भेज सकते हैं। इस पर मिले लिंक को ओपन करके दीजिए सवालों के जवाब। **पांचों सवालों के सही जवाब देकर आप बन सकते हैं लकी विनर और जीत सकते हैं 2100 रु. तक के उपहार।**

भास्कर फैमिली क्विज- 184 के सवाल

1. **भगवान जगन्नाथ निम्नलिखित में से किस स्थान से संबंधित हैं?**
(A) भुवनेश्वर (B) उज्जैन
(C) हैदराबाद (D) पुरी

2. **इनमें से किन्हें 'देशबंधु' भी कहा जाता था?**
(A) चित्तरंजन दास (B) रवीन्द्रनाथ टैगोर
(C) बिपिन चन्द्र पाल (D) लाला लाजपत राय

3. **उपन्यास 'एक सड़क सत्तावन गलियां' के लेखक इनमें से कौन हैं?**
(A) काशी नाथ सिंह (B) यशपाल
(C) कमलेश्वर (D) राजेंद्र यादव

4. **इनमें से किस शहर को अक्सर मायानगरी के नाम से भी जाना जाता है?**
(A) कोलकाता (B) जयपुर
(C) मुंबई (D) चेन्नई

5. **पंचेश्वर बांध इनमें से किस नदी के ऊपर प्रस्तावित है?**
(A) गंगा नदी (B) यमुना
(C) महाकाली नदी (D) नर्मदा

भास्कर फैमिली क्विज- 183 के सही जवाब

प्रश्न 1 - सही जवाब : (C) सारनाथ, **प्रश्न 2:** (C) सोवियत संघ, **प्रश्न 3:** (C) फिरदौसी , **प्रश्न 4:** (D) टेलीफोन, **प्रश्न 5:** (D) कुंचिकल जलप्रपात।

... और 10 लकी विनर्स

अक्षिश सावले (XXXXX30519)
अर्चना शुक्ला (XXXXX38477)
अशोक गौर (XXXXX81739)
कृष्णा भार्गव (XXXXX53187)
माधव सेष्टा (XXXXX14609)
नीलम रानी (XXXXX53155)
प्रमोद कुमार (XXXXX79561)
प्रत्युश वर्मा (XXXXX22020)
प्रवीण अवस्थी (XXXXX92400)
राकेश कुमार (XXXXX36327)।

(लकी विनर्स से **दैनिक भास्कर** की टीम संपर्क करेगी।)

बोनालु : तेलंगाना का यह त्योहार किस बात की याद दिलाता है?

मायथोलॉजी

देवदत्त पट्टनायक

तेलुगु भाषी क्षेत्र पर जारी इस शृंखला के अंतिम लेख में हम इस क्षेत्र पर इस्लाम के प्रभाव के बारे में जानेंगे।

14वीं सदी में दिल्ली सल्तनत के दक्षिण भारत पहुंचने के बाद सूफी धर्म-प्रचारक भी यहां आए। इसी काल में विजयनगर साम्राज्य ने बहमनी सुल्तानों का विरोध किया। कपास महामार्गों पर नियंत्रण पाने के लिए दोनों के बीच संघर्ष हुआ। विजयनगर साम्राज्य कर्नाटक में केंद्रित था और उसके राजा प्रारंभ में शिव के विरूपाक्ष रूप की पूजा करते थे, जिनका मंदिर विजयनगर में स्थित था। लेकिन 16वीं सदी में जब दक्कन के सुल्तानों ने मिलकर विजयनगर को लूटा, तब विजयनगर के राजाओं को अपनी राजधानी दक्षिण की ओर स्थानांतरित करनी पड़ी। तभी से वे तिरुपति स्थित वेंकटेश्वर बालाजी की भी पूजा करने लगे। इसका उल्लेख सरकारी दस्तावेजों में मिलता है।

इसी समय से तेलंगाना पर मुसलमान शासकों का प्रभाव बढ़ने लगा। 14वीं सदी में बहमनी सुल्तानों का, 16वीं सदी से कुतुबशाही सुल्तानों का और 18वीं सदी से निजामों का वहां शासन रहा। ये सभी गोलकोंडा की खदानों से मिले हीरों के कारण अत्यंत समृद्ध बने। ये खदानें इतनी प्रसिद्ध थीं कि अरब की लोककथाओं में जिस सिंदबाद नामक नाविक का उल्लेख मिलता है, वह भी हीरों की खोज में भारत आया था।

आंध्र प्रदेश के तिरुपति बालाजी के मुकुट को भी गोलकोंडा के हीरों से सजाया गया। मान्यता है कि जब भृगु ऋषि विष्णु से मिलने वैकुंठ पहुंचे, तब उन्होंने विष्णु को शयन करते हुए पाया। इससे अपमानित होकर उन्होंने विष्णु के सीने पर लात मारी। विष्णु ने विरोध करने के बजाय उलटा भृगु ऋषि से क्षमा मांगी। यह देखकर लक्ष्मी क्रोधित हो गईं और धरती पर चली आईं। विष्णु भी उनके पीछे-पीछे पृथ्वी पर आए। तिरुमलई के सात पहाड़ों को देखकर उन्हें आदि शेष के फणों की याद आई और इसलिए वे वहीं बालाजी के रूप में वास करने लगे।

तिरुपति में रहने के लिए बालाजी को वहां की राजकुमारी पद्मावती से विवाह करना पड़ा, जिसके लिए उन्होंने कुबेर से ऋण लिया। मान्यता है कि बालाजी अपने श्रद्धालुओं की सहायता से यह ऋण चुकाते हैं। ऐसा विश्वास है कि जो श्रद्धालु उन्हें सोना और अपने केश दान करते हैं, वे भाग्यशाली बनते हैं। इसी मान्यता और विजयनगर राजाओं के संरक्षण के कारण तिरुपति बालाजी मंदिर कालांतर में भारत का सबसे समृद्ध मंदिर बन गया।

तेलंगाना में हिंदू धर्म का इतिहास कुतुबशाही सुल्तानों के दरबारियों मदन्ना और अक्कन्ना के उल्लेख के बिना अधूरा है। हालांकि दोनों भाई गैर-मुसलमान प्रजा से जजिया कर वसूलते थे, लेकिन उन्होंने बड़ी समझदारी से उस कर का उपयोग संपूर्ण प्रजा के लिए सुविधाएं निर्मित करने में किया। इससे उनकी लोकप्रियता बढ़ी। उसी समय रूढ़िवादी मुसलमान अपने सुल्तान के गैर-मुसलमानों के प्रति उदार रवैये से नाराज भी थे। इसलिए उन्होंने औरंगजेब को उनके राज्य पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया। शांति बनाए रखने के लिए मदन्ना और अक्कन्ना मुगल बादशाह को शुल्क देने के लिए तैयार हो गए, लेकिन औरंगजेब संपूर्ण भारत पर राज करना चाहता था। इसलिए दोनों भाइयों का शिरच्छेदन कर दिया गया और उनकी कहानी देशभर में प्रसिद्ध हो गई।

उनके भांजे गोपन्ना श्री वैष्णव पंथ के एक विख्यात भक्त कवि थे, जिन्होंने भद्राचलम में सीता रामचंद्रस्वामी मंदिर के निर्माण में सहायता की। अपने मामाओं की तरह वे भी कुतुबशाही राज्य में अधिकारी थे। जब उन्होंने राज्य के धन से राम मंदिर की मरम्मत करवाई, तब उन पर धन के दुरुपयोग का आरोप लगाकर उन्हें बंदी बना लिया गया। इसी दौरान औरंगजेब ने तेलंगाना पर आक्रमण किया। जब कुतुबशाही सुल्तानों को पता चला कि गोपन्ना को बंदी बनाए जाने से औरंगजेब उनसे नाराज है, तब उन्होंने गोपन्ना को मुक्त कर दिया। शांति बनाए रखने के लिए हैदराबाद के राजा द्वारा भद्राचलम मंदिर को मोती भेजने की परंपरा शुरू हुई।

तेलंगाना में हर साल मनाए जाने वाले 'बोनालु' त्योहार में कलश यात्रा निकालतीं महिलाएं।

तेलंगाना में वर्षाऋतु की शुरुआत से पहले मनाया जाने वाला बोनालु त्योहार अत्यंत लोकप्रिय है। 'बोनालु' शब्द भोग के लिए प्रयुक्त तेलुगु शब्द से बना है। इस त्योहार में महिलाएं लंबी शोभायात्राओं में मैसम्मा, पोचम्मा, येल्लम्मा और पेद्दम्मा जैसी काली देवी के क्षेत्रीय रूपों के मंदिरों तक सिर पर भोजन से भरे मटके लेकर जाती हैं।

इस अनुष्ठान के माध्यम से देवियों को शांत किया जाता है, ताकि भूमि बीमारियों से सुरक्षित रह सके। मान्यता है कि इन महिलाओं के शरीर में देवी की आत्मा प्रवेश करती है और देवी का भाई तथा रक्षक माने जाने वाले जंगली पोट-राजू उन्हें देवी तक मार्ग दिखाते हैं। यह परंपरा हमें इस भूमि के प्राचीन और देशज विश्वासों की याद दिलाती है। ये बुनियादी विश्वास आज भले ही गौण समझे जाते हों, लेकिन इस्लाम, जैन और बौद्ध धर्म तथा ब्राह्मणों के आगमन से पहले यही यहां की प्रमुख आस्थाएं थीं।

• devdutthindi@gmail.com

इस कॉलम को मोबाइल पर सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

'कॉमनवेल्थ शॉर्ट स्टोरी' की विजेता कहानी पर एआई विवाद के मायने!

हिन्दवी से

मयंक जैन परिच्छा

कॉमनवेल्थ शॉर्ट स्टोरी प्राइज, 2026 की कैरेबियाई क्षेत्रीय विजेता कहानी 'द सर्पेंट इन द ग्रोव' चर्चा में है। चर्चा की वजह वह आरोप है, जिसके अनुसार कहानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की मदद से लिखी गई है। कॉमनवेल्थ फाउंडेशन इन आरोपों की जांच कर रहा है। इस कहानी के कैरेबियाई मूल के 61 वर्षीय लेखक जमीर नजीर ने इस लेख के लिखे जाने तक कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं की है।

इस कहानी को इसके रूपकों तथा गद्य और पद्य के 'सुंदर' प्रयोग के लिए सराहा गया। लेकिन कहानी में एआई के इस्तेमाल की बात ने साहित्यिक हलकों में हलचल मचा दी है, क्योंकि इससे कई सवाल खड़े होते हैं। पहला सवाल यही है कि एआई के उपयोग के बाद भी कोई कहानी इतने प्रतिष्ठित पुरस्कार को जीतने में कैसे सफल रही? क्या संपादक मंडल को जरा भी संदेह नहीं हुआ? कई लोगों का मानना है कि इन पुरस्कारों की औपनिवेशिक प्रवृत्ति, जिसमें एक खास किस्म के ढांचे या लेखन-शैली की तलाश की जाती है, की पूर्ति एआई-लिखित कहानियां आसानी से कर सकती हैं। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि यह पूरा विवाद ही व्यर्थ है, क्योंकि सात हजार से अधिक प्रविष्टियां बिना मशीनी सहायता के कैसे पढ़ी जा सकती हैं!

एक और बात यह कि जमीर की कहानी में 'द गर्ल स्माइल्ड लाइक सनराइज ओवर ए सिंक' जैसे बेतुके रूपकों का उपयोग किया गया है, जिन्हें संपादकों को पहचानना चाहिए था। लेकिन इससे भी अधिक अहम सवाल यह है कि क्या हमारे पास ऐसे पर्याप्त व विश्वसनीय उपकरण हैं, जिनसे हम एआई की सही जांच कर सकें? इंटरनेट पर उपलब्ध एआई डिटेक्शन टूल्स में यदि कोई मौलिक रचना भी डाली जाए तो कई बार उसे भी एआई-जनित बता दिया जाता है। यह इन टूल्स की विश्वसनीयता पर भी प्रश्न खड़े करता है।

एआई का उपयोग हम सब कर रहे हैं और इसका इस्तेमाल आगे और बढ़ेगा ही। तो क्या हम एआई को अपनी भाषा में आने से रोक पाएंगे? कई खबरें आती हैं कि लोग जानबूझकर अपने लेखन में गलतियां छोड़ रहे हैं, ताकि उनके संपादक उसे एआई से लिखा हुआ न ठहराएं। किसी लेखक के लिए उसके लेखन में एआई के इस्तेमाल का आरोप काफी गंभीर होता है। उदाहरण के तौर पर, हाल ही में पोलैंड की लेखिका और 2018 की नोबेल पुरस्कार विजेता ओल्गा तोकार्चुक ने एक साक्षात्कार में कहा कि उन्होंने अपने शोध के लिए एआई का उपयोग किया है। यह बात इतनी चर्चा में आ गई कि उन्हें सफाई देते हुए कहना पड़ा, 'मेरे किसी भी लेखन, यहां तक कि वह उपन्यास भी, जो इस पतझड़ में पोलिश भाषा में प्रकाशित होगा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से नहीं लिखा गया है। हां, शुरुआती शोध को तेज करने के लिए उसका एक औजार की तरह इस्तेमाल किया गया था।'

क्या शोध के लिए एआई का इस्तेमाल करना गलत है? अगर है, तो एक लेखक के तौर पर कई लोग इसका उपयोग बंद कर सकते हैं। लेकिन आगे की पीढ़ी को कैसे रोकेंगे? एआई साहित्य में आएगा ही, चाहे हम इसे आज स्वीकार करें या कल। इसके लिए हमें मानक बनाने होंगे।

अगर एक बच्चे के नजरिये से सोचें तो आज स्कूल और कॉलेज हर जगह एआई का उपयोग बढ़ रहा है। अगर वही बच्चा आगे चलकर साहित्यकार बनता है या लेखन करता है, तो क्या उसकी भाषा में आर्टिफिशियल भाषा के तत्व नहीं होंगे? हो सकता है कि वह जानबूझकर उन तत्वों का उपयोग न करे, लेकिन काफी संभावना है कि उसकी भाषा में एआई के कुछ पैटर्न मौजूद हों, क्योंकि वह उसी तरह की भाषा को सुनते, पढ़ते और लिखते हुए बड़ा हुआ है।

हम एआई से दूर नहीं रह सकते और न ही उसे पूरी तरह नकार सकते हैं। जब हम अपने शोध या किसी अन्य कार्य के लिए एआई-जनित पाठ पढ़ेंगे, तो वे पैटर्न और भाषाई संरचनाएं हमारे वाक्यों में भी आ सकती हैं। ठीक वैसे ही, जैसे किसी अच्छे लेखक को पढ़ने के बाद उसकी भाषा का असर हमारी भाषा पर दिखाई देने लगता है।

एक और सवाल उन लोगों को लेकर है, जो अपनी कहानियों को संपादित करने के लिए एआई का उपयोग करते हैं। तो क्या यह भी गलत है? अगर किसी अच्छे संपादक की अनुपस्थिति में कोई अपनी रचना को एआई से संपादित करवा रहा है तो क्या इसे नैतिकता के स्तर पर गलत माना जाना चाहिए? और अगर नहीं तो इसकी सीमा क्या होनी चाहिए? क्या इस तरीके से संपादित लेख या कहानी एआई-जनित मानी जाएगी? हमें ऐसे सभी सवालों के जवाब ढूंढ़ने होंगे।

कई लेखक मानते हैं कि एआई हमेशा औसत दर्जे की कहानी या लेख ही लिख सकता है और वह कभी भी मानव लेखक का स्थान नहीं ले पाएगा। फिर भी हमारे सामने कई जटिल सवाल हैं, जिनके उत्तर हमें देने होंगे। बड़े प्रकाशक और विश्वविद्यालय इस पर विचार कर रहे हैं तथा एआई के उपयोग को समझने की कोशिश कर रहे हैं। लेखक समुदाय को भी इस विषय पर साझा समझ विकसित करनी होगी और आवश्यक मानक तय करने होंगे।

• हिन्दवी के साथ विशेष अनुबंध के तहत।

'नमक हलाल' जैसी कुछ फिल्मों से हटाए जाने के बाद भी एक्टर ने नहीं मानी थी हार

जब एडिटिंग रूम बना था राज बब्बर का घर

मेरे हिस्से के किस्से

रूमी जाफरी

पिछले हफ्ते इस कॉलम में मैंने राज बब्बर की बात की थी। मैंने बताया था कि फिल्म 'मुकद्दर का सिकंदर' के प्रीमियर के लिए दिल्ली आए प्रकाश मेहरा साहब ने कैसे राज भाई को मुंबई बुलवा लिया था। अब पढ़िए आगे का किस्सा।

मुंबई पहुंचकर राज बब्बर दिए गए पते पर पहुंचे। वह जुहू में एक शानदार होटल था, जिसका नाम था किंग्स होटल। नीचे प्रकाश मेहरा जी का ऑफिस था। बकौल राज भाई, मैं कार से उतरा और होटल को देखकर सोचा कि प्रकाश जी मुझे इसी होटल में ठहराएंगे। प्रकाश जी ने बताया, 'मैं नमक हलाल फिल्म शुरू कर रहा हूं। इसमें विनोद खन्ना को ले रहा था, लेकिन वो संन्यास लेकर ओशो के आश्रम जा रहे हैं। इसलिए वो रोल मैं तुम्हें देना चाहता हूं।' मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। लेकिन मैंने फिर पूछा, 'मेरे रहने का इंतजाम कहां है?' उन्होंने कहा, 'यहीं किया है।' और अपने आदमी से बोले, 'इन्हें इनका कमरा दिखा दो।' वो आदमी मुझे एडिटिंग रूम में ले गया। वह एक छोटा सा कमरा था। उसने कहा, 'यहीं तुम्हारे रहने का इंतजाम किया है।'

एडिटिंग रूम को देखकर राज साहब के होटल के भव्य कमरे वाली उम्मीद तो टूट गई, लेकिन फिर भी वे खुश थे कि इतनी बड़ी फिल्म के साथ-साथ उन्हें मुम्बई में रहने की जगह मिल गई थी। उन्हें लगा कि यहां से वे अपना रास्ता खुद बना लेंगे। मगर ऊपरवाले ने शायद तय कर रखा था कि राज बब्बर को सफलता इतनी आसानी से नहीं देनी है। राज भाई बताते हैं, एक दिन प्रकाश जी ने मुझे बुलाया और कहा कि वे किसी कारण से उन्हें 'नमक हलाल' में नहीं ले पाएंगे। उनकी बात सुनकर मुझे बुरा तो जरूर लगा, लेकिन मैं निराश नहीं हुआ। जब प्रकाश जी ने मुझे फिल्म से हटाने की बात कही, तब मैंने उनसे सिर्फ इतना कहा, 'ठीक है, लेकिन आपसे एक रिक्वेस्ट है। भले ही मुझे फिल्म से निकाल दीजिए, मगर इस कमरे से मत निकालिए। मैं 1 जनवरी को यहां आया था और अगली 1 जनवरी को यह कमरा खाली कर दूंगा।' इसके लिए वे राजी हो गए।

इसी बात पर निदा फ़ाज़ली का एक शेर याद आ रहा है :

कोशिश भी कर उमीद भी रख रास्ता भी चुन
फिर इसके ब'अद थोड़ा मुक़द्दर तलाश कर।

इसके बाद फिर संघर्ष शुरू हुआ। छोटी-छोटी फिल्मों में छोटे-मोटे रोल करने शुरू कर दिए। उससे थोड़ी बहुत आमदनी भी होने लगी। एक बार बी.आर. चोपड़ा साहब ने मुझे बुलाया और कहा, 'मैं जीनत अमान को लेकर एक फिल्म बना रहा हूं।' फिर उन्होंने मुझे कहानी सुनानी शुरू की। कहानी सुनते-सुनते एक एक्टर के तौर पर मेरा ध्यान उसी किरदार की तरफ जा रहा था, जो नेगेटिव रोल में था। मन में यही आ रहा था कि अगर 'रमेश' का रोल मिल जाए तो मजा आ जाए। नरेशन खत्म होने के बाद चोपड़ा साहब ने मुझसे वही रोल करने को कहा, जो मैं करना चाहता था। इस तरह मुझे 'इंसाफ का तराजू' मिली।

राज भाई ने मुझे 'इंसाफ का तराजू' फिल्म का भी एक किस्सा सुनाया था। बकौल राज भाई, मैं दिल्ली में फैमिली के साथ फिल्म देखने गया। उसमें रेप वाले सीन को देखकर पब्लिक ने मुझे इतनी गालियां देनी शुरू कर दी कि मां की आंखों में आंसू आ गए। इस पर मां ने मुझसे कहा, 'बेटा, हम दो रोटी कम खा लेंगे, लेकिन तुम पैसे कमाने के लिए ऐसा काम मत करो।' लेकिन एक एक्टर के तौर पर मुझे उसमें कोई बुराई नजर नहीं आई, क्योंकि इससे यह तो पता चल रहा था कि मैं अपनी परफॉर्मेंस में कामयाब हो गया था।

उसके बाद आई 31 दिसंबर 1979 की रात, यानी 1980 की पहली जनवरी। प्रकाश मेहरा साहब ने अपने बंगले पर पार्टी रखी थी। राज भाई को भी बुलाया गया। पार्टी के बाद राज भाई ने जेब से चाबी निकाली और शुक्रिया अदा करते हुए उनसे कहा, 'मैंने आपसे वादा किया था कि एक साल बाद एक जनवरी को आपका कमरा खाली कर दूंगा। यह रही आपके कमरे की चाबी।' राजेंद्र कुमार के भाई वीरेंद्र कुमार ने उन्हें अपनी फिल्म में साइन किया था और रहने के लिए फ्लैट भी दे दिया था। इसलिए राज भाई पहली तारीख से वहां शिफ्ट हो गए। फिर उनके

'प्रेम गीत' के गाने 'होंठों से छू लो तुम..' के दृश्य में राज बब्बर।

कॅरियर की गाड़ी ऐसी चली कि दोबारा कभी रुकी नहीं।

अब इससे जुड़ा इत्तेफाक भी सुनिए। कुछ दिन पहले मेरे दोस्त अशोक पंडित की बर्थडे पार्टी थी। पार्टी जुहू के एक बड़े रेस्टॉरेंट और पब में रखी गई थी। जब मैं वहां पहुंचा और गाड़ी पार्क की तो हैरान रह गया। यह किंग्स होटल के नीचे प्रकाश मेहरा के ऑफिस वाली जगह थी, जहां अब रेस्टॉरेंट और पब बन चुका था। मैं अंदर गया और राजपाल यादव को यह किस्सा सुनाया। तभी आमिर खान आ गए। मैंने उन्हें भी बताया कि यह वही जगह है, जहां से मुकद्दर का सिकंदर, लावारिस जैसी फिल्में बनी हैं। फिर मैंने उन्हें राज भाई वाला पूरा किस्सा सुनाया। आमिर को इस पर यकीन ही नहीं हुआ। तभी संयोग से राज बब्बर अपनी बेटी जूही और दामाद अनूप के साथ वहां पहुंच गए। फिर राज भाई ने खुद कहा, 'रूमी ने जो किस्सा सुनाया, वह बिल्कुल सच है।'

आज राज भाई को याद करते हुए उनकी फिल्म 'प्रेम गीत' का यह गीत सुनिए, अपना ख्याल रखिए और खुश रहिए :

'होंठों से छू लो तुम, मेरा गीत अमर कर दो...'

rumyjafrywrites@gmail.com

लेखक-प्रकाशक के पास सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी हिस्से को ना तो पुनः प्रकाशित किया जा सकता है, ना व्यावसायिक इस्तेमाल किया जा सकता है। इस कॉलम को मोबाइल पर सुनने के लिए QR कोड को स्कैन करें।

कच्चे केले के ट्विस्ट के साथ बनाएं शाही मलाई कोफ्ता

रीडर रेसिपी कॉन्टेस्ट

रिम्पी अग्रवाल
हांसी (हरियाणा)

भेजिए रेसिपी और जीतिए
5,100 रु. का गिफ्ट

दैनिक भास्कर के इस कॉलम में आप भी अपनी रेसिपी भेजकर हर सप्ताह जीत सकते हैं **5,100 रु.** मूल्य का गिफ्ट। इसके लिए **QR कोड** को स्कैन कीजिए और लिख भेजिए अपनी रेसिपी। साथ में नाम, प्रोफेशन, फोटो, डिश की तस्वीर जरूर भेजें।

अगर आप रोज-रोज वही पारंपरिक सब्जियां खाकर ऊब गए हैं तो इस बार कच्चे केले के शाही मलाई कोफ्ते जरूर ट्राय करें। कच्चे केले और पनीर से तैयार नरम कोफ्ते मुंह में जाते ही घुल जाते हैं, जबकि काजू, टमाटर और मलाई से बनी क्रीमी ग्रेवी इसका स्वाद कई गुना बढ़ा देती है।

बनाने की सामग्री :

कोफ्ते के लिए: 3 कच्चे केले, 50 ग्राम पनीर, कद्दूकस किया अदरक, बारीक कटी हरी मिर्च, हरा धनिया, 3-4 बड़े चम्मच बेसन, नमक, लाल मिर्च, गरम मसाला, तलने के लिए तेल। **ग्रेवी के लिए:** 2 प्याज, 2 टमाटर, 10 काजू, 1/2 कप दही, 2 बड़े चम्मच क्रीम, अदरक, हल्दी, धनिया पाउडर, लाल मिर्च, गरम मसाला, कसूरी मेथी और बटर।

बनाने की विधि :

- सबसे पहले कच्चे केलों को उबालकर छील लीजिए और अच्छी तरह मैश कर लीजिए। इसमें पनीर, अदरक, हरी मिर्च, हरा धनिया, नमक, गरम मसाला और बेसन मिलाकर मुलायम मिश्रण तैयार कर लीजिए। अब छोटे-छोटे गोल कोफ्ते बनाएं और गर्म तेल में धीमी आंच पर सुनहरा होने तक तल लीजिए।
- ग्रेवी बनाने के लिए काजू, टमाटर, प्याज और अदरक को हल्का भून लीजिए, फिर इन्हें पीसकर स्मूद पेस्ट तैयार करें। कड़ाही में बटर गर्म करें, उसमें मसाले भूनें और तैयार पेस्ट डालकर तब तक पकाएं, जब तक कि मसाला तेल न छोड़ने लगे।
- अब इसमें फेंटा हुआ दही और जरूरतानुसार पानी डालकर धीमी आंच पर गाढ़ी व मलाईदार ग्रेवी तैयार करें। आखिर में क्रीम और कसूरी मेथी मिलाकर दो मिनट और पकाएं।
- सर्व करने से ठीक पहले इन कोफ्तों को ग्रेवी में डालिए। अब ऊपर से क्रीम और हरे धनिये से सजाकर नान, रोटी या जीरा राइस के साथ गरमा-गरम परोसें।

तारे-सितारे
मनीष शर्मा

गुरु उच्च के होने जा रहे हैं, जो पूरे विश्व के लिए उत्तम रहेगा। व्यापार वृद्धि के साथ युद्ध की विभीषिका का अंत होगा। सेंसेक्स में उठाव होगा। कीमती धातुओं के दाम में वृद्धि होगी। मौसम अनुकूल रहेगा। रोगों में आराम मिलेगा। कुछ जगहों पर लोकतंत्र बाधित हो सकता है। मंगल की स्वराशि का गुरु पर दृष्टि होने से जनता के लिए कल्याणकारी कार्य होंगे।

मेष
अष्टम चंद्र रहेगा। आरंभ में कठिनाई आ सकती है। सोमवार से स्थितियों में सुधार होगा। मंगलवार को दिन अच्छा रहेगा। बुध एवं गुरुवार को काम अत्यधिक रहेंगे। शुक्र एवं शनिवार को सहयोग की प्राप्ति होगी। धन लाभ होगा।

वृषभ
चंद्र की दृष्टि से राहत प्राप्त होगी। सोमवार की दोपहर के बाद से समय प्रतिकूल होगा। मंगलवार को योजनाएं विफल होंगी। बुधवार को भी मन उदास रहेगा। गुरुवार अच्छा दिन रहेगा। शुक्र एवं शनिवार को आय में सुधार होगा।

मिथुन
षष्ठ चंद्र से समय सामान्य रहेगा। मन में उदासी रहेगी। सोमवार से शानदार समय का आरंभ होगा। मंगलवार को योजनाएं सफल होंगी। बुध एवं गुरुवार को कुछ समस्याएं आ सकती हैं। शुक्र एवं शनिवार से पुनः सुधार हो जाएगा।

कर्क
आरंभ अच्छा होगा। संतान से सुख प्राप्त होगा। सोम एवं मंगल को अज्ञात चिंता रहेगी। विरोधी हावी होने का प्रयास करेंगे। बुध एवं गुरुवार को सहयोग प्राप्त होगा। शुक्र भी अच्छा दिन रहेगा। शनिवार को व्यय की अधिकता होगी।

सिंह
चतुर्थ चंद्र से शुरुआत में आय में कमी रहेगी। सोमवार को सबकुछ ठीक होने लगेगा। मंगल-बुधवार से आय में सुधार होगा। गुरुवार अच्छा दिन बीतेगा। शुक्रवार एवं शनिवार को भाग्य का साथ मिलेगा। धार्मिक यात्रा का योग है।

कन्या
आरंभ अच्छा होगा, किंतु सोम एवं मंगलवार को कुछ चिंताएं बढ़ सकती हैं। बुधवार को संतान से सहयोग प्राप्त होगा। गुरु एवं शुक्रवार को योजनाएं सफल होंगी। शनिवार को परिवार के साथ रहने का मौका मिलेगा।

तुला
आवेश एवं कार्य की अधिकता रहेगी। सोमवार एवं मंगलवार को पराक्रम श्रेष्ठ रहेगा। बुध एवं गुरुवार को समस्याएं रह सकती हैं। शुक्रवार एवं शनिवार को संतान से सहयोग एवं सुख मिलेगा। समस्याओं का निदान होगा।

वृश्चिक
चंद्र राशि में है। आय के साथ खर्चे भी बने रहेंगे। आवश्यक सभी काम समय पर पूर्ण होंगे एवं भाग्य का साथ भी मिलेगा। बुधवार एवं गुरुवार को बड़े काम बनने के आसार हैं। शुक्रवार एवं शनिवार को पराक्रम श्रेष्ठ रहेगा।

धनु
द्वादश चंद्र आरंभ में परेशानी में डाल सकता है। सोमवार की शाम से आय में सुधार होगा। मंगलवार को मेहमानों का आगमन होगा। बुध एवं गुरुवार को परिवार में मांगलिक कार्य होंगे। शुक्र एवं शनिवार को कार्य में गति रहेगी।

मकर
एकादश चंद्रमा से आरंभ अच्छा होगा। सोम एवं मंगलवार को कुछ तकलीफ आ सकती है। बुध एवं गुरुवार से स्थितियों में पुनः सुधार होगा एवं योजनाएं सफल होंगी। शुक्र एवं शनिवार को किसी आयोजन में शामिल होंगे।

कुंभ
चंद्र की अनुकूलता रहेगी। आर्थिक आधार बढ़ेगा। सोम एवं मंगलवार को आनंद रहेगा। बुध एवं गुरुवार विचलित करने वाले दिन हो सकते हैं। कार्य की रूपरेखा बदलनी पड़ सकती है। शुक्रवार एवं शनिवार अच्छे दिन रहेंगे।

मीन
आरंभ में योजनाएं सफल होंगी। सोमवार एवं मंगलवार को भाई सहयोग प्रदान करेंगे। बुध एवं गुरुवार को व्यस्तता रहेगी। यात्रा पर जाने का योग है। शुक्र एवं शनिवार को सप्ताहांत में कोई चिंताजनक समाचार मिल सकता है।

मेरा पैसा

मैनेजमेंट गुरु
एन. रघुरामन

'पेपर रिच' नहीं 'कैश रिच' बनने की सोचें

मेरे परिवार में एक चाचा को बेहद सफल माना जाता था। उन्होंने दशकों पहले दूरदर्शिता दिखाते हुए तेजी से बढ़ते शहरों में कई प्रॉपर्टी खरीदीं। समय के साथ यह निवेश तेजी से बढ़ता गया। कागजों पर नेटवर्थ इतनी बड़ी दिखती थी कि परिवार में उन्हें कामयाबी का प्रतीक माना जाता था। लेकिन जिंदगी ने अचानक करवट ली। पहले उन्हें कैंसर जैसी गंभीर बीमारी हुई और फिर विदेश में रहने वाले भाई के सामने मेडिकल इमरजेंसी आ खड़ी हुई। अस्पतालों के भारी बिलों के लिए तुरंत नकदी चाहिए थी, लेकिन उनकी दौलत जमीन और प्रॉपर्टी में फंसी थी। मजबूरी में उन्हें कुछ प्रॉपर्टी औने-पौने दामों पर बेचनी पड़ी। तब समझ में आया कि सिर्फ कागजों पर अमीर दिखना और हाथ में जरूरत के समय नकदी होना, दोनों बातें अलग हैं। उनकी बड़ी संपत्ति मुश्किल वक्त में फौरन काम नहीं आ सकी।

कैश रिच बनने की सही रणनीति

मेरे चाचा के उलट सेना से रिटायर हुए मेरे दो दोस्तों ने बिल्कुल अलग रणनीति अपनाई। उन्होंने खाली प्लॉट या ऐसी संपत्तियों में पैसा लगाने के बजाय देहरादून और कर्जत में दो शानदार फार्महाउस बनाए। खुद उन्होंने दिल्ली और मुंबई जैसे बड़े शहरों में छोटे फ्लैट्स में सादगी से रहना चुना, लेकिन अपने फार्महाउस को बेहद लग्जरी तरीके से तैयार किया। वहां परमानेंट कुक, हाउसकीपिंग और बड़े पारिवारिक आयोजनों की सुविधाएं रखीं, ताकि लोग छुट्टियां और खास मौके वहां मना सकें।

सबसे अहम बात यह रही कि उन्होंने इन प्रॉपर्टी को सिर्फ निवेश बनाकर नहीं छोड़ा। दोनों ने अपने-अपने फार्महाउस एयरबीएनबी पर लिस्ट कर दिए। अब लोग जन्मदिन, सालगिरह और वीकेंड में छुट्टियां मनाने के लिए हर महीने करीब 25 दिन तक इन्हें बुक रखते हैं। बाकी के पांच दिन वह परिवार के साथ रहकर मजे करते हैं। मेहमानों को यहां फाइव-स्टार होटल जैसी सुविधाएं और घर जैसी प्राइवेसी मिलती है। आज जहां मेरे चाचा की कई जमीनें खरीदार का इंतजार कर रही हैं, वहीं इन फार्महाउस में हमेशा रौनक रहती है। इन रिटायर्ड फौजियों ने साबित कर दिया कि असली अमीरी सिर्फ संपत्ति जमा करने में नहीं, बल्कि उससे लगातार कमाई पैदा करने में है।

मैनेजमेंट टिप: सिर्फ संपत्तियां मत बटोरिए; अपनी संपत्तियों से काम लेना सीखिए। 'पेपर रिच' (कागजों पर अमीर) से 'कैश रिच' (नकदी से अमीर) बनने की रणनीति आपकी रुकी हुई पूंजी को जिंदगी भर के सुरक्षा कवच बना देती है।

बचत का फंडा | सैलरी दोगुनी होने पर भी क्यों खाली रह जाता है हाथ, जानिए वजह?

20+ की उम्र में आर्थिक गलतियों से बचें

मेरा पैसा टीम | 20 से 30 साल की उम्र में करिअर और लाइफस्टाइल संभालने के चक्कर में खर्चे बढ़ना लाजिमी है, लेकिन असल समस्या तब होती है जब इस दशक के अंत में आप महसूस करते हैं कि ज्यादा कमाने के बावजूद आपकी बचत शून्य है। यह स्थिति किसी एक बड़े गलत फैसले से नहीं, बल्कि अनजाने में रोज की आदतों में शामिल होने वाली गलतियों के कारण बनती है। इसलिए समय रहते इन अनजानी वित्तीय चूकों को पहचानना और आदतों को सुधारना बेहद जरूरी है।

निवेश में 8 साल की देरी करोड़ों का नुकसान करा सकती है...

1. लाइफस्टाइल: आमदनी-खर्चे रेश्यो देखें

सैलरी बढ़ने पर धीरे-धीरे सुख-सुविधाओं पर खर्च बढ़ाना एक ऐसा जाल है जो गलती नहीं लगता। महंगे रेस्तरां, वेकेशन और कैब जैसे छोटे-छोटे खर्च कब आदत बन जाते हैं, पता नहीं चलता।

- **नतीजा:** आपकी आमदनी दोगुनी होने पर भी बचत जस की तस (शून्य) बनी रहती है।
- **समाधान:** आपको अपनी जिंदगी का आनंद लेना बंद करने की जरूरत नहीं है। बस यह ध्यान रखें कि जब भी आपकी इनकम बढ़े, उसी अनुपात में आपकी सेविंग्स भी बढ़नी चाहिए। हर इंक्रीमेंट का एक छोटा हिस्सा (20-30%) भी इन्वेस्ट करने से लॉन्ग टर्म में बहुत बड़ा फायदा होता है।

2. निवेश शुरू करने में आनाकानी करना

20 के दशक में लोगों को लगता है कि वे तब निवेश शुरू करेंगे जब लाइफ सेटल हो जाएगी या सैलरी बड़ी हो जाएगी। लेकिन निवेश का नियम यह है कि यह आपके पैसे से ज्यादा 'समय' को रिवॉर्ड करता है।

- **केस 1:** यदि 22 साल की उम्र में 5,000/माह की एसआईपी शुरू करते हैं। सालाना 12% रिटर्न पाते हैं तो 60 साल की उम्र तक फंड 4.67 करोड़ बन सकता है।
- **केस 2:** अगर 5,000 की एसआईपी 30 की उम्र में शुरू करते हैं, तो 60 की उम्र में फंड सिर्फ 1.77 करोड़ रह जाएगा।
- **नतीजा:** 8 साल की देरी से लगभग 2.9 करोड़ का घाटा।

3. क्रेडिट कार्ड को 'एक्स्ट्रा इनकम' समझना

क्रेडिट कार्ड जिम्मेदारी से इस्तेमाल किया जाए, तो शानदार टूल है। दिक्कत तब शुरू होती है जब आप असली इनकम के बजाय क्रेडिट कार्ड की 'लिमिट' को देखकर खर्च करने लगते हैं। समस्या तब होती है जब आप हर महीने सिर्फ न्यूनतम देय राशि चुकाते हैं और उस पर सालाना ब्याज 55% तक हो सकता है। अगर 10,000 का खर्च समय पर न चुकाया जाए, तो वह महज 6 महीने में बढ़कर 13,000 से ज्यादा हो सकता है।

- **सलाह:** क्रेडिट कार्ड के जाल से बचने के लिए सबसे पहले एक छोटा सा इमरजेंसी फंड बनाएं, ताकि अचानक जरूरत पड़ने पर आपको कर्ज या क्रेडिट कार्ड पर निर्भर न रहना पड़े।

4. बिना प्लान के 'हॉट ट्रेंड्स' के पीछे भागना

हर दौर में क्रिप्टो या सेक्टोरल फंड्स जैसे कुछ एसेट रातों-रात अमीर बनाने का दावा करते हैं। लोग अक्सर बिना किसी वित्तीय लक्ष्य के इनमें पैसा लगा देते हैं। मार्केट में गिरावट आते ही पैनिक होकर घाटा बुक कर लेते हैं। आईटी सेक्टर में आई हालिया 15% की गिरावट यह साबित करती है कि मजबूत और लोकप्रिय ट्रेंड्स भी कभी भी नीचे गिर सकते हैं।

- **समाधान:** निवेश से पहले खुद से दो सवाल जरूर पूछें:
- यह पैसा मैं किस लक्ष्य के लिए लगा रहा हूं?
- मुझे इस पैसे की जरूरत कब होगी?

5. इंश्योरेंस को इन्वेस्टमेंट समझने की गलती करना

20 से 30 की उम्र में लोग अक्सर बहकावे में आकर यूलिप या एंडोमेंट जैसे मिक्स प्लान खरीद लेते हैं, जो बीमा और निवेश दोनों का वादा करते हैं। हकीकत में, ये प्रोडक्ट दोनों ही काम ठीक से नहीं कर पाते, इनमें जीवन बीमा का कवर भी बहुत कम होता है और भारी चार्ज कटने के कारण मैच्योरिटी पर मिलने वाला रिटर्न भी बेहद निराशाजनक होता है।

- **फाइनेंशियल एक्सपर्ट्स का नियम:** आपकी लाइफ इंश्योरेंस का कवर आपकी सालाना आमदनी का कम से कम 10 गुना होना चाहिए। यानी अगर आप साल का 10 लाख कमाते हैं, तो आपके पास 1 करोड़ का लाइफ कवर होना चाहिए।
- **गोल्डन रूल:** इंश्योरेंस और इन्वेस्टमेंट को हमेशा अलग-अलग रखें। सुरक्षा के लिए टर्म इंश्योरेंस खरीदें और वेल्थ क्रिएशन के लिए अलग से म्यूचुअल फंड या अन्य साधनों में इन्वेस्ट करें।

एक्सपर्ट टिप | आप निवेश की शुरुआत जितना जल्दी करेंगे, आपकी नींव उतनी मजबूत होगी। जब भी कमाई बढ़े तो निवेश बढ़ाएं। आप बड़ी सैलरी या सही समय का इंतजार न करें; निवेश में 'समय' ही सबसे बड़ी ताकत है। सुरक्षा के लिए सिर्फ टर्म इंश्योरेंस लें और वेल्थ क्रिएशन के लिए म्यूचुअल फंड में निवेश करें।

म्यूचुअल फंड: एसआईपी डेट बदलने से रिटर्न पर क्या असर होता है? जानिए 30 साल के आंकड़े

मुंबई| म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले अक्सर सोचते हैं कि महीने की किस तारीख को एसआईपी (सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) करने से सबसे ज्यादा रिटर्न मिलेगा। व्हाइटओक म्यूचुअल फंड के एक हालिया विश्लेषण ने इस दुविधा को हमेशा के लिए दूर कर दिया है। अगस्त 1996 से अप्रैल 2026 (लगभग 30 साल) के बीच 'बीएसई सेंसेक्स टोटल रिटर्न इंडेक्स (टीआरआई)' के डेटा के आधार पर यह पाया गया कि एसआईपी की टाइमिंग बदलने से लॉन्ग-टर्म रिटर्न पर कोई खास असर नहीं पड़ता।

अलग-अलग तारीखों का रिटर्न

स्थिति/तारीख	अनुमानित
जिस दिन निवेश सस्ता	13.80%
महीने की 15 तारीख	13.58%
महीने का सबसे खराब दिन	13.32%
महीने की 1 तारीख	13.59%
महीने की 20 तारीख	13.58%

निष्कर्ष| साफ है कि बाजार को टाइम करने की कोशिश करना बेकार है। अलग-अलग तारीखों के बीच रिटर्न का अंतर 13.55% से 13.61% के छोटे दायरे में सिमट जाता है।

आईटीआर: 15 जून से पहले रिटर्न फाइल करने का जोखिम न उठाएं, एक्सपर्ट्स ने दी रुकने की सलाह

2026-27 के लिए इनकम टैक्स रिटर्न (आईटीआर) की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। कई नौकरीपेशा टैक्सपेयर्स जल्द रिफंड पाने के चक्कर में फटाफट रिटर्न फाइल करने की तैयारी में हैं। लेकिन एक्सपर्ट्स कहते है कि 15 जून से पहले जल्दबाजी दिखाना मुसीबत बन सकता है।

15 जून से पहले ITR रिस्की क्यों?

अभी एआईएस, टीआईएस और फॉर्म 26एएस पूरी तरह अपडेट नहीं हुए हैं। कंपनियां और बैंक 31 मई तक टीडीएस/टीसीएस व एसएफटी डेटा जमा करते हैं, जो जून के पहले दो हफ्तों में अपडेट होता है। जल्दबाजी में ITR भरने पर डेटा मिसमैच, नोटिस, रिफंड अटकने और जुर्माने का खतरा बढ़ सकता है।

किन्हें रुकना चाहिए, किन्हें नहीं?

- सैलरी क्लास (फॉर्म 16 का इंतजार करने वाले), शेयर बाजार या म्यूचुअल फंड निवेशक, मल्टीपल बैंक अकाउंट वाले और फ्रीलांसर्स।
- **कौन कर सकता है जल्दी फाइल:** मिहिर तन्ना के अनुसार, जिनकी कमाई के स्रोत सीमित हैं और जिनका TDS नहीं कटा है, वे जल्द फाइल कर सकते हैं।

सुझाव व प्रतिक्रिया इस पते पर भेज सकते हैं- business.bhaskar@dbcorp.in

भास्कर Q&A

लॉन्ग टर्म कैपिटल 'लॉस' ऐसे ही 'गेन' से एडजस्ट करें

■ **मेरे पिताजी के पास सेल के 200 शेयर थे। 1998 में उनका देहांत हो गया। मेरे पास फिजिकल शेयर नहीं हैं, पर पिताजी के नाम पर कई साल तक डिविडेंड के चेक आते रहे। मेरे पास उनकी डिटेल और फोलियो नंबर है। फिजिकल शेयर न होने की स्थिति में मैं वे शेयर कैसे प्राप्त करूं? -विनय, भिलाई**

यदि आपके पास सेल के शेयरों का फोलियो नंबर और डिविडेंड के डिटेल हैं, तो बिना फिजिकल शेयर सर्टिफिकेट के भी क्लेम किए जा सकते हैं। पहले सेल के आरटीए यानी रजिस्ट्रार एंड ट्रांसफर एजेंट से संपर्क करके पता करें कि शेयर एक्टिव हैं या नहीं। लगातार 7 साल तक डिविडेंड क्लेम नहीं किया गया तो शेयर इन्वेस्टर एजुकेशन एंड प्रोटेक्शन फंड (आईईपीएफ) में चले जाते हैं। यदि आईईपीएफ में चले गए हैं तो नियमानुसार शेयर और डिविडेंड क्लेम करना होगा। यदि शेयर एक्टिव हैं तो डुप्लीकेट शेयर सर्टिफिकेट एवं ट्रांसमिशन की प्रक्रिया करनी होगी।

■ **मेरे ससुर जी का म्यूचुअल फंड में निवेश था। दोनों बेटियों को नॉमिनी बनाया था। 2021 में ससुरजी और बड़ी बेटी (मेरी पत्नी) की मृत्यु हो गई। छोटी बेटी ने फोलियो नंबर अपने नाम ट्रांसफर करा लिए। क्या मेरी बेटी का हक बनता है? -दीपक, रायपुर**

केवल 'नॉमिनी' होना किसी व्यक्ति को अंतिम मालिक नहीं बनाता। नॉमिनी अक्सर ट्रस्टी की तरह होता है, जिसे राशि प्राप्त करने का अधिकार तो मिलता है, लेकिन वास्तविक उत्तराधिकार कानूनों के हिसाब से तय होता है। यदि आपके ससुर जी हिंदू थे और उन्होंने कोई वसीयत नहीं छोड़ी थी, तो उनकी संपत्ति पर अधिकार सामान्यतः हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम के अनुसार तय होगा। यदि आपकी पत्नी की मृत्यु आपके ससुर जी से पहले हुई है तो कानूनी स्थिति थोड़ी अलग हो सकती है। लेकिन यदि दोनों की मृत्यु लगभग एक ही समय हुई या पत्नी का निधन बाद में हुआ तो आपकी बेटी का दावा और मजबूत हो सकता है। इसलिए डेथ टाइमिंग और रिकॉर्ड्स बेहद अहम है। यह मामला 'नॉमिनी बनाम लीगल हेयर' का है, इसलिए बिना देर किए किसी स्थानीय उत्तराधिकार/सिविल वकील से राय लेना उचित रहेगा।

■ **मैंने अगस्त 2003 में 4.16 लाख में एक प्लॉट खरीदा था। 2004-2005 में 10 लाख खर्च करके दुकान बनवाई। 2007-2008 में इंटीरियर पर 10 लाख और खर्च किए। 8 मई 2026 को यह दुकान 49.5 लाख में बेच दी है। कितना टैक्स देना होगा। टैक्स कैसे बचा सकता हूं? -विकास, पठानकोट**

कॉस्ट इन्फ्लेशन इंडेक्स के मुताबिक प्लॉट की 4.16 लाख लागत बढ़कर 13.86 लाख, दुकान निर्माण के 10 लाख बढ़कर 32.12 लाख और इंटीरियर के 10 लाख बढ़कर रु 28.14 लाख हो गए। इस तरह कुल इंडेक्स्ड कॉस्ट 74.12 लाख है, जो बिक्री मूल्य 49.5 लाख से अधिक है। यानी आपको 24.62 लाख का लॉन्ग टर्म कैपिटल लॉस हुआ है। इस घाटे को आप अगले 8 साल तक किसी भी अन्य लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन्स से एडजस्ट कर सकते हैं और उस पर टैक्स बचा सकते हैं, पर समय पर रिटर्न फाइल करना होगा।

भास्कर एक्सपर्ट: डॉ. अभय शर्मा, सीए

आपके मन में बचत, निवेश और टैक्स जैसे पर्सनल फाइनेंस से जुड़े कोई भी सवाल हों, तो यह क्यूआर कोड स्कैन करके भेजें। एक्सपर्ट इनके जवाब देंगे।

गर्मी जिस तरह साल-दर-साल बढ़ रही है, उससे यह आशंका और प्रबल हो उठी है कि आने वाले वर्षों में गंगा-यमुना के मैदानी इलाकों व तटीय क्षेत्रों से कुछ महीनों के लिए सामूहिक पलायन के हालात बन सकते हैं। यहां यह मत सोच बैठिएगा कि ऐसा जब होगा, तब देखा जाएगा। वैज्ञानिकों का एक धड़ा मानता है कि अगर उमस और गर्मी में इसी दर से बढ़ोतरी जारी रही, तो साल 2040 के आसपास यह कयामत बरपा हो सकती है।

आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

सीकरी के सबक याद रखिए

शशि शेखर

कभी फतेहपुर सीकरी के प्राचीर से चारों ओर नजर दौड़ा देखिए। आपको अर्द्ध रेगिस्तान की रेतीली तह में इतिहास की कराहटें कसमसाती नजर आएंगी। बादशाह-ए-हिंद जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर ने बड़ी मनखत से सन् 1571 में इसे मुगलिया सल्तनत की राजधानी घोषित किया था।

इस नए-नवेले शहर का नामकरण भी उन्होंने बड़े चाव से किया था- फतेहपुर सीकरी, यानी जीत का शहर।

इस नगरी को बसाने के पीछे उनका मकसद निहायत निजी, पर संवेदना से भरा हुआ था। कभी सूफी संत शेख सलीम चिश्ती की रिहाइश यहां हुआ करती थी। उनके आशीर्वाद से ही अकबर को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी। यहां से थोड़ी दूर पर खनवा का वह मैदान भी मौजूद है, जहां उनके पितामह जहीरुद्दीन मोहम्मद बाबर ने राणा सांगा को परास्त कर मुगल राजसत्ता की स्थापना की बुनियाद पुख्ता की थी।

आजकल

सल्तनत की राजधानी के लिए भला इससे बेहतर और कौन सी जगह हो सकती थी? फिर गलती कहां हुई? बादशाह कुदरत की उपेक्षा कर बैठे थे। आगरा और दिल्ली की तरह यहां जलापूर्ति के लिए यमुना जैसी कोई सदानीरा नहीं थी। जलापूर्ति के लिए बनाए गए जलाशयों को मौसमी वर्षा पर निर्भर रहना होता था। भूमिगत जल खारा था। नतीजतन, महज 14 साल में उन्हें राजधानी यहां से हटाकर आगरा ले जानी पड़ी। दौलताबाद को छोड़ दें, तो देश की इससे अल्पकालिक राजधानी कोई दूसरी नहीं हुई।

आपको यह एक विराट राजकीय महत्वाकांक्षा की शोकांतिका लग सकती है, पर वह 16वीं सदी थी। आज हालात डरावने हो गए हैं। देश की कई बड़ी नदियां सूख चली हैं और उनके किनारे बसे शहर पेयजल के मामले में 'डार्क जोन' की ओर बढ़ रहे हैं। नई दिल्ली इसका अपवाद नहीं है।

यह साल 'सुपर अल नीनो' का है। जो नहीं जानते, उन्हें बता दूं कि अल नीनो की स्थिति कई सालों में एक बार बनती है। ऐसा तब होता है, जब प्रशांत महासागर का तापमान दो प्रतिशत या उससे अधिक बढ़ जाता है। इससे हवा में गर्मी बढ़ने लगती है और उसका रुख भी बदल जाता है। नतीजतन, दक्षिण अमेरिका में अत्यधिक बारिश और बाढ़ के हालात बन जाते हैं, तो ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और दक्षिण एशिया में भीषण अवर्षण की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। इसी दौरान तपते हुए जंगल भी आग पकड़ते हैं, जिससे पर्यावरण को गंभीर क्षति पहुंचती है।

भारत में सुपर अल नीनो की वजह से ही इस बार मानसून के कमजोर रहने की आशंका जताई जा रही है। मौसम शास्त्रियों का मानना है कि कुल वर्षा 90 फीसदी के आसपास होगी। यह सुकून की बात है कि अगस्त, सितंबर में राहत के हालात बन सकते हैं, लेकिन तब तक बुआई और रोपाई में देरी हो चुकी होगी।

यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए दोहरे झटके की तरह होगा।

हम पहले ही होर्मुज जलमार्ग के बाधित होने की वजह से तरह-तरह के आर्थिक दबाव महसूस कर रहे हैं। मैं इस विषय पर फिर कभी लंबी चर्चा करना चाहूंगा, क्योंकि आज हमारा मुद्दा जलवायु परिवर्तन और उससे होने वाली दिक्कतें हैं। इस समय हम जो गर्मी महसूस कर रहे हैं, उसे भले ही सुपर अल नीनो या अन्य तात्कालिक कारणों की उपज मानी जा रही हो, लेकिन यह एक अर्द्धसत्य है। सच यह है कि अल नीनो के बिना भी हमारे शहर तपती हुई भट्ठी में तब्दील होते जा रहे हैं। पिछले दिनों प्रकाशित एक रिपोर्ट से चौंकाने वाले तथ्यों का खुलासा हुआ था। संसार के 100 सर्वाधिक गर्म शहरों में से 97 भारत के हैं। इसके परिणाम घातक होंगे।

यह अनायास नहीं है कि देश के अधिकांश मैदानी शहरों में पारा इस समय 45 डिग्री को पार कर गया है। सरकार ने ऐसे में नागरिकों से दिन में बिना जरूरत बाहर न निकलने की अपील की है। ऐसे कितने लोग हैं, जो इस नेक सलाह का पालन करने की कुव्वत रखते हैं?

देश का 19 फीसदी गैर-कृषि श्रमबल आज भी असंगठित क्षेत्रों में काम करता है। इसी तरह, 52 प्रतिशत से अधिक लोग कृषि से जुड़े हुए हैं। ये वे लोग हैं, जो रोज कुआं खोदकर पानी पीते हैं। रोजी-रोटी के लिए इन्हें घर से बाहर निकलना ही पड़ता है। यह विवशता जानलेवा साबित हो सकती है। आंकड़े गवाह हैं कि पिछले पांच सालों में ताप संबंधी समस्याओं से 3,000 से अधिक लोगों को जान गंवानी पड़ी। मध्य भारत, बुंदेलखंड, राजस्थान व अन्य मरुस्थलीय इलाके और दक्षिण भारत के सूखाग्रस्त क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग इस बला के चलते स्थायी या अस्थायी तौर पर पलायन कर रहे हैं।

हम कितनी फतेहपुर सीकरियां बनाना चाहते हैं?

कई मौसम विज्ञानी मानते हैं कि यदि हालात पर काबू नहीं पाया गया, तो कुछ इलाकों में 'वेट बल्ब टेंपरेचर' घटने के हालात बढ़ सकते हैं। यह उमस और गर्मी का ऐसा मेल है, जिसे सहने की क्षमता मानव शरीर में नहीं है। इसके शिकार लोग दो से छह घंटे के भीतर दम तोड़ सकते हैं। गर्मी जिस तरह साल-दर-साल बढ़ रही है, उससे यह आशंका और प्रबल हो उठी है कि आने वाले वर्षों में गंगा-यमुना के मैदानी इलाकों व तटीय क्षेत्रों से कुछ महीनों के लिए सामूहिक पलायन के हालात बन सकते हैं। यहां यह मत सोच बैठिएगा कि ऐसा जब होगा, तब देखा जाएगा। वैज्ञानिकों का एक धड़ा मानता है कि अगर उमस और गर्मी में इसी दर से बढ़ोतरी जारी रही, तो साल 2040 के आसपास यह कयामत बरपा हो सकती है।

याद रखें। मौसम कभी एकतरफा सितम नहीं ढाता। यही कारण है कि एक तरफ गर्मी बढ़ रही है, तो दूसरी तरफ सर्दियां रिकॉर्ड तोड़ रही हैं। अतिवृष्टि भी अलग से गजब ढाती रहती है। सवाल उठता है, ऐसे में किया क्या जाए? चीन और तमाम अन्य देशों के उदाहरण मौजूद हैं। उन्होंने प्राकृतिक उपायों और आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों के तालमेल से इस बल को काफी काबू किया है। यहां मैं आपको अपनी परंपराओं की याद दिलाना चाहूंगा। *बृहदारण्यकोपनिषद* की इस सूक्ति पर ध्यान दें-

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्न सन्त्वोषधीः।...
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता।...
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

अर्थात् हमारे लिए बहने वाली हवाएं मधुर (प्राणदायी और सुखद) हों। हमारे जलस्रोत व नदियां अमृत के समान मीठा और स्वच्छ जल प्रवाहित करें। पृथ्वी पर उगने वाली समस्त औषधियां, वनस्पतियां हमारे लिए स्वास्थ्यवर्द्धक और जीवनदायी हों। हमारे लिए रातें शांतिपूर्ण हों और सुबह आनंद व नई ऊर्जा लेकर आएं। इस पृथ्वी की मिट्टी उपजाऊ और कल्याणकारी हो। हमारा पालन करने वाला यह ब्रह्मांड और आकाश हमारे लिए पिता की तरह कृपालु हो।

हमारे पूर्वज प्रकृति पर विजय नहीं, बल्कि इसके साथ सामंजस्य और संतुलन की साधना करते थे, ताकि उसका करम हमारे ऊपर अमृत बनकर बरसता रहे। हम इस महामंत्र को भूल क्यों गए हैं?

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

देवेंद्र कुमार
सामाजिक कार्यकर्ता

हजारों बेसहारा बहनों का वह आखिरी सहारा

दिल्ली की एक मलिन बस्ती में रह रही बूढ़ी दादी के दरवाजे पर देवेंद्र को छोड़कर उनके माता-पिता लापता हो गए थे। दो साल के देवेंद्र की गोद में तीन दिन की नवजात बहन! इससे बड़ी जिम्मेदारी शायद ही किसी भाई को कभी मिली होगी! दादी व कुंवारी बुआ ने खून के रिश्ते की लाज बचा ली।

इस दुनिया में जितनी बेबसी है, उससे कई गुना ज्यादा उम्मीदें हैं। जाहिर है, त्रासदियों और चमत्कारों से भरे इस मानव-महासागर की कुछ ही जिंदगियों को हम पढ़ और सुन सकते हैं। इसीलिए हम उन्हीं किरदारों को चुनते हैं, जो मानवता की अनुकरणीय मिसालें पेश करते हैं; जिनकी नेकदिली से हमारा समाज, देश और इंसानियत जगमग है। एक ऐसे ही शख्स हैं- देवेंद्र कुमार। आज से 36 साल पहले की बात है। देवेंद्र तब दो साल के थे, उनकी छोटी बहन तो महज तीन दिन की थी। दिल्ली की एक मलिन बस्ती में रह रही उनकी बूढ़ी दादी के दरवाजे पर देवेंद्र को छोड़कर माता-पिता लापता हो गए थे। दो साल के भाई की गोद में तीन दिन की बहन! इससे बड़ी जिम्मेदारी शायद ही किसी भाई को कभी मिली होगी। दादी और कुंवारी बुआ ने खून के रिश्ते की लाज बचा ली। चार साल की उम्र में देवेंद्र जब कुछ होशमंद हुए, तो बुआ ने सरकारी स्कूल में नाम लिखा दिया। बुआ की सिलाई-तुरपाई के सहारे ही किसी तरह चार लोगों के पेट पल रहे थे।

देवेंद्र जब आठ साल के हुए, तो उनके हाथों में एक शाम गुब्बारे थमा दिए गए। बुआ की कमाई में मुश्किल से घर चल पाता था, इसलिए किशोर देवेंद्र से कुछ कमाकर लाने की आशा पाली गई। मगर एक दिन कुछ लावारिस लड़कों ने उन्हें बुरी तरह पीट दिया। देवेंद्र को सदमा लगा, उन्होंने तो कोई गलती भी नहीं की थी? तब उन्हें कहां पता था कि उन समवय किशोरों की उनसे कोई निजी दुश्मनी नहीं थी, उन्हें तो बस देवेंद्र के पैसे चाहिए थे, ताकि वे उससे नशा खरीद सकें? भतीजे की चोट देख बुआ ने बैलून बेचने का काम छुड़वा दिया, मगर स्कूल की पढ़ाई जारी रही।

गजब तो यह हुआ कि जिन नशेड़ी किशोरों ने देवेंद्र को पीटा था, उन्हीं से उनकी दोस्ती होती चली गई। अब पैसे का लोभ जो बीच में न था, तो अदावत भी न रही? पांच-दस-बीस-पच्चीस, दोस्तों का दायरा बढ़ता गया। उन्होंने देवेंद्र को भी अपनी दुनिया में घसीटने की काफी कोशिश की, मगर कुदरत ने देवेंद्र के लिए कुछ और ही तय कर रखा था, सो वह नशे की गिरफ्त से बचे रहे। वह इन दोस्तों के साथ कबड्डी खेला करते थे। इस खेल में जिस्मानी ताकत खूब लगती है। कुछ ही महीनों में किशोर देवेंद्र ने महसूस किया कि नशेबाज लड़कों में से कई कबड्डी में इतने रम गए थे कि उन्होंने नशा करना बंद कर दिया था।

जाहिर है, माता-पिता भी इस बदलाव का संज्ञान ले रहे थे। नशे की गिरफ्त से बाहर आ गए बच्चों के अभिभावक तो देवेंद्र को अपने बेटे जैसा प्यार करने लगे थे। इस भरोसे ने देवेंद्र के भीतर एक गहरा आत्मविश्वास भरा। इसने उनके भीतर एक सामाजिक कार्यकर्ता को जन्म दिया। उधर, घर की जिम्मेदारियां भी बढ़ रही थीं, लिहाजा वह इंडियन रेडक्रॉस से

जुड़ गए। साथ ही, उन्होंने एक दवा-दुकान पर काम करना शुरू कर दिया। हालांकि, वहां से उन्हें नियमित पगार नहीं मिलती थी, मगर दवाओं के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानने की ललक अगले दो साल तक देवेंद्र को उस दुकान से जोड़े रखी। इन दो वर्षों में वह अच्छी तरह जान गए थे कि नेट्रोविट-10 ओरेक्स, सिप्लेनी प्लस और स्पासमो प्रौक्सिवॉन कैप्सूल जैसी कई दवाइयां, जो बिना डॉक्टर की परची के नहीं बिकनी चाहिए, वे धड़ल्ले से बिक रही हैं। देवेंद्र को यह भी पता लगा कि उनके नशाखोर साथी किस दवा की कितनी डोज लेते हैं? नीले बादाम के नाम से चर्चित इन दवाओं को खाकर बच्चे दिन भर नशे में पड़े रहते। कई बार दवा दुकानकार इस नशे के बदले बच्चों से बेगारी कराते। एक तरफ, कबड्डी के जरिये कुछ किशोर नशे से दूर जा रहे थे, तो दूसरी ओर नए-नए बच्चे उसकी गिरफ्त में फंस रहे थे। इस दुश्चक्र को तोड़ना बहुत जरूरी था। देवेंद्र अब तक 15 साल के हो गए थे। बीते सात वर्षों में उनके कई दोस्तों की मौत हो गई थी, जो नीले बादाम की गिरफ्त से कभी बाहर न निकल सके। आखिरकार स्थानीय पुलिस, ड्रग्स कंट्रोल डिपार्टमेंट के साथ मिलकर देवेंद्र ने 13 दवा दुकानों को सील करवा दिया।

जब आप समाज के लिए जीते हैं, तो समाज भी आपके बारे में सोचता है। दसवीं में ही देवेंद्र की पढ़ाई छूट गई, क्योंकि अब नियमित कमाई जरूरत बन गई थी। एक डॉक्टर के यहां 250 रुपये की तनख्वाह पर सहायक की नौकरी मिल गई। जल्द ही नियति ने नई करवट ली। एक स्थानीय अस्पताल में हड़ताल हो गई थी, कई लोग एक साथ काम छोड़कर चले गए। देवेंद्र को वहां अपने कई साथियों के साथ नौकरी करने का प्रस्ताव मिला और वह भी उम्मीद से सौ गुना अधिक वेतन पर। अगले दस साल अपेक्षाकृत सुकून में बीते।

जब वह बहन की शादी करने निकले, तो दहेज की मांग और उसकी सामाजिक सुरक्षा की चिंता ने देवेंद्र को काफी परेशान किया। संयोग से एक दहेज विरोधी परिवार मिला और वह उसमें अपनी बहन की शादी कर सके। इन्हीं दिनों उन्होंने गौर किया कि बस्ती में इतनी लड़कियां बिनब्याही क्यों हैं? इन लड़कियों को शोषण व दुर्दशा से बचाने के लिए देवेंद्र ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर एक गैर-लाभकारी संगठन 'लाडली फाउंडेशन' की नींव रखी। साल 2012 में पहली बार इस संस्था ने किसी से एक रुपये की मदद लिए बिना 44 लड़कियों का सामूहिक विवाह कराया। ये वह बेटियां थीं, जिनके माता-पिता की इतनी भी हैसियत न थी कि वे होने वाले दामाद की पृष्ठभूमि की छान-बीन कर पाते। यह बीड़ा देवेंद्र और लाडली फाउंडेशन ट्रस्ट ने उठाया।

साल 2012 में पहली बार इस संस्था ने किसी से एक रुपये की मदद लिए बिना 44 लड़कियों का सामूहिक विवाह कराया। ये वह बेटियां थीं, जिनके माता-पिता की इतनी भी हैसियत न थी कि वे होने वाले दामाद की पृष्ठभूमि की छान-बीन कर पाते। यह बीड़ा देवेंद्र और लाडली फाउंडेशन ट्रस्ट ने उठाया।

बीते 14 वर्षों में पद्मश्री देवेंद्र और उनकी संस्था ने हजारों बेबस बेटियों का विवाह कराया, हजारों को शिक्षित किया है। उनकी संस्था के प्रयासों ने देश के दस राज्यों की पच्चीस लाख गरीब लड़कियों की जिंदगी को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। अब ऐसे सफरनामे को कौन सलाम नहीं करेगा?

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

लांस नायक करम सिंह
परमवीर चक्र विजेता

गुस्सा वही, जो देश के काम आ जाए

ऐसा हो नहीं सकता कि कोई उन्हें छेड़कर बिना गुस्सा झेले चला गया हो। दिमाग में उबलते रहने वाला गुस्सा नाक पर धरा रहता था। मौका मिलते ही बरसने लगता था। मोहल्ले में एंग्री यंगमैन की छवि बन गई थी। जानने वाले दो हाथ दूर ही रहते थे।

शक्ति का सदुपयोग होता है और दुरुपयोग भी। पता नहीं क्यों, शक्ति का दुरुपयोग युवाओं को ज्यादा और जल्दी आकर्षित करता है। शहर हो या गांव बड़ी संख्या में ऐसे युवा मिल जाते हैं, जो ऊर्जा और रोष से भरकर कदम उठाते हैं। वे समझ नहीं पाते हैं कि छोटी-छोटी बातों पर लड़ना-भिड़ना शक्ति का दुरुपयोग है। पंजाब के गांव सेहना में एक युवा सरदार भी शक्ति या ऊर्जा से भरे हुए थे। उन्हें कोई बात पसंद नहीं आती, तो नाराजगी जताने में कभी चूकते नहीं थे। ऐसा हो नहीं सकता कि कोई उन्हें छेड़कर बिना गुस्सा झेले चला गया हो। दिमाग में उबलते रहने वाला गुस्सा नाक पर धरा रहता था और मौका मिलते ही उतरने-बरसने लगता था। मोहल्ले में एंग्री यंगमैन की छवि बन गई थी। तमाम जानने वाले उनसे दो हाथ दूर ही रहते थे।

एक दिन खेत से जुड़े मसले पर पड़ोसी से ही झगड़ा हो गया। पड़ोसी भी हार मानने को तैयार नहीं था, तो मामला बिगड़ गया। युवा सरदार का गुस्सा ऐसे फूटा कि लगा, हाथ उठ जाएगा, हिंसा हो जाएगी। आवाज यूं गूंजी, मानो पड़ोसी जानी दुश्मन हो। आंखें आग बरसा रही थीं। भुजाएं फड़क रही थीं, देखने से ही लग रहा था कि आज कोई अनहोनी होने वाली है।

खैर, भला हो पड़ोसी का, वह पीछे हट गया, तब धीरे-धीरे मामला शांत हुआ। अपना गुस्सा समेटे सरदार जी अपने घर लौटे। मां-बाप को बड़ी चिंता थी, तो उन्होंने प्यार से समझाना शुरू किया, देखो, इतना गुस्सा ठीक नहीं। गुस्से से बनते काम भी बिगड़ जाते हैं। हमेशा होश से काम लेना चाहिए। इतना गुस्सा तन-मन के लिए खराब है। देखो, कहीं जिंदगी न बिगाड़ दे।

सरदार जी चुपचाप सुनते रहे। बात सही थी, उन्हें गुस्सा बहुत आता था। मां-बाप के बाद चाचा ने अलग ढंग से समझाया, गुस्सा दिखाना ही है, तो सही जगह पर दिखाओ। सिपाही बनो, जंग के मैदान में गुस्से को वीरता में बदलो। अपने पड़ोसियों और गांव वालों पर ऐसे गुस्सा बरसाने से क्या फायदा? गुस्सा बरसे, तो जंग के मैदान में दुश्मनों पर बरसे, ताकि पूरा हिन्दुस्तान तुम्हारा स्वागत करे, तुम्हें सिर-आंखों पर बिठा ले।

पच्चीस वर्षीय सरदार जी के दिल में यह बात जंच गई। गांव में कुछ फौजी थे, जो प्रथम विश्व युद्ध में लड़कर लौटे थे। जब वे अपनी वीर गाथा सुनाते, तो गांव वाले घेरा लगाकर सुनते और दांतों तले उंगलियां दबाते थे। सरदार जी को महसूस हो गया, बात सही है, गुस्से की सही जगह खेत-खलिहान नहीं, जंग का मैदान है। जंग में गुस्सा खर्च हो, तो देश की शान में इजाफा होता है।

फिर क्या था, सरदार जी चल पड़े सेना में भर्ती होने। द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो चुका था, भर्ती जोरों पर थी। सेना को तो मजबूत कद-काठी के सिख जवान का इंतजार था। उन्हें बर्मा के मोरचे पर जापानी सेना के खिलाफ उतार दिया गया। जंग के मैदान में एक दिन अचानक खूंखार जापानी सैनिक सामने आ गए। मुठभेड़ हो गई, सरदार जी के पैर में गोली लगी, पर वह कहां पीछे हटने वाले थे। उनका गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया था। घायल होने के बावजूद साहस और निडरता से वह ऐसे लड़े कि अंग्रेज अफसरों की जुबान पर भी उनका नाम चढ़ गया- सिपाही करम सिंह। उन्हें न सिर्फ मिलिटरी मेडल से नवाजा गया, तत्काल सिपाही से लांस नायक भी बना दिया गया।

खैर, यह तो महज आगाज था। देश की आजादी के तत्काल बाद जब पाकिस्तानी सेना और कबायलियों ने भारत पर हमला बोला, तब लांस नायक करम सिंह अपनी चौकी के खंदक में बस तीन जवानों के साथ तैनात थे। एक घबराए जवान ने दुश्मनों की भीड़ देखकर कहा, दुश्मन बहुत हैं, हम बस चार हैं, क्या करेंगे?

तब निडर लांस नायक बेधड़क खंदक से बाहर निकले और मूंछों को ऐंठकर बुलंद आवाज में जयकारा लगा दिया- *बोले सो निहाल, सत श्री अकाल।* जयकारा ऐसे गूंजा कि दूर-दूर तक भारतीय जवानों की रगों में वीरता का ज्वार उमड़ पड़ा।

गौर कीजिए, ईद की वह सुबह थी। पाकिस्तानी कमांडर ने अपने जनरल को ईद के तोहफे में रिछमार गली भेंट करने का फैसला ले रखा था। एक-एक कर आठ हमले हुए और करम सिंह घायल होने के बावजूद टस से मस नहीं हुए। बार-बार कहा गया कि आप घायल हो गए हो, पीछे आ जाओ, पर लांस नायक को पीछे हटना आता ही नहीं था। वह वीर ही क्या, जो अपने देश का मोर्चा दुश्मन के लिए छोड़कर पीठ दिखा दे? रिछमार गली, तिथवाल में लांस नायक के नेतृत्व में महज 47 भारतीय वीरों ने तीन हजार से ज्यादा दुश्मनों को धूल चाटने पर मजबूर कर दिया। लांस नायक करम सिंह (1915-1993) इस माटी के पहले ऐसे वीर थे, जिनके चौड़े सीने पर जीते जी देश के प्रथम राष्ट्रपति ने अपने हाथों से परमवीर चक्र सजाया था।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

तू झूठा और मैं मक्कार

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

इस महीने की बेस्ट सेलिंग बुक्स। इस महीने की 'टॉप टेन' पुस्तकें। हिंदी के सबसे लोकप्रिय लेखकों की बीस किताबें। हिंदी की अवश्य पढ़ने योग्य पुस्तकें। इनको नहीं पढ़ा, तो कुछ नहीं पढ़ा। हिंदी की चुनिंदा पुस्तकें। महीने की पठनीय पुस्तकें यहां उपलब्ध हैं, पढ़ें, समझें व आगे बढ़ें। मेरी सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तकें... मेरी सबसे हिट पुस्तकें... मेरी सबसे चर्चित पुस्तकें।

वाट्सएप, गूगल, एक्स आदि पर ऐसी 'बेस्ट-बेस्ट' खबरें आती हैं, तो लगता है कि हिंदी साहित्य की 'जीडीपी' टॉप पर है। ऐसी खबरें आश्वस्त करती हैं कि हजार महंगाई, बेरोजगारी हो, पुस्तकों का 'मार्केट' बन रहा है, बढ़ रहा है और वे दनादन बिक रही हैं।

जिस तरह अमेरिका, यूरोप में 'बेस्ट सेलर्स' की सूची हर महीने दी जाती है, उसी तरह अपने हिंदी वाले भी करने लगे हैं। जैसे अमेरिका-यूरोप में पुस्तकें बिकती हैं, उसी तरह अपने यहां भी बिकने लगी हैं। लगता है, अब हम भी अमेरिका-यूरोप हुए जा रहे हैं और किताबी कीड़े बने जा रहे हैं। हम कह सकते हैं कि हिंदी साहित्यकार की कीमत बढ़ी है। उसकी हैसियत बढ़ी है, सत्ता बढ़ी है, अथॉरिटी बढ़ी है। उसका भी दम है, उसके भी मानी हैं, वह किसी स्टार से कम नहीं है।

ऐसी खबरें सच हैं, तो बेस्ट सेलिंग हिंदी लेखक भी मालामाल होने चाहिए, मगर ऐसा दिखता नहीं। आप किसी हिंदी लेखक से बात कीजिए, वह रोता हुआ मिलेगा कि हिंदी में लेखक हैं, पर पैसा नहीं है। लेखक बनकर नहीं जिया जा सकता, परिवार का भरण-पोषण नहीं किया जा सकता। जब यह नहीं हो सकता, तब कैसे माना जाए कि हिंदी में कोई 'बेस्ट सेलिंग' लेखक भी है!

पिछले दिनों जब एक लेखक ने बताया कि उसे एकमुश्त कोई तीस लाख रुपये की रॉयल्टी मिली, तो मन हुआ कि पूछा जाए कि सर जी, कितना टैक्स कटा? रिटर्न भरा कि नहीं? सरकार द्वारा बनाई गई 'लखपति दीदी' हो सकती हैं, पर सिर्फ लेखन से बना लखपति लेखक नहीं दिखता, क्योंकि वह हो नहीं सकता; क्योंकि हिंदी की इकोनॉमी इसकी अनुमति नहीं देती। जिसके पास 'सरप्लस इनकम' है, वही लेखक बन सकता है। लिखने को साधन चाहिए। लेखन सर्वहारा नहीं, मध्यवर्ग का खेल है। इसका कारण है, आम हिंदी लेखक की जन्म कुंडली।

हिंदी का लेखक मूलतः और अंततः एक शौकिया लेखक ही है। लेखन एक हॉबी है, खाली वक्त का काम है। मूड हुआ, तो लिखा, नहीं हुआ, तो नहीं लिखा। आइडिया आया तो लिखा, वरना नहीं। अपने मन की मांग पर लिखा, किसी और की मांग पर इनकार कर दिया। इसीलिए हिंदी के अधिकांश लेखक पेशेवर नहीं हैं। अपने करियर के आखिरी दिनों में कमलेश्वर, मनोहर श्याम जोशी आदि जरूर हिंदी के होलटाइमर रहे। इनके बाद हिंदी में एक भी होलटाइमर लेखक नहीं है। बॉलीवुड में होंगे, दिल्ली में नहीं हैं। इसलिए हिंदी का जो लेखक खुद को बेस्ट सेलर कहता है, वह झूठ बोलता है।

आप किसी हिंदी लेखक से पूछिए, वह दुनिया भर की हांकेगा कि वह जनता के लिए लिखता है, समाज में बदलाव लाने के लिए लिखता है। वह सतत प्रतिपक्ष में रहता है। उसका काम सवाल उठाना है। वह जनता की आवाज होता है, पर सच पूछिए, तो हिंदी में लेखन अब भी 'सोशल' नहीं, 'पर्सनल' काम है। मन का लड्डू है, जितना चाहे बड़ा बनाओ, खाओ।

यह लेखक इस पर्सनल काम के लिए क्या-क्या नहीं करता? बीवी-बच्चों का पेट काटता है, किताबें, पत्र-पत्रिकाएं खरीदता है, साहित्यकारों का सत्संग करता है। बीवी-बच्चे कैसे भी जीते हों, लेकिन आम हिंदी लेखक अपने सपनों के घोड़ों पर सवार रहते हैं। नाम कमाने के लिए वे क्या-क्या कुलाबे नहीं भिड़ाते, लेकिन पूछो, तो कहेंगे कि वे तो समाज के लिए मरे जा रहे हैं!

फिल्म *तू झूठी मैं मक्कार* की तुक पर ये लेखक भी कह सकते हैं- तू झूठा, मैं मक्कार'!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

साहित्य का पहला शहर एडिनबरा

अनिता भटनागर जैन अपनी बाल कहानियों के लिए चर्चित रही हैं। बच्चों को पर्यावरण के लिए प्रेरित करने और नैतिक विकास को बल देने के प्रयास में उनके बाल कहानी-संग्रह 'दिल्ली की बुलबुल', 'कुंभ' और 'गरम पहाड़' को देखा जाता है। उन्होंने पर्यावरण केंद्रित फिल्म 'हमारी पृथ्वी हमारा घर' का भी निर्माण किया है। बाल साहित्य के लिए अमृतलाल नागर पुरस्कार से सम्मानित लेखिका पूर्व आईएएस अधिकारी हैं। पेश है, उनके यात्रा संस्मरण 'एडिनबरा : उत्तर का एथेंस' से संपादित अंश...

अद्भुत यात्रा संस्मरण-54

अनिता भटनागर जैन

जन्म : 02 नवंबर, 1959

इलस्ट्रेशन : यशवंत नामदेव

मूसलाधार बारिश हो रही थी। परिधीय दृष्टि में एक धुंधली आकृति अचानक दिखी। रात के सन्नाटे में एक भयभीत चीख गूंजी। कब्रों के बीच की ऊंची-नीची जमीन पर एक हाथ में छाता पकड़े, मेरी हृदय गति इतनी तीव्र हो गई कि मुझे अन्य कोई आवाज सुनाई ही नहीं दे रही थी। यह एक दुस्वप्न नहीं था। मैं और मेरा बेटा एडिनबरा के विख्यात पर्यटन टूर (अभिशप्त व दफनाए मृतकों) का हिस्सा थे। काले रेनकोट व काली-नुकीली टोपी में गाइड फुसफुसाकर नरभक्षियों, हत्याओं, फांसी व प्लेग पीड़ितों के किस्से सुना रहा था।

रात्रि उपरांत एडिनबरा की भूतात्माओं 'केवल वयस्कों' के टूर पर्यटकों में कितने लोकप्रिय हैं, इसका अंदाजा केवल इस बात से ही लगाया जा सकता था कि कितनी कठिनाई से इसके टिकट मिल पाए। टूर की समाप्ति पर गाइड हमें 'बाबी' नामक टेरियर कुत्ते की कब्र पर ले गया। 'बाबी' श्वान-भक्ति की बड़ी मिसाल है, जो 14 वर्ष तक अपने मालिक की कब्र पर बैठा रहा।

प्रातःकाल होटल में चेक-इन करने के उपरांत हमने पैदल ही एडिनबरा किले तक जाने का निर्णय लिया। एक मृत ज्वालामुखी के ऊपर टिका बारहवीं शताब्दी का यह किला दूर से भी प्रभावशाली लगता है। पत्थरों से बनी घुमावदार पगडंडी, फॉर्मर मार्केट से होकर ऊपर जाती थी। सफेद-नीले फहराते हुए शामियानों के नीचे विभिन्न प्रकार की ताजी सब्जियां, फल, मुरब्बे, अचार और क्रीम रोल व ब्रेड की खुशबू लुभावनी थी।

टिकट काउंटरों पर लंबी-घुमावदार पंक्तियों को देखकर हमें कोई संशय नहीं रहा कि एडिनबरा किला स्कॉटलैंड का सर्वोच्च आकर्षण माना जाता है। हमारे छरहरे गाइड एओध ने हमें बताया कि लौह काल में इस पहाड़ी की सामरिक सैन्य महत्ता को समझते हुए यहां किला बनाया गया था। विभिन्न युद्धों में किले का स्वामित्व बदलता रहा। वह हमें क्राउन रूम में ले गया, जहां शाही आभूषणों को देखा जा सकता था। शत्रुओं से बचाने के लिए शाही ताज को मध्यकालीन बाथरूम की आलमारी के नीचे छिपा दिया गया था, जिसे सर वाल्टर स्कॉट ने सन् 1818 में पुनः खोज निकाला। पोप एलेक्जैंडर के द्वारा 1494 में दी गई विशिष्ट छड़ी भी वहां प्रदर्शित थी, जिसका उपयोग मेरी क्वीन ऑफ स्काट की 1543 में हुई ताजपोशी में हुआ था। स्कॉटलैंड के साम्राज्य का प्राचीन व सशक्त प्रतीक 'स्टोन ऑफ डेस्टिनी' एक लोकप्रिय एक्जिबिट है, जो कई सदियों तक महाराजाओं की ताजपोशी का साक्षी रहा है।

हम जल्दी-जल्दी सेंट मारग्रेट चैपल, राष्ट्रीय युद्ध स्मारक देखकर 'वन ओ क्लॉक गन' की तरफ बढ़े। सन् 1861 से यह गन प्रत्येक दिन दोपहर एक बजे फायर की जाती है। यह प्रथा समुद्री जहाजों को अपनी घड़ी स्थानीय समय से मिलाने के लिए प्रारंभ की गई थी। अपने मोबाइल और वीड़ियो कैमरा लिए पर्यटकों का एक बड़ा समुदाय प्रतीक्षित क्षण को 'क्लिक' करने को तैयार था।

एओध ने उत्साहपूर्वक हमसे उत्तर में देखने को कहा। नीचे पूरा शहर दूर-दूर तक फैला हुआ था। प्राचीनकाल की प्रहरी स्वरूप मीनारों के मध्य छितरे हुए आधुनिक निर्माण। दूर समुद्र चांदी के रिबिन की तरह झिलमिला रहा था। सात पहाड़ियों पर स्थित इस आधुनिक शहर में मनुष्य निवास के प्राचीनतम 'मेसोलिथिक' कैंप की 8500 बी.सी. की भी साइट है। एडिनबरा के बारे में एओध की गौरवपूर्ण सूची अंतविहीन थी। 1400 में गोल्फ की शुरुआत हुई। 2004 में यूनेस्को द्वारा विश्व का प्रथम 'साहित्य का शहर' घोषित होना। अनेक विख्यात लेखकों ने यहां निवास किया, जैसे सर वाल्टर स्कॉट, ट्रेजर आइलैंड के आर. एल. स्टीवेंसन, सर ऑर्थर कानन डायल, जिन्होंने शेरलॉक होल्म्स को सृजित किया था व हैरी पाटर की सृजेता जे. के. राउलिंग, जिनका प्रथम पुस्तक लेखन एडिनबरा की कॉफी शॉप में प्रारंभ हुआ था। प्रथम जेम्स बांड शान कानरी और ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर का यह जन्म स्थान है।

यद्यपि एडिनबरा की लैटीट्यूड मॉस्को व न्यू फाउंडलैंड के समान है, परंतु यहां की जलवायु उनकी तुलना में कम सर्दी की है। आज हमारा पहला स्थल होलीरूड हाउस था। जहां प्रत्येक वर्ष जून में एडिनबरा की रानी व ड्यूक निवास करते हैं। प्रवेश के समीप शाही ताज रूपी अष्टकोणीय फव्वारों में शेरों के मुंह से फुहार निकल रही थी, क्योंकि अंदर कैमरा अनुमन्य नहीं था, तो हमारा संपूर्ण ध्यान हमारी उत्साही गाइड 'फीओना' (गैलिक भाषा में गोरा रंग) पर केंद्रित था।

स्टेट अपार्टमेंट के कमरों में उतरोत्तर राजाओं की रुचि परिलक्षित थी। वह अपनी उत्कृष्ट प्लास्टर वर्क के नमूनों की छतों व ब्रसल की अतुलनीय टेपेस्ट्रियों के संग्रह के लिए जाने जाते हैं। ग्रेट गैलरी में जेकेब दी वेट की स्काटलैंड के असली व पौराणिक राजाओं की अनेक पोर्ट्रेट हैं। दूसरी सदियों की अनेक रोचक कथाओं को सुनने के बाद हम 'ऑर्थर सीट' की पृष्ठभूमि में स्थित चित्रमय बगीचों में पहुंचे। यद्यपि चैपल अब खंडहर है, परंतु उसने हमें शाहरुख-काजोल की फिल्म-'कुछ कुछ होता है' के कुछ भागों की याद दिलाई।

होलीरूड हाउस से निकलकर सड़क के उस पार ही स्कॉटलैंड के पार्लियामेंट का अत्यंत आधुनिक भवन स्थित है। यह समकालीन वास्तुकला का अनूठा उदाहरण है। बिल्डिंग के बाहरी भाग पर बने ग्रे रंग के निराकार, एक से डिजाइन हैं। बांसों को विभिन्न आकारों में मोड़ा गया है व पत्थर के स्लैब से नाव के आकार की बेंचें सामने फुटपाथ पर पड़ी हैं। बाहर से इस भवन को मॉडर्न आर्ट गैलरी समझने का संशय हो सकता है। हम निर्धारित समय से लेट चल रहे थे। अतः हमने ओशन टरमिनल लीथ के लिए टैक्सी की। विदेशों में हम जैसे शाकाहारियों के मुख्य भोजन 'मार्गरीटा पिज्जा' का आनंद लेने के उपरांत हम यूनाइटेड किंगडम के सर्वोच्च आकर्षण 'रॉयल याट ब्रिटानिया' देखने को उत्साहित थे।

2004 में यूनेस्को द्वारा एडिनबरा को विश्व का प्रथम 'साहित्य का शहर' घोषित किया गया। अनेक विख्यात लेखकों ने यहां निवास किया, जैसे सर वाल्टर स्कॉट, सर ऑर्थर कानन डायल, जे. के. राउलिंग, आदि...।

यह पांच डेक का जहाज ब्रिटेन की महारानी व शाही परिवार का 40 वर्षों तक घर रहा है, जो एक मिलियन मील से अधिक की समुद्री यात्रा कर चुका है। यह अनेक शाही व राष्ट्रीय मेहमानों, शासकीय स्वागत समारोहों, शाही हनीमून व आरामदायक पारिवारिक छुट्टियों का साक्षी रहा है। विभिन्न भाषाओं के विकल्प के साथ ऑडियो टूर जानकारीपूर्ण था। ब्रिटानिया, विश्व का एकमात्र ऐसा जहाज है, जिसका कैप्टन पारंपरिक रूप से एडमिरल था।

यद्यपि कोई मदिरापान न करते हों, फिर भी स्काटलैंड की यात्रा 'स्कॉच व्हिस्की' के अनुभव के बिना पूरी नहीं मानी जाती। हमारे अंतिम गंतव्य स्थान पर विविध अनुभवों का पिटारा था। लकड़ी के ड्रम में बैठकर हवा में झूमती जौ की बालियों के खेतों से लेकर डिस्टिलरी की मशीनों से होते हुए भाप से बुदकती विशाल हांडियों तक की यात्रा एक नया एहसास था। केवल सूंघकर ही फलों के मीठे व स्मोकी फलेवर में अंतर करने में भी मजा आया। विश्व में अनेक स्थानों का भ्रमण करने का सौभाग्य प्राप्त होने के बावजूद मुझे एडिनबरा जाकर एक पूर्णता का बोध हुआ।

(साभार : 'कादम्बिनी', अप्रैल, 2018)

ऑपरेशन सिंदूर : आतंक पर प्रहार

'जम्मू कश्मीर : आतंक पर विजय की शौर्यगाथा', जम्मू कश्मीर में आतंकवाद के विरुद्ध समाज के साहस, बलिदान और संघर्ष की विजयगाथा को प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक में कालानुक्रमिक जम्मू कश्मीर के आतंकवाद से प्रभावित क्षेत्रों में दहशतगर्दी की दर्दभरी दास्तान है। प्रस्तुत है इस शोधपरक वृहद पुस्तक से एक अंश...

पुस्तक अंश

कश्मीर घाटी का वातावरण शांति के खुशनुमा माहौल में बदल रहा था। धरती का स्वर्ग कहे जाने वाली घाटी में देश-विदेश के पर्यटक घूमने और आकर्षित होने लगे। ऐसे में स्थानीय कश्मीरी नागरिकों को पर्यटन के आधार पर आय का साधन भी सुलभ होने लगा। मानो, ऐसा लगा कि जैसे डल झील मुसकरा उठी हो। पहलगाम, गुलमर्ग और सोनमर्ग की घाटियां नृत्य कर रही हों, लेकिन पाकिस्तान ने इन खुशियों पर रुधिर के छींटे लगाकर, उसे डरावना बनाने का षड्यंत्र रचकर, दिनांक 22 अप्रैल, 2025 दोपहर 02.30 से 02.45 के बीच पहलगाम की बैसरन घाटी में खुशियों के पल में पाकपरस्त और स्थानीय छह आतंकवादियों के एक दल ने धर्म के आधार पर एक-एक कर केवल पुरुष पर्यटकों की हत्या करके 26 नागरिकों का सामूहिक नरसंहार कर डाला।

इस नृशंस हत्याकांड से देश में पाकिस्तान के विरुद्ध आक्रोश और अपनों के प्रति शोक की लहर छा गई, परंतु इस घटना ने पूरे जम्मू कश्मीर और देश में ऐसा आपसी सद्भाव उत्पन्न किया कि घाटी के मुसलमान मस्जिद से लेकर सड़कों तक आतंकवाद और पाकिस्तान के विरोध में सड़कों पर उतर आए। पूरे जम्मू कश्मीर का हिंदू-मुस्लिम आवाम एकजुट हो गया। अब कार्रवाई करने की बारी सरकार की थी।

भारत की भाजपा गठबंधन की सरकार का निर्णय और सेना के शौर्य ने दिनांक 06-07 मई, 2025 की रात्रि 01.05 मिनट से 01.30 मिनट तक पाकिस्तान में स्थित आतंकवादी शिविर पर ड्रोन और मिसाइलों से हमला कर दिया। इसमें नौ आतंकी प्रशिक्षण शिविर- 1. मरकज सुभान अल्लाह, बहावलपुर, 2. मरकज तैयबा, मुरीदके, 3. मरकज शबाई नाला कैंप, मुजफ्फराबाद, 4. महमूना जोया कैंप, सियालकोट, 5. मरकज अहले हदीस, बरनाला भिंबर, 6. मरकज शहीद शाहिद, कोटली, 7. सैयदना बिलाला कैंप, मुजफ्फराबाद, 8. सरजल, तेरहा कलां कैंप, सियालकोट, 9. मरकज अब्बास गुरपुर कैंप, कोटली- को नष्ट कर लगभग सौ आतंकवादी मार गिराए।

दोनों देशों के बीच यह संघर्ष चार दिनों तक चलता रहा। इसमें पाकिस्तान को भारी हानि उठानी पड़ी। वहीं हमारे सीमावर्ती नागरिकों को, विशेष रूप से पुंछ में जान और माल का

जम्मू कश्मीर आतंक पर विजय की शौर्यगाथा

लेखक : रवींद्र जुगरान
प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : ₹1250

नुकसान उठाना पड़ा, जिसमें हमारे सत्रह नागरिक शहीद हो गए थे।

दिनांक 10 मई, 2025 को दोनों देशों के बीच आपसी सहमती से सायं पांच बजे से संघर्ष विराम लागू हुआ। भारत का आतंकी ठिकानों पर यह अचूक प्रहार था, जो कि सफल रहा। इसमें पाकिस्तान तथा उसके आतंकी ढांचे को बहुत हानि उठानी पड़ी और सेना की इस कार्रवाई से भारत की जनता का मनोबल ऊंचा हुआ।

इस संघर्ष में सीमा पर तैनात जवानों ने अपने प्राणों की आहुतियां दीं। पुंछ सेक्टर में तैनात लांस नायक शहीद दिनेश शर्मा (हरियाणा), राजौरी सेक्टर में सूबेदार मेजर शहीद पवन कुमार (हिमाचल), पुंछ सेक्टर में अग्निवीर जवान शहीद मुरली नाइक (आंध्र प्रदेश), उधमपुर एयर बेस चिकित्सा यूनिट में जवान सुरेंद्र कुमार मोगा (राजस्थान), आर. एस. पुरा सेक्टर में जवान शहीद दीपक चिंगखम (मणिपुर), आर. एस. पुरा सेक्टर में राइफलमैन शहीद सुनील कुमार (जम्मू), आर. एस. पुरा सेक्टर में बी.एस.एफ. सब-इंस्पेक्टर शहीद मोहम्मद इम्तियाज खान (बिहार), आर.जी. ब्रिगेड जम्मू में जवान शहीद रामबाबू सिंह (बिहार)- भारतीय सेना के इन वीरों ने सजग रहकर आतंकवाद के अड्डों को ध्वस्त करने के लिए पाकिस्तान के ड्रोन बम हमलों का सामना करते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

ऐतिहासिक प्रस्ताव जम्मू कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम 2019 से राज्य से धारा 370 के प्रावधानों के हटने के बाद अन्य राज्यों की तरह जम्मू कश्मीर राज्य का भी भारत के साथ एकता का अटूट संबंध स्थापित हुआ है।

पुस्तक अंश

पत्रकार अम्बेडकर परम्परा और विमर्श
(पत्रकारिता)
संपादन और भूमिका : श्यौराज सिंह बेचैन
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : ₹595

संविधान निर्माता डॉ. भीम राव अम्बेडकर सामाजिक न्याय की लड़ाई के नायक होने के साथ-साथ दूरदर्शी पत्रकार और संपादक भी थे। उन्होंने अपने पत्रकारीय जीवन के लगभग छत्तीस साल समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े वंचित समाज की आवाज बुलंद करने के लिए दिए। उनके जीवन का ही नहीं, बल्कि पत्रकारिता का भी मूल उद्देश्य शोषितों-पीड़ितों में चेतना जगाने के साथ सामाजिक न्याय की वकालत करना और समतामूलक समाज का निर्माण करना था। पुस्तक 'पत्रकार अम्बेडकर : परम्परा और विमर्श' डॉ. अम्बेडकर के पत्रकारीय रूप पर विस्तार और गहनता से विचार करती है।

सीपी में शंखनाद
(कविता-संग्रह)
लेखिका : संगीता मिश्र
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : ₹350

'पिता अचकचाए, पूछा, क्या है/मां ने कहा, कुछ नहीं/पिता के चेहरे पर आश्वस्ति के भाव वापस आ गए/कटोरी खाली हो गई/पर मेरा मन भर आया, सदा के लिए/पहली बार जाना कि प्रेम का दूसरा नाम भरोसा भी है।' -प्यार जीवन में अपने कई रूप और रंग में मौजूद होता है। बस, उसे महसूस करने की कुव्वत होनी चाहिए। कविता 'प्रेम' में इसे बहुत ही खूबसूरती और संजीदगी के साथ उकेरा गया है। कविता-संग्रह 'सीपी में शंखनाद' की कविताएं आधुनिक स्त्री-विमर्श की कविताएं हैं। ये कविताएं स्त्री के दुख-दर्द की ही नहीं, बल्कि संघर्षपूर्ण सफर की भी मुखर साक्षी हैं।

अमरत्व की ओर
(उपनिषद् की कथाएं)
लेखिका : डॉ. सुधारानी पाण्डेय
प्रकाशक : काव्यांश प्रकाशन, ऋषिकेश (देहरादून)
मूल्य : ₹225

हमारी मौखिक परंपरा का हिस्सा रहे उपनिषदों में वेदों की दार्शनिक और आध्यात्मिक व्याख्या है। इन्हें वेदांत भी कहते हैं। दशकों पूर्व मासिक पत्रिका 'कादम्बिनी' में वैदिक कथाओं से संबंधित एक धारावाहिक शृंखला शुरू हुई थी, जिसमें वेद-उपनिषद् की कथाएं प्रकाशित होती थीं। उन्हीं कथाओं का पुस्तकाकार रूप है- 'अमरत्व की ओर।' इनमें केनोपनिषद्, कठोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद् और छान्दोग्योपनिषद् से ली गईं बीस कथाएं शामिल हैं। इनमें उपनिषदों के सार तत्व को सरल और सुबोध शैली में प्रस्तुत किया है।

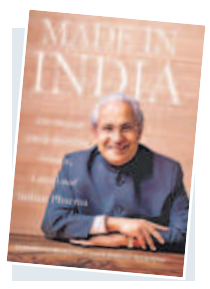

मेड इन इंडिया
द स्टोरी ऑफ देश बंधु गुप्ता, ल्यूपिन एंड इंडियन फार्मा
लेखक : मनीष सभरवाल, संदीप खन्ना
प्रकाशक : जगरनॉट बुक्स, नई दिल्ली
मूल्य : ₹799

दुनिया में ऐसी अनेक कहानियां हैं, जो इंसान के बुलंद हौसलों की गवाही देती हैं। ऐसी ही एक कहानी, एक छोटे से गांव की है। कैसे उस गांव में रहने वाले एक शिक्षक ने अपनी पत्नी से पांच हजार रुपये उधार लिए और एक वैश्विक दवा कंपनी का निर्माण किया। आज यह कंपनी विश्व भर में लाखों लोगों तक सस्ती और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचा रही है। इस कंपनी का नाम है- ल्यूपिन और इसके संस्थापक हैं- देश बंधु गुप्ता। पुस्तक 'मेड इन इंडिया : द स्टोरी ऑफ देश बंधु गुप्ता, ल्यूपिन एंड इंडियन फार्मा' इनके संघर्ष और सफलता की कहानी बताती है। पुस्तक सुरुचिपूर्ण और आकर्षक ढंग से छापी गई है।

रोजनामचा

साप्ताहिक भविष्यफल

(31 मई से 06 जून 2026)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान भी हो सकता है। संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। माता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। खर्चों में वृद्धि होगी। माता की सेहत में सुधार होगा।

वृष (21 अप्रैल-20 मई)
सप्ताह के प्रारंभ में मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। माता का सान्निध्य मिलेगा। जीवनसाथी की सेहत का ध्यान रखें। वाणी के प्रभाव में वृद्धि होगी। आय के साधन बनेंगे। सेहत का ध्यान रखें।

मिथुन (21 मई-21 जून)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु संयत भी रहें। धैर्यशीलता बनाए रखें। सेहत के प्रति सचेत रहें। 02 जून से नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे।

कर्क (22 जून-23 जुलाई)
आत्मविश्वास तो बहुत रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव हो सकता है। 02 जून के बाद नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। अफसरों का सहयोग मिलेगा। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा।

सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान हो सकता है। 02 जून के बाद संतान की सेहत का ध्यान रखें। शैक्षिक कार्यों के प्रति भी सचेत रहें। व्यवधान आ सकते हैं। यात्रा लाभप्रद रहेगी।

कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)
आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे, परंतु आत्मसंयत रहें। बातचीत में संतुलन बनाए रखने के प्रयास करें। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ भी अधिक रहेगी। लाभ के अवसर भी मिलेंगे।

तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)
आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान भी हो सकता है। धैर्यशीलता बनाए रखें। 02 जून के बाद किसी मित्र के सहयोग से नौकरी के अवसर मिल सकते हैं। कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी।

वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)
मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। 02 जून से संतान की सेहत में सुधार होगा। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। शैक्षिक व शोधादि कार्यों में सफलता मिलेगी।

धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। 02 जून से आत्मविश्वास में कमी रहेगी। माता की सेहत का ध्यान रखें। खर्चों में वृद्धि होगी।

मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। किसी रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है। किसी मित्र के सहयोग से किसी नए कारोबार की शुरुआत हो सकती है। भागदौड़ अधिक रहेगी।

कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)
मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। 02 जून से शैक्षिक कार्यों में व्यवधान आ सकते हैं। आय में कमी व खर्च अधिक की स्थिति हो सकती है। नौकरी में अफसरों से सद्भाव बनाकर रखें।

मीन (19 फरवरी-20 मार्च)
आलस्य की अधिकता हो सकती है। 02 जून के बाद शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। बौद्धिक कार्यों से आय के साधन भी बनेंगे। कोई पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। परिवार में सुख-शांति रहेगी।

वर्ग पहेली : 8345

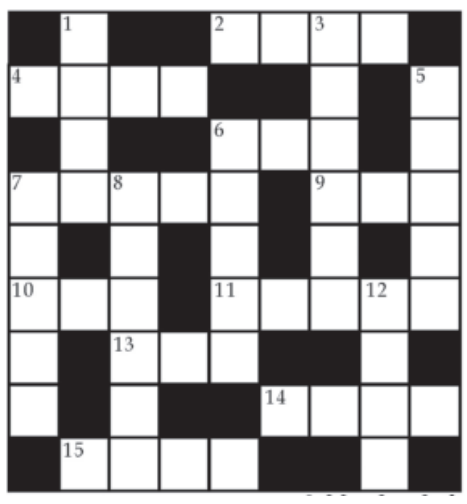

बाएं से दाएं

2. अनुकूल; समान; की तरह (4)
4. इच्छा; अभिलाषा (4)
6. इच्छा; ख्वाहिश; चाह; मनोरथ (3)
7. रोग जिससे बुद्धि और इच्छाशक्ति में विकार हो जाए; उन्माद; चित्तविभ्रम; विक्षिप्तता (5)
9. खींचना; जकड़ना; बांधना; कसौटी पर परखना (3)
10. उठी हुई भूमि; चौरस और ऊंची जमीन; पर्वत का समतल भाग (3)
11. रचने वाला; रचयिता; निर्माता; लेखक; साहित्यकार (5)
13. रगड़ना; चूर्ण बनाना; दबाना; कुचलना (3)
14. जगमग कराना; प्रकाशित करना; उन्नति कराना; भड़काना (4)
15. आमद रफ्त; आवाजाही; मिलना-जुलना (2,2)

ऊपर से नीचे

1. मन संबंधी रोग; मनोविकार; मनोविकृति; मानसिक रोग (4)
3. टकराना; भिड़ना; डट जाना; मुकाबला करना (3,3)
5. जिसका आकार बेलन जैसा हो; गोलाकार; गोल लंबे दस्ते जैसा (5)
6. कान देना; ध्यान देना; सुनना (2,3)
7. तुषारपात होना; बहुत ठंड पड़ना; वास्ता पड़ना; सरोकार होना; साबिका होना (2,3)
8. पुरानी प्रथा पर चलना; परंपरा के अनुसार ही चलना; बाद में पछताना (3,3)
12. कामधंधा; व्यवसाय (4)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली

(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 8344 का उत्तर

सुडोकू : 8327

*आसान

	4		5		9		8	
	6		3		7		4	
		5	4		8	2		
		1				5		
5		7				3		9
		8				1		
		9	8		1	7		
	8		7		2		5	
	1		6		5		9	

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3×3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल : सुडोकू नं. 8326

3	9	2	6	1	4	8	5	7
1	8	4	7	2	5	3	9	6
5	6	7	8	3	9	2	4	1
9	3	6	2	5	8	7	1	4
2	4	1	9	6	7	5	8	3
7	5	8	1	4	3	6	2	9
4	7	9	5	8	6	1	3	2
8	2	3	4	7	1	9	6	5
6	1	5	3	9	2	4	7	8

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋषिकांत गोस्वामी

31 मई, रविवार, **शक संवत्** : 10 ज्येष्ठ (सौर) 1948, **पंजाब पंचांग** : 17 ज्येष्ठ मास प्रविष्टे 2083, **इस्लाम** : 13 जिल्हिजा, 1447, **विक्रमी संवत्** : प्रथम (अधिक) ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा तिथि दोपहर 02.15 मिनट तक पश्चात प्रतिपदा तिथि, अनुराधा नक्षत्र सायं 04.12 मिनट तक पश्चात ज्येष्ठा नक्षत्र, सिद्ध योग (दिन-रात), बव करण। चंद्रमा वृश्चिक राशि में (दिन-रात)।

सूर्य उत्तरायण। ग्रीष्म ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम्। ज्येष्ठी योग। स्नान-दानादि की अधिक मासीय ज्येष्ठी पूर्णिमा। गंडमूल सायं 04.12 मिनट से।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

मेरा इस समय वर्क फ्रॉम होम चल रहा है। कृपया बताएं कि मैं किस प्रकार वास्तु के अनुसार कार्य करूं?
-मार्कण्डेय शर्मा, मथुरा

- आप अपने ऑफिस का कार्य बेडरूम में न करें। इससे बेडरूम की एनर्जी कमजोर हो जाएगी। आप भी अच्छे ढंग से काम नहीं कर पाएंगे। बहुत सारे गैजेट्स के कारण कमरे की एनर्जी डिस्टर्ब होगी। आप दक्षिण से लेकर पश्चिम दिशा तक के कमरे में अपना ऑफिस का काम कर सकते हैं। कार्य करते समय आपका मुख पूर्व या उत्तर की ओर होना चाहिए।
- आपके कमरे में वार्म लाइट्स होनी चाहिए, जिससे आपको हानि नहीं हो।
- आपके पीछे ठोस दीवार होनी चाहिए, जिसमें कोई खिड़की नहीं होनी चाहिए।

इंडियन एक्सप्रेस समूह
जनसत्ता सरोकार | सम-सामयिक | एक
जनसत्ता | 31 मई, 2026

सत्ताईस मई, 2026 को प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जायमाल्या बागची की पीठ ने 124 पन्नों का ऐसा फैसला सुनाया जो भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में मील का पत्थर बन जाएगा। चुनाव आयोग ने विशेष गहन पुनरीक्षण यानी (एसआइआर) के जरिए बिहार, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, राजस्थान और कई अन्य राज्यों की मतदाता सूचियों से करोड़ों नाम या तो काटे या जांच के दायरे में रखे। एसआइआर की इस प्रक्रिया को सर्वोच्च न्यायालय ने वैध करार दिया है। साथ ही एक ऐसी सीमा भी खींची है जो राजनीतिक रूप से उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। अदालत ने कहा कि चुनाव आयोग को नागरिकता की सीमित जांच का अधिकार है। हालांकि इस सीमित जांच पर असीमित सवाल भी उठ रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट के फैसले का विश्लेषण करता सरोकार।

एसआइआर की प्रक्रिया को सुप्रीम कोर्ट ने माना वैध संसद से लेकर सड़क तक चल रहा था संघर्ष

सुप्रीम आयोग!

जनसत्ता सरोकार

मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण पर यह फैसला किसी एक कानूनी प्रश्न का उत्तर नहीं है। वास्तव में यह उस व्यापक संघर्ष की परिणति है जो एक वर्ष से अधिक समय से देश की अदालतों, संसद की सीढ़ियों और सड़कों पर लड़ी गई। एक तरफ भाजपा जो पुनरीक्षण को मतदाता सूची की सफाई और घुसपैठियों को बाहर करने का अभियान बताती रही, वहीं विपक्ष, नागरिक समाज और नागरिक संस्थाएं इसे मताधिकार के हनन का षड्यंत्र कह रहे थे। उच्चतम न्यायालय ने दोनों को आंशिक रूप से सुना और आंशिक रूप से निराश किया।

बिहार से शुरुआत

जून 2025 में निर्वाचन आयोग ने बिहार विधानसभा चुनाव से पहले विशेष गहन पुनरीक्षण की घोषणा की। 24 जून से 25 जुलाई के बीच बिहार के 7.89 करोड़ मतदाताओं के विवरण की जांच की गई। एक अगस्त को प्रारूप सूची जारी हुई, जिसमें 65.62 लाख नाम हटाए गए थे। अनुपस्थित, मृत, स्थानांतरित या दोहरे के आधार पर। विपक्ष ने इसकी मुखालफत की। राजद के मनोज झा, कांग्रेस के केसी वेणुगोपाल, तृणमूल की महुआ मोईत्रा, राकांपा (शरद पवार) की सुप्रिया सुले और योगेंद्र यादव सहित कई याचिकाकर्ताओं ने सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया।

आयोग की दलील थी कि साल 1962 के बाद पहली बार मतदाता सूची की ऐसी गहन समीक्षा की जा रही है। 20 वर्षों में तेज शहरीकरण और पलायन के कारण सूची में बड़े पैमाने पर गड़बड़ी हो गई थी। याचिकाकर्ताओं का आरोप था कि यह एनआरसी जैसी प्रक्रिया है, जिसमें नागरिकता की परोक्ष जांच हो रही है, जो आयोग के अधिकार क्षेत्र से बाहर है। प्रशांत भूषण ने तर्क दिया कि प्रक्रिया गैर पारदर्शी है और 10 फीसद से अधिक मतदाताओं को हटाया गया।

बंगाल : 91 लाख नाम हटे, 25 लाख अपीलें

बिहार के बाद पुनरीक्षण का केंद्र बना पश्चिम बंगाल। वहां साल 2026 के विधानसभा चुनाव होने थे। 16 दिसंबर 2025 को निर्वाचन आयोग ने बंगाल की प्रारूप मतदाता सूची जारी की। 7.66 करोड़ पूर्व मतदाताओं में से 58.21 लाख नाम हटा दिए गए। 24.16 लाख मृत, 32.65 लाख स्थानांतरित/अनुपस्थित और 1.38 लाख दोहरे। इसके अलावा 31.38 लाख 'अनमैप्ड' मतदाताओं को सुनवाई के लिए बुलाया गया जो साल 2002 की सूची से नहीं जुड़े थे।

तृणमूल कांग्रेस ने इसे राजनीतिक षड्यंत्र बताया था। ममता बनर्जी ने खुद निर्वाचन आयोग से मिलकर विरोध जताया। तृणमूल सांसद डेरेक ओ ब्रायन ने सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर कर कहा कि 58 लाख नाम बिना नोटिस या व्यक्तिगत सुनवाई के काटे गए। सुनवाई के बाद अंततः बंगाल में कुल 91 लाख नाम हटाए गए।

एक रिपोर्ट के अनुसार बंगाल में गहन पुनरीक्षण से जुड़े अपीलीय न्यायाधिकरणों में कुल 25 लाख से अधिक अपीलें दाखिल की गईं। लेकिन मई 2026 तक केवल 6,581 मामलों का निपटारा हो पाया। यानी कुल अपीलों का महज 0.26 फीसद। सर्वोच्च न्यायालय ने मार्च 2026 में 19 अपीलीय न्यायाधिकरण बनाए थे, जिनमें उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश नियुक्त किए गए।

फैसले के मुख्य बिंदु : क्या कहा सुप्रीम कोर्ट ने

प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत की पीठ ने 124 पन्नों के फैसले में तीन केंद्रीय प्रश्नों का उत्तर दिया। **पहला**– क्या आयोग को एसआइआर का अधिकार है? **दूसरा**– क्या प्रक्रिया वैध उद्देश्य पर आधारित थी? **तीसरा**– क्या इसमें कानून का उल्लंघन हुआ? तीनों के उत्तर में न्यायालय ने निर्वाचन आयोग के पक्ष में फैसला दिया।

न्यायालय ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद 324 और जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 की धारा 21(3) के तहत आयोग को विशेष गहन पुनरीक्षण का पूर्ण संवैधानिक अधिकार है। यह प्रक्रिया स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों की संवैधानिक अनिवार्यता को आगे बढ़ाती है। पीठ ने स्पष्ट किया कि एसआइआर जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 या निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण नियम 1960 के विरुद्ध नहीं है, बल्कि यह संविधान के अनुच्छेद 324 को धारा 21 (3) के माध्यम से जीवंत करता है। सबसे महत्त्वपूर्ण और राजनीतिक रूप से संवेदनशील बिंदु था– नागरिकता। न्यायालय ने स्पष्ट कहा कि आयोग नागरिकता की सीमित जांच कर सकता है, लेकिन उसका निर्णय नागरिकता पर अंतिम नहीं होगा। यह निर्णय सक्षम प्राधिकरण, मुख्यतः गृह मंत्रालय को करना होगा। न्यायालय ने कहा, आधार कार्ड नागरिकता का प्रमाण नहीं। न्यायालय ने कहा कि आधार कार्ड को मतदान पात्रता के प्राथमिक दस्तावेज के रूप में नहीं माना जा सकता, हालांकि बिहार की संशोधित सूची में पहचान सत्यापन के लिए अतिरिक्त दस्तावेज के रूप में इसे मान्यता दी गई थी।

फैसला आते ही तीखी प्रतिक्रिया भी आई

प्रशांत भूषण ने इसे न्यायपालिका का काला दिन बताते हुए कहा कि सर्वोच्च न्यायालय ने एक पक्षपाती चुनाव आयोग को कोरा चेक दे दिया। उनका तर्क था कि कई राज्यों में चुनाव पहले ही हो चुके हैं। संशोधित मतदाता सूचियों के आधार पर 10 फीसद से अधिक मतदाताओं को एक गैर-पारदर्शी प्रक्रिया में हटाया गया।

योगेंद्र यादव ने इस फैसले को आपातकाल युग के 'एडीएम जबलपुर' फैसले से तुलना करते हुए इसे संवैधानिक पराजय कहा। उन्होंने लिखा कि यह भारतीय लोकतंत्र की अंतिम संवैधानिक दीवार के ढहने का प्रतीक है। यादव ने यह भी कहा कि वे फैसला सुनने अदालत नहीं गए क्योंकि उनके अनुसार यह मामला बहुत पहले ही तय हो चुका था।

कांग्रेस के कानूनी मामलों के विभाग के अध्यक्ष अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि फैसले में जितने जवाब दिए गए हैं, उससे अधिक सवाल खड़े हो गए हैं। उन्होंने फैसले में विरोधाभासों की ओर ध्यान दिलाया, जैसे कि आयोग को नागरिकता की सीमित जांच का अधिकार देना, लेकिन अंतिम निर्णय से वंचित रखना। यह स्थिति व्यावहारिक रूप से कठिन है क्योंकि अगर आयोग नाम काट देता है और बाद में वह व्यक्ति नागरिक पाया जाता है, तो चुनाव हो चुका होगा।

भाजपा की प्रतिक्रिया : विपक्ष का भ्रम टूटा

भाजपा ने फैसले का स्वागत किया। पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव तरुण चुघ ने कहा कि यह फैसला निर्वाचन आयोग की संवैधानिक शक्तियों और लोकतंत्र की पारदर्शिता को मजबूत करता है। उन्होंने विपक्ष पर आरोप लगाया कि वह वोट बैंक की राजनीति के लिए एसआइआर का विरोध कर रहा था। भाजपा ने कांग्रेस पर तीखा हमला करते हुए कहा कि राहुल गांधी और कांग्रेस ने एसआइआर का विरोध इसलिए किया क्योंकि वे अवैध घुसपैठियों के साथ खड़े थे, भारतीय मतदाताओं के साथ नहीं। भाजपा ने राहुल गांधी से माफी मांगने की मांग की। एडीआर का सवाल था कि 90 फीसद नाम गलत क्यों काटे गए?

> **आयोग** की दलील थी कि साल 1962 के बाद पहली बार मतदाता सूची की ऐसी गहन समीक्षा की जा रही है। 20 वर्षों में तेज शहरीकरण और पलायन के कारण सूची में बड़े पैमाने पर गड़बड़ियां हो गई थीं। याचिकाकर्ताओं का आरोप था कि यह एनआरसी जैसी प्रक्रिया है, जिसमें नागरिकता की परोक्ष जांच हो रही है, जो आयोग के अधिकार क्षेत्र से बाहर है।

एसोसिएशन फार डेमोक्रेटिक रिफार्म्स (एडीआर) इस पूरे मामले का मूल याचिकाकर्ता थी। एडीआर ने एसआइआर की प्रक्रिया, समयसीमा और पारदर्शिता पर तीन मुख्य आपत्तियां उठाई थीं।

पहली– आयोग ने मतदान से महज कुछ महीने पहले बड़े पैमाने पर नाम काटने की कवायद की, जिससे लाखों वैध मतदाता वंचित हो सकते हैं।

दूसरी– नागरिकता जांच आयोग के क्षेत्राधिकार से बाहर है। 65 लाख बिहार और 91 लाख बंगाल के मतदाताओं के आंकड़े सत्यापन की प्रक्रिया की खामियां उजागर करते हैं।

तीसरी–सबसे चौंकाने वाला तथ्य यह था जो याचिकाकर्ताओं ने न्यायालय के समक्ष रखा– सुनवाई के दौरान जिन मामलों का निपटारा हुआ उनमें से लगभग 90 फीसद में पाया गया कि नाम गलत काटे गए। अर्थात जो मतदाता सुनवाई में पहुंचे और दस्तावेज प्रस्तुत किए, उनमें से नौ में से नौ वैध नागरिक निकले। यह आंकड़ा दर्शाता है कि प्रारंभिक सफाई कितनी अपरिपक्व थी। हालांकि बंगाल में ट्रिब्यूनल ने मात्र 6,581 मामलों का ही निपटारा किया और 25 लाख अपीलें लंबित रहीं।

सवाल सामाजिक अधिकारों का

एसआइआर पर सर्वोच्च न्यायालय का यह फैसला एक विरोधाभासी दस्तावेज है। एक तरफ यह निर्वाचन आयोग की शक्तियों को संवैधानिक मान्यता देता है, दूसरी तरफ नागरिकता के प्रश्न को अनिर्धारित छोड़ देता है। इससे एक नई प्रशासनिक-न्यायिक श्रृंखला बनती है, जिसमें मतदाता सूची से कटे लाखों लोगों को गृह मंत्रालय और ट्रिब्यूनल के चक्कर लगाने पड़ेंगे।

पश्चिम बंगाल में 25 लाख लंबित अपीलें, 90 फीसद मामलों में गलत कटौती का तथ्य और ट्रिब्यूनलों द्वारा मात्र 0.26 फीसद मामलों का निपटारा, ये आंकड़े बताते हैं कि प्रक्रिया की वैधानिकता और उसके क्रियान्वयन के बीच की खाई अभी भरी नहीं है। जब शुभेंदु अधिकारी एसआइआर और राज्य की कल्याणकारी योजनाओं को एक साथ जोड़ते हैं, तो स्पष्ट हो जाता है कि मतदाता सूची की सफाई केवल चुनावी प्रक्रिया का प्रश्न नहीं, सामाजिक अधिकारों का प्रश्न भी है।

भारतीय लोकतंत्र में मतदाता सूची कभी महज प्रशासनिक दस्तावेज नहीं रही। यह नागरिकता की सामाजिक पहचान है। जो सूची में है, वह भारतीय है। जो नहीं है, उसे साबित करना होगा कि वह कौन है। सर्वोच्च न्यायालय ने 27 मई को यह सवाल तय नहीं किया। उसने केवल यह तय किया कि यह सवाल पूछने का अधिकार किसके पास है।

–प्रस्तुति : संजय शर्मा

कल्याणकारी योजनाओं पर भी असर

फैसले के दिन ही 27 मई को पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने प्रेस कांफ्रेंस में एक ऐसा बयान दिया जो पुनरीक्षण और कल्याणकारी योजनाओं को एक धागे में पिरो देता है। उन्होंने दावा किया कि तृणमूल सरकार की लक्ष्मी भंडार योजना की 2.20 करोड़ लाभार्थियों में से करीब 30 लाख महिलाएं अपात्र हैं।

मुख्यमंत्री अधिकारी के अनुसार ये 30 लाख महिलाएं या तो मृत हैं, काल्पनिक हैं, या ऐसी हैं जिनके नाम मतदाता सूची से स्थायी रूप से हटाए जा चुके हैं। इनमें वे भी शामिल हैं जो पुनरीक्षण से जुड़े ट्रिब्यूनल में नहीं पहुंचे या जिन्होंने नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) के तहत नागरिकता के लिए आवेदन नहीं किया। यह बयान सीधे तौर पर एसआइआर को अपात्र-कल्याण सफाई से जोड़ता है, जो विपक्ष के उस आरोप की पुष्टि करता है कि एसआइआर का उद्देश्य केवल मतदाता सूची नहीं, बल्कि कल्याण योजनाओं की पात्रता का पुनर्निर्धारण भी था।

महाराष्ट्र में भाजपा नीत सरकार ने भी लाडकी बहिण योजना के लेखे में 69 लाख नाम हटाए थे जो ई-केवाईसी और दस्तावेज सत्यापन में विफल रहे। अधिकारी ने स्पष्ट किया कि भाजपा सरकार की नई अन्नपूर्णा भंडार योजना, जिसके तहत 3,000 रुपए मासिक मिलेंगे, के लिए एक नई पारदर्शी सूची बनाई जाएगी। लाभार्थियों के पास नए फार्म भरने के लिए 90 दिन का समय है।

पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने कहा, हमें लग रहा था कि लक्ष्मी भंडार की लाभार्थी सूची सत्यापित है। लेकिन हमें ऐसी शिकायतें मिलीं कि लगभग 30 लाख लोग, जिनके नाम मतदाता सूची से स्थायी रूप से हटाए गए हैं, वे अभी भी पैसे ले रहे हैं।

नागरिकता कौन तय करेगा?

फैसले का सबसे विरोधाभासी पहलू नागरिकता की जांच ही है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि आयोग नागरिकता की 'सीमित जांच' कर सकता है लेकिन यह प्रथम दृष्टया और संदर्भगत आकलन है। इसे नागरिकता की घोषणा नहीं माना जाएगा। जिन व्यक्तियों के नाम साल 2003 की सूची के आधार पर काटे गए, उनके नागरिकता के प्रश्न का निर्णय सक्षम प्राधिकरण को चार हफ्ते में करना होगा– अगले लोकसभा, विधानसभा या स्थानीय निकाय चुनाव से पहले।

व्यावहारिक कठिनाई यह है कि सक्षम प्राधिकरण गृह मंत्रालय है। नागरिकता अधिनियम की धारा 23(4) के अनुसार किसी व्यक्ति की पहचान स्थापित करने के सीमित उद्देश्य के लिए ही आधार कार्ड के उपयोग की अनुमति है। अर्थात एक व्यक्ति का नाम मतदाता सूची से काटा जा सकता है, वह नागरिकता ट्रिब्यूनल में जा सकता है। ट्रिब्यूनल उसे भारतीय नागरिक मान सकता है, लेकिन तब तक चुनाव हो चुका होगा। यह वह संवैधानिक रिक्तता है, जिसे अभिषेक मनु सिंघवी विरोधाभास कह रहे थे।

फैसले के केंद्र में एक और सूक्ष्म किंतु महत्त्वपूर्ण बात है। आयोग ने यह तय किया कि पुनरीक्षण प्रक्रिया से बाहर रखे गए लोगों को केवल इसलिए नहीं रोका जा सकता कि वे एक आम पुनरीक्षण के लिए अलग तरीका अपनाते हैं। पीठ ने कहा कि आयोग लोगों को मनमाने तरीके से मतदाता सूची से हटाने नहीं देगा और आयोग द्वारा काफी सुरक्षा प्रणाली अपनाई गई थी।

इस फैसले के दूरगामी निहितार्थ हैं?

पहला– निर्वाचन आयोग अब पूरे देश में विशेष गहन पुनरीक्षण का विस्तार कर सकता है। भविष्य में जहां भी विधानसभा चुनाव होंगे, वहां एसआइआर पहले से हो सकता है।

दूसरा– नागरिकता ट्रिब्यूनल की व्यवस्था मजबूत होगी। जिन लाखों लोगों के नाम काटे गए हैं, उन्हें अब नागरिकता की कानूनी प्रक्रिया से गुजरना होगा।

तीसरा– शुभेंदु अधिकारी का बयान यह संकेत देता है कि एसआइआर और कल्याण योजनाओं की पात्रता सूची को आपस में जोड़ा जाएगा। अगर बंगाल में लक्ष्मी भंडार की 30 लाख लाभार्थियों को अपात्र ठहराया जाएगा क्योंकि उनके नाम मतदाता सूची में नहीं हैं, तो यह एक नई राजनीतिक-प्रशासनिक जटिलता पैदा करेगा।

चौथा– इस फैसले के बाद विपक्ष के पास जो एकमात्र रास्ता है, वह है, नागरिकता ट्रिब्यूनल की प्रक्रिया को लोकतांत्रिक और त्वरित बनाने की मांग करना। योगेंद्र यादव ने इस फैसले की तुलना एडीएम जबलपुर मामले से की। साल 1976 में एडीएम जबलपुर में सर्वोच्च न्यायालय ने आपातकाल के दौरान मौलिक अधिकारों के निलंबन को वैध ठहराया था, जिसे बाद में भारतीय न्यायिक इतिहास की सबसे बड़ी भूलों में से एक माना गया। यादव की तुलना विवादास्पद है, लेकिन यह एक संकेत है कि मताधिकार और नागरिकता के प्रश्न का संघर्ष अदालत से निकलकर अब राजनीतिक और सामाजिक मंच पर आ गया है।

सर्वोच्च न्यायालय ने नाम काटे जाने वाले लोगों के लिए एक महत्त्वपूर्ण राहत भी दी है। न्यायालय ने आदेश दिया कि यदि सक्षम प्राधिकरण (गृह मंत्रालय) किसी को भारतीय नागरिक घोषित करता है, तो उसका नाम मतदाता सूची में वापस जोड़ा जाएगा।

इसके अलावा न्यायालय ने कहा कि जो लोग बिहार में साल 2003 की सूची से जुड़ नहीं पाए और जिनके नाम गलती से काटे गए (अनुपस्थित, मृत, स्थानांतरित या डुप्लिकेट के आधार पर) वे न्यायिक समीक्षा के माध्यम से कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के समक्ष भी जा सकते हैं।

कानूनी पहलू सही, जमीनी हकीकत को गलत समझा

इस पूरी बहस में सबसे संतुलित और अधिकारपूर्ण आवाज आई पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एसवाई कुरैशी की। उन्होंने एक लेख लिखकर फैसले के दोनों पहलुओं को तटस्थ दृष्टि से परखा। कुरैशी ने लिखा कि सर्वोच्च न्यायालय ने कानूनी पहलू सही समझा, लेकिन जमीनी हकीकत गलत समझी।

पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल– जो हुआ, वह वास्तव में एसआइआर था ही नहीं। यह डे-नोवो यानी शून्य से नई सूची तैयार करने की कवायद थी। साल 2003 की पुरानी सूची को रद्द करके नई सूची बनाई गई। तीन दशकों में आयोग ने वार्षिक संक्षिप्त पुनरीक्षणों के जरिए मतदाता सूची में करीब 99 फीसद सटीकता हासिल की थी। साल 2024 के लोकसभा चुनाव उन्हीं सूचियों पर बिना किसी विवाद के हुए। उस विश्वसनीय काम को रद्दी की टोकरी में डालकर एक अरब मतदाताओं को फिर से सत्यापन के लिए बाध्य करना जन प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 21(3) के अर्थ में एसआइआर नहीं है।

एसवाई कुरैशी

दूसरा बड़ा सवाल– गलत बहिष्करण का उपाय। न्यायालय ने कहा कि गलती से नाम काटे गए लोग न्यायिक समीक्षा का रास्ता अपना सकते हैं। कुरैशी ने इस पर तीखा प्रश्न उठाया : वह मतदाता कौन है, जिसकी जद में यह उपाय है? वह सीतामढ़ी या मुर्शिदाबाद का दैनिक मजदूर है, जो शायद अपना नाम मसविदा सूची में देखने भी नहीं गया। जिसके पास वकील नहीं, पैसा नहीं, और सक्षम प्राधिकरण के सामने याचिका दायर करने की कानूनी साक्षरता भी नहीं। न्यायिक समीक्षा उनके लिए है, जिनके पास समय और संसाधन हों। गरीब मतदाता के लिए यह दरवाजा बंद करने का तरीका है, खोलने का नहीं। मतदाता सूची कोई नौकरशाही दस्तावेज नहीं है। यह व्यवहार में हर नागरिक का लोकतांत्रिक अपनेपन का प्रमाणपत्र है। हर गलत तरीके से हटाया गया नाम लोकतंत्र से इनकार है। राज्य के किसी दुश्मन द्वारा नहीं, बल्कि राज्य द्वारा खुद।

तीसरा सवाल– नागरिकता रेफरल की असंभव समयसीमा। न्यायालय ने कहा कि सक्षम प्राधिकरण चार सप्ताह में नागरिकता का निर्णय करे। लेकिन नागरिकता अधिनियम के तहत करोड़ों मामलों को संभालने का कोई ढांचा ही नहीं है। गैर-अनुपालन पर कोई दंड भी नहीं। यानी यह निर्देश व्यावहारिक रूप से खोखला है और यदि प्राधिकरण समय पर निर्णय नहीं कर पाता, तो वह व्यक्ति न मतदाता रहेगा, न नागरिकता सिद्ध कर पाएगा और चुनाव हो चुका होगा।

चौथा सवाल– मतदाता पहचान पत्र का खात्मा। एकमात्र विश्वसनीय पहचान दस्तावेज (निर्वाचक फोटो पहचान पत्र) को एक झटके में खत्म कर दिया गया। भारत के एक बड़े वर्ग, विशेषकर गरीब के पास यही एकमात्र सरकारी पहचान थी। अब उन्हें बारह में से कोई एक दस्तावेज लाना है, जो उनके पास है ही नहीं। यह व्यवस्था उन्हीं को दंडित करती है, जिन तक लोकतंत्र की पहुंच का विस्तार करने के लिए तीन दशकों में काम हुआ था।

पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त की इस आलोचना का महत्त्व इसलिए अधिक है क्योंकि वे न तो विपक्षी राजनेता हैं, न आंदोलनकारी। वे उसी संस्था के पूर्व प्रमुख हैं, जिसने एसआइआर किया। उनका यह कहना कि न्यायालय ने अनजाने में वकीलों पर करोड़ों गलत तरीके से हटाए गए मतदाताओं की याचिकाओं का बोझ डाल दिया है, एक संस्थागत अनुभव है। इस पर भी ध्यान देने की जरूरत है।

एकजुट हुए काकरोच

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

'आलसी और बेरोजगारों की आवाज' के नारे के साथ सीजेपी उन लोगों का प्रतिनिधित्व करने का दावा करती है, जिन्हें जिन्हें 'व्यवस्था गिनना भूल गई'। वह बेरोजगार, आलसी, हमेशा आनलाइन रहने वाले और पेशेवर तरीके से शिकायत करने वाले लोगों को अपनी पार्टी में शामिल करना चाहते हैं। वह महात्मा गांधी, भीमराव आंबेडकर और जवाहर लाल नेहरू से प्रेरित हैं।

काकरोच कोई बुरा या अपमानजनक शब्द नहीं है। *विकीपीडिया* पर खोज करने से पता चलता है कि काकरोच ने लगभग 20 करोड़ वर्षों से अपनी मूल शारीरिक संरचना को बरकरार रखा है- यानी इंसानों *(होमो सेपियंस)* के अफ्रीका में लगभग तीन लाख वर्ष पहले पैदा होने से 19 करोड़ 97 लाख वर्ष पहले से। इस दुनिया में रहने का अधिकार इंसानों से पहले काकरोच का बनता है।

विज्ञान विश्वकोश बताता है कि काकरोच लोगों को काटते या उन पर हमला नहीं करते, जबकि लोग उन पर हमला करते हैं। बेशक, काकरोच जीवाणु के वाहक होते हैं, बीमारियां फैलाते हैं और एलर्जी पैदा करते हैं। मनुष्य भी जीवाणु का वाहक होता है, बीमारियां फैलाता है और एलर्जी पैदा करता है (विशेषकर प्रतिद्वंद्वी समूहों के सदस्यों के बीच)। कुछ मनुष्य काकरोच को 'घिनौना' मानते हैं, ठीक उसी तरह जैसे कुछ लोग दूसरे लोगों को 'घिनौना' मानते हैं।

हलचल और खलबली

कुछ दिन पहले, एक उच्च पद पर आसीन सम्माननीय ने काकरोच को उनकी नींद से जगा दिया। ईश्वर उनका भला करे, उन्होंने तुरंत स्पष्ट किया कि उनका तात्पर्य अदालतों में घूम रहे नकली डिग्रियों वाले फर्जी वकीलों से था। ऐसे फर्जी वकीलों को बुरा-भला कहा जा सकता है, लेकिन मैं विनम्रतापूर्वक निवेदन करता हूं कि उन्हें काकरोच कहना उचित नहीं। एक बार हलचल मचने पर काकरोच हरकत में ही रहते हैं (जैसे 'एक बार गिरवी, हमेशा गिरवी')। हरकत में आए कुछ काकरोच ने एक राजनीतिक दल बना लिया है, 'एक्स' पर एक खाता बनाया है, एक वेबसाइट शुरू की है और इंस्टाग्राम पर भी खाता बनाया है। नवीनतम गणना के अनुसार, उस खाते के 2.2 करोड़ से अधिक फालोअर थे।

हरकत में आए काकरोचों ने पलटवार किया। इसका परिणाम यह हुआ कि इंसानों में भी *हलचल हुई और खलबली मच गई*। मुझे संदेह है कि इंसान अपनी कोल्हापुरी चप्पलों में कांप रहे हैं। यदि ऐसा नहीं है, तो देश की सर्वोच्च कार्यकारी संस्था, जिसके सशस्त्र बलों में 14 लाख सक्रिय सैनिक, 4200 मुख्य युद्धक टैंक, 580 लड़ाकू विमान, 270 नौसैनिक पोत, दो विमानवाहक पोत और सैकड़ों परमाणु हथियार हैं, और आरबीआइ से प्राप्त 2,86,588 करोड़ रुपए का अनुदान है, वह केवल डिजिटल मंच पर बनी काकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के ध्वजवाहक तीस वर्षीय अभिजीत दिपके द्वारा एक्स पर बनाए गए एक साधारण खाते से क्यों डरेगी और एक्स को यह खाता बंद करने के लिए क्यों कहेगी?

दिपके एक दूर देश में हमारे मित्र-शत्रु डोनाल्ड ट्रंप की देखरेख में 'जनसंपर्क' (खतरनाक एआइ नहीं) विषय में स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रहे हैं। वेबसाइट पर सीजेपी के लक्ष्य बताए गए हैं: हम काकरोच की पहचान को स्वीकार करते हैं- 'अगर युवाओं की बात सुने जाने के लिए यह जरूरी है, तो यही सही।' 'आलसी और बेरोजगारों की आवाज' के नारे के साथ सीजेपी उन लोगों का प्रतिनिधित्व करने का दावा करती है, जिन्हें 'व्यवस्था गिनना भूल गई'। वे बेरोजगार, आलसी, हमेशा आनलाइन रहने वाले और पेशेवर तरीके से शिकायत करने वाले लोगों को अपनी पार्टी में शामिल करना चाहते हैं। वे महात्मा गांधी, भीमराव आंबेडकर और जवाहर लाल नेहरू से प्रेरित हैं। सीजेपी का घोषणापत्र हंसाता भी है और सोचने पर मजबूर भी करता है, जबकि आम राजनीतिक दलों के घोषणापत्र इतने नीरस होते हैं कि नींद आने लगती है।

'यही कारण है'

मुझे लगता है कि सीजेपी जनता, विशेषकर युवा वर्ग के बीच व्याप्त निराशा, बेचैनी और हताशा पर भरोसा कर रही है। इसके कारण हैं:

बेरोजगारी: बेरोजगारी दर 5.2 फीसद है, युवा बेरोजगारी दर 16-17 फीसद है। कार्यबल 64.3 करोड़ है और श्रम बल सहभागिता दर अधिकतम 60 फीसद है। शेष 40 फीसद या लगभग 25 करोड़ लोग- क्षमा करें- काकरोच हैं। यदि सीजेपी को इन सभी काकरोच के वोट मिल जाएं, तो वह सरकार बना लेगी। (2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा को 23.6 करोड़ वोट और कांग्रेस को 13.7 करोड़ वोट मिले थे)।

पेट्रोल और डीजल: गतिशीलता काकरोच के लिए जीवन का आधार है। ईंधन की ऊंची कीमतें उनकी गतिशीलता को सीमित कर रही हैं। दिल्ली में पेट्रोल की कीमत 102.12 रुपए और डीजल की 95.20 रुपए है। भाजपा को वोट देने के बदले कोलकाता के निवासियों को क्रमशः 113.51 रुपए और 99.82 रुपए की कीमत चुकानी पड़ रही है।

कारखानों में नौकरियां: काकरोच स्वभाव से आलसी होते हैं। चूंकि वे हर सुबह जल्दी उठकर मोहल्ले की शाखा में नहीं जाते, इसलिए उन्हें सरकार की ओर से कभी रोजगार नहीं मिलेगा। उनके लिए दूसरा सबसे अच्छा विकल्प है कारखाने की नौकरी। सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के अनुसार, देश में 2,60,061 पंजीकृत कारखाने हैं। इन कारखानों में नौकरियों की अनुमानित संख्या 1.95 करोड़ है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण कई नौकरियां खत्म हो जाएंगी, और 25 करोड़ काकरोच को कभी कारखानों में नौकरी नहीं मिल पाएगी। इसीलिए उनमें निराशा है।

पारिवारिक सहयोग: काकरोच को उनके परिवार, विशेषकर उनकी माताएं सहारा देती हैं, जिसके बदले में वे हर महीने मुफ्त मिलने वाला पांच किलो अनाज परिवार के लिए लाते हैं। चूंकि घरेलू ऋण सकल घरेलू उत्पाद का 42 फीसद है और घरेलू बचत केवल 5-6 फीसद है, इसलिए काकरोच को परिवार से बहुत कम नकद सहायता मिल पाती है और वे नकदी की कमी से जूझते हैं।

विकसित भारत के अरबपति: *विकसित भारत* में काकरोच अरबपति बनने की उम्मीद लगाए बैठे थे। मगर भाजपा के 12 साल के शासन के बावजूद अरबपतियों की संख्या बेहद धीमी गति से बढ़ रही है। नवीनतम आंकड़ा 205 है, और 25 करोड़ काकरोच अरबपति बनने की कतार में खड़े हैं। वे वर्ष 2014 में किए गए *'अच्छे दिन आएंगे'* के वादे और 15 लाख रुपए का इंतजार भी कर रहे हैं।

उम्मीदों पर पानी फेर दिया

काकरोचों ने 'काकरोचों के आर्थिक सलाहकार' (सी-ईए) से संपर्क किया। उनकी सलाह निराशाजनक थी: 'वित्त वर्ष 2027 में व्यापार घाटा और चालू खाता घाटा दोनों ही काफी बढ़ जाएंगे। मुद्रास्फीति का खतरा बढ़ रहा है। आपूर्ति में पहले से मौजूद जटिल संकट में अब सामान्य से कमजोर मानसून के अनुमान से कृषि संबंधी समस्या भी जुड़ गई है। विश्वसनीय कर नीति, नियामक पूर्वानुमान और निवेशकों के लिए बाधाओं को कम करके स्थिर दीर्घकालिक पूंजी आकर्षित करने का काम इन परिस्थितियों में और भी ज्यादा कठिन हो जाता है' *(इंडियन एक्सप्रेस, 23 मई, 2026)*।

यानी तबाही की भविष्यवाणी की जा चुकी है।

काकरोच शायद यह निर्णय लें कि इस विनाश को रोकने का एकमात्र उपाय मुख्य चुनाव आयुक्त की सहायता से इंसानों से काकरोचों को शांतिपूर्ण तरीके से सत्ता का हस्तांतरण करा दिया जाए।

सवालों का पिटारा

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

युद्ध के इस दौर में जब प्रधानमंत्री ने हम गरीबों को खर्चा कम करने के लिए कहा है, तो क्यों नहीं अपनी सरकार को ऐसा करने का आदेश देते हैं? जितनी फिजूलखर्ची हम करते हैं मंत्रियों के काफिलों और कोठियों पर, इसको बंद करना क्या 'देशभक्ति' नहीं होगी मुसीबत के इस दौर में? लुटियंस दिल्ली की जमीन भारत में सबसे महंगी मानी जाती है, तो क्यों नहीं इसका व्यावसायिक इस्तेमाल हो?

जिमखाना क्लब को बंद करने की कोशिश ने एक ऐसा पिटारा खोल दिया है जिसमें से निकल रहे हैं कई अहम सवाल। जिनको अभी तक इस विवाद के बारे में पूरी जानकारी नहीं है उनके लिए संक्षेप में पहले बता दूं कि मुद्दा क्या है। नरेंद्र मोदी जब से प्रधानमंत्री बन कर लुटियंस दिल्ली में रहने लगे हैं, उन्होंने दिल लगा कर कोशिश की इस संभ्रांत रिहाइशी इलाके की शक्ल बदलने की। इस प्रयास में उन्होंने नया संसद भवन बनाया है रायसीना पहाड़ी पर, और जो सरकारी दफ्तर बने थे अंग्रेजों के जमाने में उनको खाली कर नए आधुनिक भवनों में भेज दिया है। इंडिया गेट से राष्ट्रपति भवन की ओर जो सड़क जाती है उसका नाम राजपथ से बदल कर कर्तव्यपथ रखा है और अपने नए कार्यालय को 'सेवा तीर्थ' का नाम दिया है।

कुछ वर्ष पहले जब जिमखाना क्लब की कार्यसमिति में उन्होंने कुछ सरकारी अफसर नियुक्त किए थे, तो ऐसा लगा था इस क्लब के सदस्यों को कि यह पहला कदम है उस सरकारी जमीन को वापस लेने के लिए जिस पर यह क्लब बना था 113 साल पहले। ऐसा ही हुआ पिछले सप्ताह, जब क्लब को सूचना भेजी गई कि जून के पहले सप्ताह तक क्लब सरकार को जमीन वापस करे जिसके लिए सालाना सिर्फ हजार रुपए का किराया सरकार को मिलता रहा है। क्लब ने इस सूचना को अदालत में चुनौती दी है और ऐसा हो सकता है कि उसको थोड़ी बहुत मोहलत मिल जाए, लेकिन दिल्ली में अफवाहें अब यह भी उड़ रही हैं कि सरकार का इरादा है प्रधानमंत्री आवास के पास रेसकोर्स और पोलो ग्राउंड की जमीन भी वापस लेने का। यहां याद दिलाना चाहती हूं कि लुटियंस दिल्ली की सारी जमीन सरकारी है जो लोगों को सौ साल या 99 साल की लीज पर दी गई है।

तो अगर इस एक क्लब की जमीन सरकार वापस लेने को तैयार है इस आधार पर कि सार्वजनिक जमीन का निजी इस्तेमाल नहीं होना चाहिए, तो क्यों नहीं पूछते हैं हम कि इस आधार पर सरकारी अशोक होटल और सम्राट होटल भी बंद किए जाएं? ये भी तो प्रधानमंत्री के आवास के कुछ ज्यादा नजदीक हैं और उनकी ऊंची छतों से कोई प्रधानमंत्री के आवास पर हमला करना चाहे, तो जिमखाना क्लब से कहीं ज्यादा आसान है। प्रधानमंत्री आवास के पीछे कई कोठियां हैं जिनमें मंत्री और सांसद रहते हैं और जिमखाना क्लब के सामने है इंदिरा गांधी का पुराना घर जो उनके बेटे ने स्मारक बना दिया था और खुद उस घर में रहने लगे, जो आज प्रधानमंत्री आवास कहलाता है। देश के पहले प्रधानमंत्री रहा करते थे तीनमूर्ति भवन में जिसको उनकी बेटी ने स्मारक बना दिया था अपने पिता की याद में।

सच तो यह है कि इस पहले घर को स्मारक न बनाया होता, तो प्रधानमंत्री का स्थायी और सुरक्षित आवास आज भी होता। स्मारक और समाधियां इतनी हैं दिल्ली में कि कई लोग दिल्ली को मुर्दों का शहर कहते हैं मजाक में, लेकिन जिस तरह सरकारी जमीन का फिजूल इस्तेमाल हो रहा है देश की राजधानी में, वह मजाक नहीं गंभीर मसला है। मंत्रियों और सांसदों को हमने बसाया है ऐसी कोठियों में जिनकी कीमत बाजार में कम से कम पांच सौ करोड़ रुपए है। ऊपर से यह भी ध्यान में रखिए कि राष्ट्रपति भवन के बाग-बगीचे 300 एकड़ जमीन पर हैं। क्या राष्ट्रपति की सुरक्षा के लिए 300 एकड़ जरूरी हैं?

सवाल और भी निकल रहे हैं उस पिटारे से। मंत्रियों को अगर इस देश की गरीब जनता के पैसों से बसाना ठीक समझती है भारत सरकार, तो क्यों नहीं इनको राष्ट्रपति भवन की 300 एकड़ जमीन पर कोठियां बना कर बसाया जाए? रही बात सांसदों की, तो उनके लिए कई सरकारी होटल हैं संसद के आसपास जिनमें इतने कम ग्राहक आते हैं कि आधे खाली रहते हैं साल भर। इनमें सांसदों के लिए जगह बन सकती है उन महीनों के लिए जब संसद का सत्र चल रहा होता है। उनको क्यों बड़ी-बड़ी कोठियों की जरूरत है?

अब बात करते हैं प्रधानमंत्री की सुरक्षा की। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रधानमंत्री आवास स्थायी और सुरक्षित होना चाहिए। न कि ऐसा घर जिसको जब किसी के मन में आए स्मारक बना दिया जाए। विनम्रता से प्रधानमंत्री को सुझाव देना चाहती हूं कि जब तक उनकी नई कोठी तैयार नहीं होती है इंडिया गेट के पास, वे क्यों नहीं तीनमूर्ति भवन में रहना शुरू करें नेहरू स्मारक को कहीं और बनवा कर। तीनमूर्ति भवन शानदार भी है और सुरक्षित भी।

युद्ध के इस दौर में जब प्रधानमंत्री ने गरीबों को खर्चा कम करने के लिए कहा है, तो क्यों नहीं अपनी सरकार को ऐसा करने का आदेश देते हैं? जितनी फिजूलखर्ची हम करते हैं मंत्रियों के काफिलों और कोठियों पर, इसको बंद करना क्या 'देशभक्ति' नहीं होगी मुसीबत के इस दौर में? लुटियंस दिल्ली की जमीन भारत में सबसे महंगी मानी जाती है, तो क्यों नहीं इसका व्यावसायिक इस्तेमाल हो? इस तरह की शुरुआत अगर दिल्ली में होगी, तो राज्यों में भी होने लगेगी और खूब पैसा बचेगा देश का। फिलहाल प्रधानमंत्री के कहने पर सिर्फ दिखावा कर रहे हैं उनके मुख्यमंत्री और मंत्री। कभी किसी मुख्यमंत्री की पत्नी साइकिल पर सवार होकर निकलती है टीवी पत्रकारों के सामने, तो कभी कोई मुख्यमंत्री स्कूटर पर सवार होकर निकलते हैं पत्रकारों को दिखाने के लिए। जब आर्थिक संकट पूरे देश में आया है, तो इस तरह के तमाशे बंद होने चाहिए और सरकारी अफसरों और राजनेताओं को दिल लगा कर देश का पैसा बचाने की कोशिश करनी चाहिए। यही होगी असली देशभक्ति। कहा था न मैंने कि जिमखाना क्लब बंद होने से खुल गया है सवालों का बहुत बड़ा पिटारा।

विषमता के प्रतीक

संदर्भ

राकेश सिन्हा

विषमता और विलासिता, दोनों के पास अपने तर्क होते हैं। उसमें संवेदनशीलता और सरोकार दोनों का कोई स्थान नहीं होता है। यह स्वकेंद्रित होता है, समाज केंद्रित नहीं बन पाता है। जिस देश में जनजातीय समाज, ग्रामीण और शहरी गरीब परिश्रम से अपना अस्तित्व बचाए हुए हों, उसमें सार्वजनिक संपतियों का उपयोग खास बने रहने के लिए हो, यह अनैतिक और असंवैधानिक दोनों है। एक समृद्ध चेतना के लिए समृद्ध भवन और क्लब शायद आवश्यक नहीं होता है।

राजधानी दिल्ली के जिमखाना क्लब का अभिप्राय क्या है? इस प्रश्न का जन्म उस विवाद के गर्भ से हुआ है, जो केंद्र सरकार द्वारा जमीन खाली करने के आदेश से उपजा है। इसका निर्माण 1913 में अंग्रेजों ने किया था। उपनिवेश के संसाधनों को लूटना और यहां के लोगों के श्रम और संसाधनों से अपनी विलासिता के लिए क्लबों और भवनों का निर्माण करना वे अपना नैसर्गिक अधिकार मानते थे। अंग्रेज अपनी प्रकृति से क्रूर और विलासी थे। जनरल डायर और लुटियंस जैसे दोनों ही प्रकार के लोग उपनिवेश को अपने तरीके से नियंत्रित और विकसित कर रहे थे। सत्ताईस एकड़ भूमि में खाने-पीने-खेलने का क्लब लुटियन ने बनाया, तो छह साल बाद जनरल डायर ने गोलियों से सैकड़ों लोगों को अमृतसर के जलियांवाला बाग में भून डाला था। स्वतंत्र भारत के लिए नैतिक धर्म था एक को (जलियांवाला बाग) स्मृति का हिस्सा बना लेना तो दूसरे (जिमखाना क्लब) को विस्मृत कर देना। पर ऐसा हुआ नहीं। आखिर सौ साल बाद राजग सरकार ने 2019 में जलियांवाला बाग को अपेक्षित स्वरूप दिया और साथ में लुटियनों को विस्मृत करने का उपक्रम शुरू किया। जिमखाना क्लब धरोहर नहीं है, न हो सकता है। उपनिवेशवाद की हर कृति को धरोहर मानकर पूजा करना मानसिक गुलामी को बनाए रखना है।

फ्रैंज फेनो एक बड़े विचारक हैं। उन्होंने औपनिवेशिक संरचनाओं को गुलामी का जीवंत प्रतीक माना था। उन संरचनाओं को विस्मृत कर स्वदेशी योजना, मन और संदर्भ से नई रचना बनाना उपनिवेशवाद को पूरी तरह दफनाने के लिए आवश्यक है। नेहरूवादी व्यवस्था को क्वीन विक्टोरिया, किंग एडवर्ड जैसों की मूर्तियों को हटाने में डेढ़ दशक लग गए, तो वे जिमखाना पर क्यों गौर करते!

जिमखाना क्लब ने सांकेतिक तौर पर भी लोकहित में ऐसा कुछ नहीं किया, जिससे इसको नैतिक सरोकारों से जोड़ा जा सके। क्लब ने स्वैच्छिक रूप से ऐसा करना मुनासिब नहीं समझा, क्योंकि इससे 'खास' और 'आम' के बीच का अंतर मिटने लगता है। लोकतंत्र को व्यक्तियों और संस्थाओं की नैतिक भागीदारी से स्थायित्व मिलता है। उसके अभाव में यह सिर्फ संरचनात्मक व्यवस्था बनकर रह जाती है। क्लब को करोड़ों रुपए की वार्षिक आमदनी सदस्यों की विलासितापूर्ण गतिविधियों और सदस्यता शुल्क से होती है। पर इसी राजधानी में साढ़े सात सौ से अधिक झुग्गी-झोपड़ी इलाकों में रह रहे लगभग अस्सी लाख गरीब और मेहनतकश की जरूरतों पर क्लब का ध्यान तक नहीं गया। वे संविधान के प्रावधानों के तहत विलासिता के विशेषाधिकार को बनाए रखना चाहते हैं।

मगर इसी संविधान की प्रस्तावना में 'समानता' का भी उल्लेख है। यह बात और है कि दशकों से ढोल की तरह इसका उपयोग शोर मचाने के लिए होता रहा है। 'समाजवादी प्रकार के समाज', 'गरीबी हटाओ' और 'लोकतांत्रिक समाजवाद' के नारों के बीच विलासिता और धन के विषम वितरण की संस्कृति फलती-फूलती रही। आम लोग न्यूनतम संसाधनों के मोहताज बने रहे और विशिष्ट लोग विलासिता को बनाए रखने के लिए व्यवस्था का उपयोग करते रहे। नवउदारवाद की जमीन ऐसे ही क्लबों और भोगवाद की संस्कृति से बनती है। कुछ भोगते हैं, शेष भुगतते हैं।

वर्ष 1991 से 2014 के बीच देश के बड़े शहरों में अनौपचारिक बैठकों के सार्वजनिक स्थानों को समाप्त कर दिया गया। वे सूक्ष्म और अनौपचारिक क्लब के ही रूप थे। जमीन पर खुले आसमान के नीचे लोग मिलते-जुलते थे। वहां विद्यार्थी, नौजवान, कर्मचारी या फिर सामान्य लोग एकत्रित होकर अपनी समझ और जानकारियों का आदान-प्रदान करते थे। दिल्ली विश्वविद्यालय में ऐसे आधे दर्जन स्थान थे, तो कोलकाता में सैकड़ों की संख्या में। सभी व्यवसायीकरण की भेट चढ़ गए। ऐसे अनौपचारिक सार्वजनिक स्थानों का लुप्त होना चेतना के प्रवाह में अवरोध पैदा करने जैसा है। अकेले व्यवसायीकरण को आधुनिकता मान लेना बड़ी भूल साबित होगी।

जिमखाना क्लब के बहाने समानता और गैर-कुलीनीकरण की प्रक्रिया पर बहस फलदायी सिद्ध होगी। विषमता से उत्पन्न सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को हमने कभी भूदान, तो कभी स्वयंसेवी संस्थाओं के परोपकारी कार्यों के हवाले छोड़ दिया। स्वतंत्र भारत में दो अवसरों पर खास और आम के अंतर पर राज्य ने अपनी स्थिरता की चिंता में कदम उठाया था। पहला जमींदारी उन्मूलन था। यह कठिन और दुष्कर था। पर 1950 के दशक में यह संभव हो पाया। बिहार में इस पर पहला कानून बना था। इसके पक्ष में 1949 में विधानसभा में राज्य के राजस्व मंत्री कृष्ण बल्लभ सहाय के भाषण में समानता के भाव को नई पीढ़ी में स्थापित करने के लिए पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहिए था, पर वह अभिलेखागार में कैद है।

दूसरा अवसर था प्रीवी पर्स समाप्त करने का। राजा-महाराजाओं को कई विशेषाधिकार प्राप्त थे। राज्यसभा में 1969 में इस पर बहस हुई और उसके बाद लगभग छह सौ राजा-महाराजाओं के विशेषाधिकार समाप्त किए गए।

स्वतंत्र भारत में भुखमरी, सम्मानपूर्वक जीवन जीने के साधनों से वंचित लोगों की बड़ी संख्या रही है। इसीलिए स्वतंत्रता के कई दशकों बाद दस करोड़ शौचालय का निर्माण कराना पड़ा और भुखमरी की आशंका तथा संभावनाओं से निपटने के लिए इक्यासी करोड़ लोगों को सरकार निशुल्क खाद्यान्न दे रही है। विषमता और विलासिता, दोनों के पास अपने तर्क होते हैं। उसमें संवेदनशीलता और सरोकार दोनों का कोई स्थान नहीं होता है। यह स्वकेंद्रित होता है, समाज केंद्रित नहीं बन पाता है। जिस देश में जनजातीय समाज, ग्रामीण और शहरी गरीब परिश्रम से अपना अस्तित्व बचाए हुए हों, उसमें सार्वजनिक संपत्तियों का उपयोग खास बने रहने के लिए हो, यह अनैतिक और असंवैधानिक दोनों है। इसकी अनुभूति जिमखाना क्लब को जितनी जल्दी होगी, भारत की समृद्धि उतनी ही अधिक होगी। एक समृद्ध चेतना के लिए समृद्ध भवन और क्लब शायद आवश्यक नहीं होता है।

मैदान में खिलाड़ी

बाखबर

सुधीश पचौरी

एक दिन सरकार ने कह दिया कि जिमखाना क्लब बंद किया जाए! जवाब में इस देश पर एहसान करने वाले एक से एक रणबांकुरे चैनलों में आकर जिमखाना के 'महान औपनिवेशिक अतीत' और बड़े सेनाधिकारियों के 'अभिजातवाद' की दुहाई देने लगे..!

वे दिन भी क्या दिन थे जब मैडम दिल्ली को ललकारती रहती थी और हमारे जैसे दर्शक भी कहते थे कि क्या बात है.. मैडम योद्धा हैं! मगर बंगाल हार के बाद वे फिर सड़क पर निकलीं, तो वे दृश्य नहीं दिखे, जब हजारों लोग उनके पीछे-पीछे चलते दिखते थे। फिर एक चैनल पर एक 'सेफालाजिस्ट' ने कहा कि 2034 तक भाजपा कहीं नहीं जा रही। तुरंत विपक्ष के एक बड़े नेता का जवाब आया कि हम 'जेन-जी' को समझा देंगे... इसे भगा देंगे..! एक कहिन कि 'जेन-जी' ने जो नेपाल और बांग्लादेश में किया, यहां भी करेंगे, क्योंकि पेपरलीक है, महंगाई है, बेराजगारी है, तानाशाही है। एक सत्ता प्रवक्ता बोला कि 'जेन-जी' तो भाजपा को बंगाल में जिता रही है और मंदिरों में घंटा बजा रही है, हनुमान चालीसा बांच रही है!

इतने पर भी जब कथित 'जेन-जी' विपक्ष के बचाव के लिए नहीं आई तो विपक्ष 'काकरोच पार्टी' का आह्वान करने लगा! सत्ता प्रवक्ता कहते रहे कि आपके पास 'काकरोच' है, तो हमारे पास 'हिट' है!

बहरहाल, एक नामी एंकर अपने चैनल पर 'काकरोच पार्टी' की वेबसाइट से आंकड़े लेकर दिखाता रहा कि किन देशों से इसके कितने फालोअर हैं और कई देशों से तो समान संख्या है। इस 'काकरोच संस्कृति' के आह्वान की राजनीति के निहितार्थों को खोलते हुए एक एंकर ने कहा कि आप स्वयं तो चुनाव जीत नहीं सकते, इसलिए चाहते हैं कि कोई 'जेन-जी', कोई 'काकरोच' आए जो सत्ता की कुर्सी पर बिठा दे! एंकर ने साफ किया कि 'काकरोच पार्टी' डालर से बनी पार्टी है, यह एक 'इंस्टाग्राम पार्टी' है, यह 'फर्जी' पार्टी है, जिसका डर दिखाया जा रहा है।

फिर एक दिन सरकार का झटका 'इंपीरियल जिमखाना क्लब' को जरा जोर से लगा। सरकार ने कह दिया कि जिमखाना क्लब बंद किया जाए! जवाब में इस देश पर एहसान करने वाले एक से एक रणबांकुरे चैनलों में आकर जिमखाना के 'महान औपनिवेशिक अतीत' और बड़े सेनाधिकारियों के 'अभिजातवाद' की दुहाई देने लगे... लेकिन चैनल चर्चा इस 'अभिजातवाद' के खिलाफ ही रही। फिर भी विपक्ष के कुछ नेता इस बात पर आ डटे कि चूंकि विपक्ष के एक बड़े नेता इसके सदस्य हैं, इसलिए सरकार को जिमखाना से चिढ़ है। एक एंकर ने जब कुछ नाम लेकर पूछा कि क्या फलां-फलां भी सदस्य हैं, तो कोई जवाब नहीं आया। फिर एक ने ताना मारा कि चूंकि प्रधानमंत्री सदस्य नहीं हैं, इसलिए ऐसा कर रहे हैं, तो बाकी चर्चक हंसने लगे।

वक्ता-प्रवक्ता आजकल यही करते हैं। जब उनकी चलती नहीं, तो जोर-जोर से बोलते रहते हैं, ताकि कोई दूसरे की न सुन पाए। एंकर पता नहीं क्यों, इस तरह के बाधकों को चुप नहीं करते। 'इंपीरियल जिमखाना क्लब' 1913 में अंग्रेजों द्वारा अपने बड़े सेनाधिकारियों के ऐशो-आराम के लिए बनवाया गया था। यह क्लब नई दिल्ली की सबसे महंगी सत्ताईस एकड़ जमीन पर मामूली किराए पर चलता है। एक एंकर ने साफ कहा कि जमाना बदल चुका है, अब इस 'औपनिवेशिक अवशेष' को यहां से हटना चाहिए। 'क्लब' वाले कहीं और जमीन खरीद लें और क्लब बना लें। एक एंकर ने तो सीधे यही लाइन दे दी कि 'बुलडोज जिमखाना'!

बहरहाल, सबसे बड़ी खबर त्विषा की मौत की रही, जिसका श्रेय सिर्फ एक चैनल और उसके एंकर को दिया जा सकता है, जिसने त्विषा के मामले को तब भी नहीं छोड़ा, जब अन्य कई स्पर्धी चैनल इस मामले में खबर लेना तक छोड़ चुके थे। यही बात त्विषा के पिता और भाई ने कही कि अगर यह चैनल और एंकर इस मामले के पीछे न लगे होते, तो त्विषा का मामला न सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचता, न त्विषा के शव का दूसरा पोस्टमार्टम होता, न मामला जांच के लिए सीबीआइ के सुपुर्द होता, न त्विषा की सास की जमानत खारिज होती, न उनको पुलिस पूछताछ के लिए ले जाती और न न्याय मिलने की उम्मीद होती।

अब तक की मीडिया कवरेज और चर्चा में त्विषा की सास गिरिबाला की भूमिका संदेह के घेरे में हमेशा रही। मामले ने कई मोड़ लिए। कुछ कहते रहे कि मामले का 'मीडिया ट्रायल' बंद हो। बड़ी अदालत ने भी चाहा कि 'मीडिया ट्रायल' बंद हो... मामले से संबद्ध परिवार के लोग मीडिया से न बोलें, लेकिन एक एंकर ने इसे भी प्रश्नांकित करते हुए अदालत से पूछा भी, कि क्या आदमी अपने दर्द को भी न कहे! इसी एंकर ने कहा कि गिरिबाला को गिरफ्तार करो और उसके बाद वे हुईं भी।

मगर कर्नाटक के नाटक का जवाब नहीं। अपनी ही सरकार होने के बावजूद राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने दबाव के चलते कह तो दिया कि हटेंगे, लेकिन यह भी कह दिया कि वे कर्नाटक छोड़ दिल्ली-राजनीति नहीं करने वाले। मतलब साफ है कि मैं भागा नहीं हूं... अभी मैदान में हूं..!

तपती दीवारों के बीच

पल्लवी सक्सेना

कहानी

सुबह के पांच बजे थे, लेकिन सूरज जैसे सिर पर चढ़कर खड़ा हो। सीमा की आंख खुली तो उसे लगा कि रात जैसे आई ही नहीं। पसीना उसकी गर्दन से होते हुए पीठ तक बह रहा था। उसने पंखे की तरफ देखा, वो अपनी पूरी ताकत से घूम रहा था, पर हवा में ठंडक नहीं, सिर्फ गर्मी घुली हुई थी।

वो धीरे से उठी, बाथरूम में गई और नल खोला। पानी भी गुनगुना था। उसने जैसे-तैसे नहा लिया, लेकिन बाहर आते ही फिर वही हालत-पसीना, चिपचिपाहट और घुटन।

'अब तो नहाना भी मजाक हो गया है', उसने खुद से कहा और रसोई की तरफ बढ़ गई।

रसोई में कदम रखते ही ऐसा लगा जैसे किसी भट्टी के सामने आ गई हो। गैस जलाते ही गर्मी दोगुनी हो गई। उसका उस रोज खाना बनाने का बिल्कुल मन नहीं था। दिल चाहता था कि बस कुछ फल खा ले, ठंडा पानी पी ले और दिन काट दे। लेकिन घर था, परिवार था और जिम्मेदारियां थीं, जो चाहने या न चाहने से नहीं रुकतीं। वो चुपचाप सब्जी काटने लगी।

थोड़ी देर बाद दरवाजा खुला। उसका पति अमित बाहर से आया। उसके कपड़े पसीने से भीगे हुए थे.

'आज तो बाहर आग बरस रही है,' उसने आते ही कहा।

सीमा ने उसकी तरफ देखा और हल्की सी मुस्कान के साथ बोली

'अच्छा यहां ठंड लग रही है क्या?'

अमित ने उसकी बात को अनसुना कर दिया, फ्रिज से बोतल निकालते हुए बोला-

'कुछ ठंडा बना दो पहले, फिर बाद में खाना खा लेंगे।'

सीमा ने बिना कुछ कहे सिर हिला दिया।

दोपहर तक रसोई में खड़े-खड़े गर्मी के मारे उसका सिर भारी हो गया था। फिर भी बिना उफ्फ करे उसने खाना तैयार किया। सब खाने बैठे, पहला कौर मुंह में डालते ही बेटे ने मुंह बनाया-

'मम्मी, आज सब्जी अच्छी नहीं बनी।'

अमित ने भी बिना देखे कह दिया-

'थोड़ा नमक कम है शायद'?

सीमा ने एक पल के लिए सबकी तरफ देखा, बिना कुछ बोले उठकर फिर से रोटी सेंकने लगी। उसके अंदर कुछ खौल रहा था। शायद वही गर्मी, जो बाहर थी, अब अंदर भी जगह बना चुकी थी। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती।

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई।

सीमा ने जाकर दरवाजा खोला तो देखा, बाहर एक दुबला-पतला नन्हा सा बच्चा खड़ा था। चेहरा धूल से भरा हुआ, होंठ सूखे हुए।

सीमा एक पल को ठिठकी, बिना कुछ बोले अंदर गई, गिलास में पानी भरा और बाहर आकर बच्चे को दे दिया। बच्चे ने पानी ऐसे पिया जैसे कई दिनों की प्यास बुझा रहा हो।

'आंटी पानी मिलेगा?' उसने धीमी आवाज में पूछा।

सीमा कुछ कहती, उससे पहले अंदर से अमित की आवाज आई।

'अरे, हर रोज आ जाते हैं अपने घर जाकर पियो ना पानी यहां कोई नदी बह रही है क्या? आगे भेजो इसे।'

सीमा एक पल के लिए ठिठकी, फिर बिना कुछ बोले अंदर गई, गिलास में पानी भरा और बाहर आकर बच्चे को दे दिया। बच्चे ने पानी ऐसे पिया जैसे कई दिनों की प्यास बुझा रहा हो। उसकी आंखों में एक अजीब सी राहत थी।

'धन्यवाद' कहकर वो चला गया।

सीमा दरवाजे पर खड़ी उसे जाते हुए देखती रही। शाम को अमित गाड़ी लेकर बाहर निकला। थोड़ी देर बाद वापस आया तो चिढ़ा हुआ था।

'यार, एक तो पहले ही इस देश में किसी को गाड़ी चलाने का सलीका नहीं है, ऊपर से इतनी गर्मी में एक भी पेड़ नहीं बचा इस इलाके में। गाड़ी इतनी गरम हो जाती है कि बैठना मुश्किल हो जाता है।'

सीमा ने धीमे स्वर में कहा-

'पेड़ लगाने का समय किसके पास है।'

अमित ने उसकी तरफ देखा, मगर कुछ बोला नहीं। रात होने लगी, लेकिन गर्मी कम होने का नाम नहीं ले रही थी। दीवारें जैसे दिन भर की आग उगल रही थीं। घर के अंदर हवा ठहरी हुई थी, भारी और तपती हुई। सीमा कुछ सोचकर छत पर चली गई। आसमान में तारे भी जैसे थके हुए लग रहे थे। चारों तरफ सीमेंट ही सीमेंट थी। न हरियाली, न ठंडी हवा। वो चुपचाप वहीं पर बैठ गई। उसे अपने बचपन का घर याद आने लगा। आंगन में बड़ा सा नीम का पेड़, दोपहर की ठंडी छांव, और मिट्टी की वो सोंधी खुशबू, तब इतनी गर्मी भी नहीं लगती थी।

'या शायद' उसने सोचा, 'तब हम इतने बिगड़े हुए नहीं थे।'

अचानक उसकी नजर नीचे गली में गई। वही बच्चा फिर दिखा। इस बार हाथ में खाली बोतल लिए, पानी की खोज में इधर-उधर देखता हुआ। उसे ऐसी हालत में देख कर सीमा का दिल कसमसा गया। वह तुरंत नीचे उतरी, रसोई में गई और एक मटका पानी से भर दरवाजे के बाहर रख दिया। पास में एक छोटी सी तश्तरी में भी पानी भरकर रख दिया पक्षियों के लिए। अमित ये सब देख रहा था

'इससे क्या फर्क पड़ेगा?' उसने पूछा।

सीमा ने उसकी तरफ देखा, इस बार उसकी आंखों में थकान नहीं, एक ठहराव था।

'फर्क पड़े या न पड़े शुरुआत तो करनी होगी।', उसने शांत स्वर में कहा।

अमित चुप हो गया। अगले दिन सुबह वही बच्चा फिर आया। इस बार उसने खुद मटके से पानी लिया। पीकर उसने इधर-उधर देखा, फिर वहीं मटके के पास ही बैठ गया। थोड़ी देर बाद एक चिड़िया आई और तश्तरी से पानी पीने लगी। सीमा खिड़की से ये सब देख रही थी। उसके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई। धीरे-धीरे मोहल्ले के दो-तीन और लोग भी उस मटके का इस्तेमाल करने लगे। खासकर सड़क पर खेलते बच्चे। किसी ने कुछ कहा नहीं, लेकिन सबको जरूरत थी। एक दिन पड़ोस की औरत आई और बोली-

'अच्छा किया तुमने ये रख दिया। बच्चों को बहुत दिक्कत हो रही थी पानी की। भगवान तुम्हें खुश रखे। भूखे को भोजन कराना और प्यासे को पानी पिलाने से बड़ा और कोई पुण्य नहीं होता बेटी।' सीमा ने बस मुस्कुरा दिया। उस दिन अमित घर आया तो उसके हाथ में एक छोटा सा पौधा था। 'सोचा इसे बाहर लगा देते हैं।' उसने थोड़ा संकोच से कहा। सीमा ने उसकी तरफ देखा, इस बार उसकी आंखों में हल्की सी चमक थी।

'हां! क्यों नहीं, चलो लगाते हैं।'

समय सूचक

असहमति की वो साहसी आवाज

जनसत्ता सरोकार

असहमति एक ऐसा शब्द है जो ध्वनि के रूप में नकारात्मक लगता है। बात अगर लोकतंत्र की करें तो यह सबसे सशक्त, सम्मानजनक और सकारात्मक शब्द लगता है। सत्ता से सहमतियों के दौर में लोकतंत्र इसी असहमति की आवाज के लिए तरसता है। भारतीय न्यायिक इतिहास में ऐसा ही एक नाम न्यायमूर्ति हंसराज खन्ना का है। 1973 के केशवानंद भारती मामले में सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी थी-संसद संविधान में संशोधन कर सकती है लेकिन संविधान की मूल संरचना को नष्ट नहीं कर सकती है। यह सिद्धांत आज भी भारतीय संविधान का वृहत्तर आधार माना जाता है। इस फैसले में एचआर खन्ना की भी अहम भूमिका थी।

हंसराज खन्ना

1975 में आपातकाल के दौरान राजनीतिक कार्यकर्ताओं और नागरिकों को बिना मुकदमे के जेल में बंद कर दिया जा रहा था। इससे जुड़ा अहम मामला अदालत में आया था-एडीएम जबलपुर बनाम शिवकांत शुक्ला का। आपातकाल के समय न्यायाधीशों से सवाल था कि क्या आपातकाल के दौरान किसी नागरिक को अदालत में जाकर अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करने का अधिकार है? चार न्यायधीशों ने सरकार के पक्ष में फैसला दिया, वहीं एचआर खन्ना ने असहमति दर्ज कराई। उन्होंने अपनी टिप्पणी में कहा कि जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार केवल संविधान की देन नहीं है, यह मानव का प्राकृतिक आधार है। कहा जाता है कि न्यायमूर्ति खन्ना अपनी इसी असहमति के कारण सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश नहीं बन पाए। उनकी जगह पर एमएच बेग को मुख्य न्यायाधीश बनाया गया।

हंसराज खन्ना का जन्म तीन जुलाई 1912 को पंजाब के अमृतसर में हुआ था। उन्होंने पंजाब हाई कोर्ट में न्यायाधीश के रूप में कार्य किया और बाद में 1971 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश बने। उन्होंने 'नाइदर रोजेज नार थार्न्स' नाम से आत्मकथा लिखी।

म्याऊं घर लौट आया

आशा शर्मा

बाल कथा

आठ साल का विशाल तीसरी कक्षा का विद्यार्थी है। विद्यालय से लौटकर खाना खाने बैठा तो उसके हाथ से रोटी का एक टुकड़ा जमीन पर गिर गया। अभी विशाल का खाना समाप्त भी नहीं हुआ था कि जमीन पर गिरे हुए रोटी के टुकड़े को चींटियों ने घेर लिया। विशाल बड़े गौर से चींटियों को देखने लगा। सब चींटियां बड़े ही अनुशासित तरीके से एक लाइन में चल रही थीं।

'मम्मी! इनको देखो। इसी तरह हम भी अपने स्कूल में चलते हैं। जब हमें प्रार्थना में जाना होता है। क्या चींटियां भी कहीं जा रही हैं?' उसने उत्सुकता से पूछा।

'हां! चींटियां बहुत ही अनुशासित होती हैं। इन्होंने अपना भोजन तलाश कर लिया है और अब वे इसे अपने बिल में ले जा रही हैं।' मम्मी ने उसे समझाया। तभी विशाल को शरारत सूझी और उसने फूंक मारकर चींटियों को इधर-उधर कर दिया। उसे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि कुछ ही देर में चींटियां वापस भोजन तक पहुंच गईं और उसे लेकर लाइन बनाकर चलने लगीं। उसे बहुत मजा आया। यह उसके लिए खेल बन गया। वह बार-बार ऐसा करने लगा।

कुछ देर बाद उसने देखा कि वे चींटियां उस रोटी के टुकड़े को घसीट कर बहुत दूर तक ले गई थीं। यह रोटी का टुकड़ा चींटियों के आकार से बहुत बड़ा था और इस समय ये चींटियां उल्टी दिशा में चल रही थीं।

'मम्मी! जरा देखो तो। यह रोटी का टुकड़ा कितना बड़ा है, और इन चींटियों ने इसे कितनी आसानी से उठा रखा है। लेकिन ये उल्टी क्यों चल रही हैं।' विशाल ने आश्चर्य से पूछा।

'हां विशाल! चींटियां बहुत मेहनती होती हैं। जब इन्हें भोजन में छोटा टुकड़ा मिलता है तो ये उसे आसानी से अपने जबड़े में दबा लेती हैं। लेकिन टुकड़ा बड़ा हो तो बहुत सी चींटियां उसे मिलकर उठाती हैं और उसे घसीटने के लिए इन्हें विपरीत दिशा में चलना पड़ता है।' मम्मी ने फिर समझाया।

'लेकिन उल्टा चलने पर इन्हें दिखाई कैसे देता है? क्या ये अपने घर का रास्ता नहीं भूलतीं?' विशाल आज चींटियों के बारे में जानकारी पाकर बहुत हैरान हो रहा था। उसके लिए यह किसी रोचक कहानी जैसी थी।

'चींटियों के शरीर से एक विशेष प्रकार का रसायन निकलता है जिसे फीरोमोन कहते हैं। जब चींटियां भोजन की तलाश में निकलती हैं तो रास्ते में इसे छोड़ती हुई जाती हैं और वापसी में उसी की गंध के सहारे अपने घर तक आती हैं।' मम्मी ने बताया तो विशाल की आंखें हैरानी से फैल गईं।

'कितना ही अच्छा होता यदि ऐसा ही कोई रसायन हमारे म्याऊं के शरीर से भी निकलता। फिर वह भी नहीं खोता। वापस घर लौट आता। है न मम्मी!' विशाल अपने खोये हुए बिल्ली के बच्चे को याद करते हुए उदास हो गया।

'ऐसा नहीं है बेटा! तुम्हारा म्याऊं और अन्य जानवर भी घर से दूर जाते समय अपने शरीर से एक तीव्र गंध छोड़ते हैं जो उन्हें वापस लौटने में मदद करती है। इसी प्रकार पक्षी भी तो अपने दिशा ज्ञान के आधार पर ही वापस अपने घोंसले में लौटते हैं। याद है न! किस तरह पक्षी हजारों किलोमीटर की यात्रा करने के बाद भी अपना मूल स्थान नहीं भूलते। हो सकता है कि तुम्हारे म्याऊं को उसके साथी मिल गए हों और वह उनके साथ चला गया हो। आखिर सभी अपने साथियों के साथ ही रहना पसंद करते हैं न? इसलिए उदास नहीं होते। जरा सोचो! प्रकृति ने सभी प्राणियों को कितनी अलग-अलग विशेषताएं दी हैं। तुम्हारे म्याऊं को भी तो पेड़ पर चढ़ने की विशेषता दी है न। याद है, कितनी फुर्ती से वो नीम के पेड़ पर चढ़ जाता था।' मम्मी ने विशाल को म्याऊं की अच्छी बातें याद दिलाते हुए कहा। हालांकि उन्हें भी बिल्ले की उतनी ही याद आती थी जितनी विशाल को।

तुम्हारा म्याऊं और अन्य जानवर भी घर से दूर जाते समय अपने शरीर से एक तीव्र गंध छोड़ते हैं जो उन्हें वापस लौटने में मदद करती है। इसी प्रकार पक्षी भी तो अपने दिशा ज्ञान के आधार पर ही वापस अपने घोंसले में लौटते हैं। याद है न! किस तरह पक्षी हजारों किलोमीटर की यात्रा करने के बाद भी अपना मूल स्थान नहीं भूलते।

'हां मम्मी! मुझे याद आ रहा है कितना फुर्तीला था वो' विशाल मुस्कुरा दिया।

'हां! तो अब मुस्कुराओ और मेरी पहेली को पूरा करो। चींटी मेहनती...म्याऊं फुर्तीला...और टामी?' मम्मी ने बात बीच में छोड़ दी.

'टामी चौकन्ना...।' विशाल ने बात पूरी की और ताली बजाकर हंसने लगा। अचानक उसका ध्यान बाहर पोर्च की तरफ गया। उसे वह दिखा जिसकी उम्मीद छोड़ चुका था।

'मम्मी! देखो, अपना म्याऊं।' कहते हुए विशाल दरवाजा खोलकर बाहर की ओर लपका। उसके दरवाजा खोलने की ही देर थी कि म्याऊं फुर्ती से घर के भीतर घुस आया। अब वह अपना पेट उघाड़कर फर्श पर लोट रहा था।

'यह वापस कैसे आया?' विशाल ने म्याऊं का पेट सहलाते हुए मम्मी से पूछा।

'मैंने कहीं पढ़ा था कि बिल्लियां यदि रास्ता भटक जाएं तो उनके 'लिटर' यानी शौच की गंध रास्ता पहचानने में उनकी सहायता करती है। यही सोचकर मैंने म्याऊं का 'लिटर बाक्स' बाहर खुले में रख दिया। यह सोचकर कि यदि वह वापस आना चाहे तो उसे रास्ता मिल सकता है। देखो, मेरी युक्ति काम कर गई। हमारा म्याऊं अब हमारे साथ है'। मम्मी ने मुस्कुराते हुए कहा तो विशाल मम्मी से लिपट गया। म्याऊं भी उनके पांवों से लिपटकर अपनी खुशी जाहिर कर रहा था। अब म्याऊं को भूख भी तो लगी थी।

संघर्ष का सामूहिक संबल

जनसत्ता सरोकार

हमारा दिमाग जिसका अंदाजा नहीं लगा सकता, उसे ही अपराध कहते हैं। जहां पर हमारी सुरक्षात्मक सोच खत्म हो जाती है, दरअसल अपराध वहीं से शुरू होता है। त्विषा शर्मा की मां को भी आम लोगों की तरह अंदाजा नहीं था कि अपराध की गति कितनी तेज होती है। त्विषा शर्मा की मौत के बाद उनकी मां रेखा शर्मा ने अपनी बेटी के वाट्सएप संदेशों को दिखाया। यह सबूत था कि त्विषा शर्मा पर ससुराल में अत्याचार हो रहे थे।

अपराध की तरह सोशल मीडिया का व्यवहार भी अविश्वसनीय होता है। सोशल मीडिया पर एक बड़ा तबका त्विषा शर्मा की मां को कोसने लगा। बेटी के इस संदेश को देखते ही उसे क्यों नहीं ले आई? त्विषा की मौत के लिए उनकी मां को भी जिम्मेदार ठहराया गया। सोशल मीडिया की अदालत के परे आज त्विषा शर्मा का परिवार एक मिसाल बन चुका है। आपराधिक मानसिकता और अपराधियों पर हम काबू नहीं पा सकते हैं। लेकिन हम अपराध के खिलाफ डट कर खड़े होना सीख जाएं तो आने वाला समय जरूर बदल सकता है। अपराधी को सजा मिलने को इंसाफ कहा जाता है।

मार्गदर्शन

यह इंसाफ भी आगे के समय के लिए सामूहिक संबल पैदा करता है। आम लोगों को गलत के खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत मिलती है।

त्विषा शर्मा की मौत के बाद इस मामले को शुरू से देख रही टीवी पत्रकार ने पिछले दिनों इस साहसी परिवार के सच को सामने रखा। जिस गिरिबाला सिंह ने अग्रिम जमानत का जुगाड़ कर लिया था, उनकी गिरफ्तारी यूं ही नहीं हुई। बकौल पत्रकार, एक पूरा परिवार एक अनजान शहर में व्यवस्था से भिड़ गया। परिवार ने इस बात की परवाह नहीं की कि लोग उनकी बेटी के निजी जीवन के बारे में क्या कह रहे हैं। उन्होंने व्यवस्था की हर खामी पर अंगुली रखी और मीडिया के जरिए इन खामियों को आम से लेकर खास तक की आंखों में पहुंचाया।

त्विषा शर्मा क्या थी, कैसी थी इसका आकलन न तो आम लोग कर सकते हैं और न करना चाहिए। त्विषा शर्मा के परिवार के जज्बे और उनकी इंसाफ मांगती रही भाषा इस बात का सबूत है कि उनके घर का व्याकरण प्यार, सद्भाव और बराबरी वाला होगा। शादी हमेशा से एक अनिश्चित चीज रही है। चाहे वह प्रेम विवाह हो, परिवार के द्वारा तय किया गया हो, परेशानियां किसी में भी हो सकती हैं। किसी भी तरह से बने संबंध में एक बिंदु पर महसूस हो सकता है कि आप आपाराधिक मानसिकता वाले व्यक्ति के साथ फंस गए हैं। इस पहचान के होते ही अपराध की गति और तेज हो जाती है। पर हम अपराधियों के चंगुल में फंसे व्यक्ति को ही दोषी बताने लगते हैं।

पुलिस, कानून, अदालत इसलिए हैं कि अपराध पर नियंत्रण पाया जा सके। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अपराध के शिकार लोगों को व्यवस्था से भी लड़ना पड़ता है। उन्हें खुद साबित करना पड़ता है कि वे अपराध के शिकार हुए हैं। एक दुर्भाग्यपूर्ण लड़ाई में हौसला न हार कर त्विषा शर्मा के परिवार ने बड़ी उम्मीद जगाई है।

काफ्का और उसके मन का कौआ

जनसत्ता सरोकार

बिल्लियां क्या इंसानों से बात कर सकती हैं? क्या आसमान से मछलियां बरस सकती हैं? क्या जंगल के किसी छोर से दूसरी दुनिया का दरवाजा खुल सकता है? इन सवालों के जवाब जैसा जादुई यथार्थ है काफ्का तिमुरा की दुनिया में। 'काफ्का आन द शोर'-हारुकी मुराकामी की एक ऐसी रचना है जो जीवन के विरोधाभासों को एक कुंजी की तरह समेटती है। काफ्का तिमुरा एक पंद्रह साल का किशोर है। मुराकामी अपनी खास शैली में इस किशोर किरदार के जरिए नियति और पहचान जैसे कठोर सवालों से सामना करवाते हैं।

काफ्का एक ऐसा किशोर पात्र है, जिसे समझने की प्रक्रिया में पाठक खुद को परिपक्व महसूस करते हैं। इस उपन्यास को लेकर हर पाठक का अपना खास पाठ होता है। साहित्यिक बाल किरदारों की तरह काफ्का भी अपनी उम्र के अनुपात में बहुत गंभीर लगता है। उसका अकेलापन उसे आत्मविश्लेषण के अध्यायों से गुजारता है। उपन्यास की शुरुआत में 'क्रो' काफ्का से कहता है-कभी-कभी किस्मत किसी रेत की आंधी की तरह होती है।

काफ्का की मां उसे चार साल की उम्र में अकेला छोड़ कर चली गई है। मां के प्यार से वंचित काफ्का का कोई भावनात्मक सहारा नहीं है। अपना साथ देने के लिए वह एक काल्पनिक दोस्त तैयार करता है जिसे 'द बाय नेम्ड क्रो' कहा जाता है। सबसे अहम बात यह है कि मुराकामी ने काफ्का को पारंपरिक बाल नायक की तरह नहीं गढ़ा है। वह न तो आम कहानियों का चंचल बालक है न हैरी पाटर की तरह साहसी, और न उसके पास अलादीन की तरह जादुई कारनामे करने वाला कोई चिराग है।

अमर किरदार

मुराकामी ने काफ्का को बाल नायक की तरह नहीं गढ़ा है। वह न तो पारंपरिक कहानियों का चंचल बालक है, न हैरी पाटर की तरह साहसी और न उसके पास अलादीन की तरह जादुई कारनामे करने वाला कोई चिराग है।

इस दुनिया की व्यवस्थागत संरचना की सबसे छोटी इकाई परिवार है। काफ्का के जरिए पाठक परिवार की अनुपस्थिति में एक किशोर की मनोवैज्ञानिक यात्रा से रूबरू होते हैं। मां की अनुपस्थिति में बच्चा अपने मन से बात करता है। जीवन के अनसुलझे सवाल उसके मन में एक भुलभूलैया बनाते हैं, जिसमें वह भटकता रहता है। परिवार की एक भूमिका स्मृति का निर्माण करना भी है। एक सामान्य बचपन और मां के बिना किसी बच्चे की स्मृति और पहचान का संघर्ष मुराकामी काफ्का के जरिए दिखाते हैं।

काफ्का के अंदर कौए के रूप में एक काल्पनिक साथी है। कौए को मुराकामी ने प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया है। सबसे पहले तो यह काफ्का के जीवित रहने की इच्छा का प्रतीक है। वह अपने अवचेतन मन को ही अपना मार्गदर्शक बना लेता है। जब काफ्का किसी बात से डरता है तो अवचेतन का कौआ उसे निर्भीक बनने की प्रेरणा देता है। वहीं उपन्यास में जंगल को भी खुद को खोजने की यात्रा और जीवन-मृत्यु के संघर्ष के तौर पर देखा जाता है। इन सबके बीच सवाल उठता है कि शक्ति की परिभाषा क्या है? एक क्लिष्ट बाल किरदार के जरिए मुराकामी संदेश देते हैं कि असली शक्ति अपने डर का सामना करने में है।

मुट्ठी भर खुबानी सेहत की कहानी

नुस्खे

सूखे मेवे तो हम सभी खाते हैं, लेकिन सुनहरे-भूरे रंग की खुबानी की ओर हमारा ध्यान कम ही जाता है। यह ऐसा प्राकृतिक फल है जो कच्चा भी खाया जाता है और सुखा कर कर भी। मगर जब उसे सुखा दिया जाता है, तो यह पोषक तत्त्वों से भरपूर मेवा बन जाता है। बच्चों से लेकर बढ़ती उम्र के लोगों के लिए यह फायदेमंद है। अगर शरीर में ऊर्जा कम हो रही हो, तो बस मुट्ठी भर सूखी खुबानी खाइए और सेहतमंद रहिए।

पोषण से भरपूर

इसमें पर्याप्त मात्रा में कैलोरी होती है। निश्चित मात्रा में फाइबर के साथ आयरन भी पाया जाता है। सबसे खास बात यह कि हड्डियों को मजबूत बनाने वाले तत्त्व जैसे कैल्शियम और मैग्नीशियम भी इसमें पाए जाते हैं। शक्तिशाली एंटीआक्सीडेंट के रूप में बीटा कैरोटीन भी इसमें मौजूद होता है जो स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। वहीं विटामिन 'ए' और 'सी' की मात्रा भी खुबानी की पोषकता को समृद्ध करती है। इसमें पोटेशियम की मात्रा भी पाई जाती है।

लौह-तत्त्वों की कमी करे दूर

शरीर में लौह तत्त्वों की कमी से आम तौर पर लोग कभी न कभी जरूर प्रभावित होते हैं। महिलाओं में प्रायः लौह तत्त्व की कमी हो जाती है। इससे उन्हें कमजोरी और थकान महसूस होती है। पर्याप्त नींद लेने पर भी लगातार थकान महसूस हो रही है, तो इसका मतलब है कि शरीर में लौह तत्त्व की कमी हो गई है। ऐसे में आसान-सा नुस्खा है। अगर रात भर भिगो कर रखी खुबानी खाएं, तो लौह तत्त्वों की कमी पूरी हो जाती है। तीन-चार सूखी खुबानी के सेवन से हीमोग्लोबिन के स्तर में भी सुधार होता है। इसके नियमित सेवन से शरीर को स्फूर्ति मिलती है। गर्भावस्था के दौरान यह महिलाओं के लिए भी फायदेमंद है।

खिली रहे त्वचा

सूखी खुबानी को त्वचा स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना गया है। सबसे बड़ी बात कि यह बढ़ती उम्र के असर को भी रोकता है। दरअसल, इसमें मौजूद विटामिन 'ए' और 'सी' मिल कर त्वचा की लोच बढ़ाते हैं, जिससे झुर्रियां कम होती हैं। इसमें मौजूद बीटा कैरोटीन आंतरिक रूप से तेज धूप से सुरक्षा करता है। इससे 'सनबर्न' का खतरा कम हो जाता है। कुल मिला कर खुबानी का नियमित सेवन किया जाए, तो इससे त्वचा की चमक तो बढ़ती ही है, चेहरे पर बन रही महीन रेखाएं भी कम होने लगती हैं। खुबानी को पीस कर इसमें शहद और नींबू मिला कर लेप बनाएं और इसे चेहरे पर लगाएं। इससे चेहरा खिल उठता है।

हड्डियां करे मजबूत

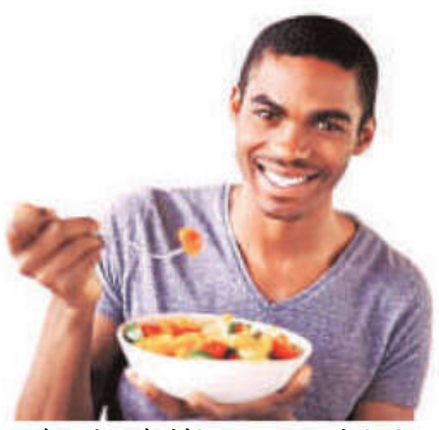

सूखी खुबानी में ऐसे कई महत्त्वपूर्ण खनिज होते हैं जो हड्डियों को मजबूत करते हैं। इससे आस्टियोपोरोसिस का खतरा कम हो जाता है। दरअसल, इसमें मौजूद कैल्शियम और मैग्नीशियम हड्डियों की संरचना को बनाए रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा आंखों के लिए भी खुबानी बहुत फायदेमंद है। इसमें मौजूद विटामिन 'ए' और बीटा कैरोटीन कमजोर दृष्टि को ठीक करता है। वहीं इसमें पोटेशियम रक्तचाप को नियंत्रित करता है। खुबानी में फाइबर की मौजूदगी कब्ज से छुटकारा दिलाती है। इससे आंतों का स्वास्थ्य बेहतर रहता है। खुबानी के नुस्खे कई मर्ज को ठीक कर देते हैं। आसान-सा नुस्खा है। चार-पांच खुबानी रात भर पानी में भिगो कर छोड़ दें। अगले दिन इसे खाएं। इससे पाचन क्रिया मजबूत रहती है। इसके नियमित सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता भी मजबूत होती है।

इतिहास का दर्पण

पुस्तक-संस्कृति

अनीता सहरावत

इतिहास का हाथ पकड़कर भविष्य का सफर तय किया है किताबों ने। साधारण-सी दिखने वाली पुरानी जिल्द और पीले पड़ गए पन्नों वाली किताब जिसमें समय की सीलन महक रही होती है, जब घर के किसी कोने से अनायास ही हमारे हाथों में पड़ जाती है, तो हम कितने ही बरस पीछे का सफर पलक झपकते तय कर लेते हैं। उन पन्नों के बीच में रखे वे सूखे फूल आज भी यादों की खुशबू से महक उठते हैं। पत्थरों पर चिह्न बनकर उभरने और उकेरने से लेकर, पत्तों, हस्तलिखित पांडुलिपियों में ढलते हुए कागज पर स्याही से पहचान पाने और किताबों की मंजिल पाने तक शब्दों ने सदियों का दिलचस्प सफर तय किया है। आज भी समाज, सभ्यता और संस्कृति को जानने-समझने के लिए किताबें ही सबसे प्रामाणिक दस्तावेज मानी जाती हैं। किस्से-कहानियां, ज्ञान-विज्ञान, कला, संगीत, नृत्य, साहित्य, धर्म, राजनीति और न जाने कितनी ही सदियों के इतिहास की साक्षी रही हैं किताबें।

कहावत है कि किसी की भी गलती या बुराई हमेशा रेत पर लिखना और अच्छाई को पत्थर पर उकेरना, क्योंकि पहाड़ के पत्थर समय के भाल पर सदियों खड़े रहते हैं और आने वाली पीढ़ियों को संदेशे हमारे पूर्वजों ने पहाड़ों पर अपने चिह्न और लिखावट से ही छोड़े हैं। वहीं रेत स्मरण शक्ति में भूलने की गुंजाइश और जरूरत का प्रतीक बनी, ताकि कुछ भी अनुपयोगी जीवन की सरलता और तरलता को धीमा न कर दे। यानी शब्द और लिखावट के निशान जगजाहिर हैं। जब शब्दों को किताबों की गोद मिली, तो किताबों ने भी पुस्तकालयों के घर बसाए।

पुस्तकालय का प्रकाश

भारत का सबसे बड़ा और पुराना पुस्तकालय 'नेशनल लाइब्रेरी आफ इंडिया' कोलकाता में है, जिसकी स्थापना 1836 में कलकत्ता लाइब्रेरी के रूप में की गई थी। तमिलनाडु के तंजावुर में सरस्वती महल लाइब्रेरी देश का सबसे पुराना किताबघर है, जहां ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियां संरक्षित हैं। सदियों से किताबों का स्थायी ठौर रहे हैं किताबघर। किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति का संरक्षण इन्हीं पुस्तकालयों के हवाले रहा है। शायद इसीलिए कहा गया है कि किसी सभ्यता और देश को मिटाना हो, तो वहां के पुस्तकालयों को तबाह कर दो। इतिहास गवाह है कि दुनियाभर के कई पुस्तकालय इसी सनक का शिकार हुए। एलेक्जेंड्रिया, जिसे तीन शताब्दी पूर्व प्लोटमी शासकों ने मिस्र की सांस्कृतिक धरोहर संजोने के लिए बनवाया था, कई बार सुलगा। इसमें हजारों की संख्या में पांडुलिपियां और लेख मौजूद थे। दुनियाभर के नामी लेखकों और उनके विभिन्न विषयों के लेखों की प्रति भी यहां रखी जाती थी।

ज्ञान के केंद्र

नालंदा मठ के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था। गुप्त काल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल में कला, साहित्य, विज्ञान, गणित, वास्तुकला ने अभूतपूर्व विकास किया। नालंदा मठ पांचवीं से बारहवीं शताब्दी तक शिक्षा का प्रमुख केंद्र रहा, जहां चीन, जापान, तुर्की, मिस्र, इंडोनेशिया, तिब्बत, कोरिया, मध्य एशिया समेत दुनियाभर से विद्यार्थी जुटते थे, जिनमें तकरीबन दस हजार विद्यार्थी और दो हजार शिक्षक थे। नालंदा उस समय बौद्ध धर्म का केंद्र हुआ करता था, लेकिन मठ का धर्म और शिक्षा से बराबर सरोकार था। रत्नसागर, रत्नरंजका और रत्नदड़ी वहां के पुस्तकालय के विभाग थे, जहां धर्म, इतिहास, कानून, विज्ञान, खगोल, भूगोल, व्याकरण, साहित्य समेत हर विषय की पांडुलिपियां और किताबें थी। इनकी सही संख्या किसी को नहीं मालूम। इतिहासकार भी केवल अंदाजा ही लगाते रहे हैं कि इनकी संख्या हजारों में रही होगी।

अब डिजिटल स्वरूप की वजह से किताबों को खोजना जितना आसान है, उससे भी ज्यादा सहज है दुनियाभर की किताबों तक पहुंचना। सिर्फ एक क्लिक और सब स्क्रीन पर। सरकारें लगातार अपने-अपने स्तर पर पुस्तकालयों का डिजिटल आधुनिकीकरण कर रही हैं। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों के अलावा सार्वजनिक पुस्तकालय भी डिजिटल रूप में विकसित किए जा रहे हैं। शुरुआती दौर में पुस्तकालय जहां केवल साहित्यिक और सांस्कृतिक दस्तावेज के संरक्षण का काम करते थे, वहीं अब पुस्तकालय ई-पुस्तकें, ई-पत्रिकाएं, लेख, आडियो-वीडियो सामग्री, शोध और शैक्षणिक डेटा, आडियो किताबें भी उपलब्ध करा रहे हैं। डिजिटल पुस्तकालय के इस अवतार ने पाठकों और सामग्री के बीच उपलब्धता की खाई को पाटने का भी काम किया है।

> **कहावत है कि किसी की भी गलती या बुराई हमेशा रेत पर लिखना और अच्छाई को पत्थर पर उकेरना, क्योंकि पहाड़ के पत्थर समय के भाल पर सदियों खड़े रहते हैं और आने वाली पीढ़ियों को संदेशे हमारे पूर्वजों ने पहाड़ों पर अपने चिह्न और लिखावट से ही छोड़े हैं। वहीं रेत स्मरण शक्ति में भूलने की गुंजाइश और जरूरत का प्रतीक बनी।**

बदलते रिश्ते

समय बदलने के साथ ही किताबों के साथ पाठकों का रिश्ता भी बदला है। डिजिटल युग ने किताबों तक पहुंच आसान भले ही कर दी है, लेकिन किताबों से पाठकों के जुड़ाव पर असर पड़ा है। कोरोना काल ने डिजिटल पढ़ाई, ई-बुक संस्कृति को नई पहचान जरूर दी, लेकिन यह भी सच है कि कोरोना काल की आड़ में कितनी ही जानी-मानी पत्र-पत्रिकाएं अपना भौतिक स्वरूप हमेशा के लिए खो बैठीं और कई पत्रिकाओं का तो अस्तित्व ही खत्म हो गया। कुछ पत्रिकाओं को ई-रूप देकर न केवल प्रिंटिंग लागत, यातायात लागत से छुटकारा मिला, बल्कि 'ई-सब्सक्रिप्शन' ने अग्रिम भुगतान से कमाई के रास्ते भी खोले।

जब-जब पढ़ने की बात होती है तो किताबों का भौतिक रूप ही जेहन में आता है। ऐसे लोगों की आज भी कमी नहीं है, जिन्हें किताबों का आनलाइन रूप जरा भी नहीं पचता। इसमें दो राय नहीं कि किताबों को छूकर पढ़ने का एहसास हमेशा ही डिजिटल रूप से नदारद रहेगा। अक्सर किताबों का जिक्र करते हुए हम भूल जाते हैं बच्चों को और शायद अपने बचपन को भी। पंचतंत्र, चंपक, चाचा चौधरी, अमर चित्र-कथा, अकबर-बीरबल, तेनाली राम की ढेरों कहानियां और हास्य के चटकीले रंगों के किरदार किसी की स्मृति से ओझल नहीं हुए हैं और न ही पुराने। न ये कहानियां पुरानी हुईं और न ही इनके किरदार। इनकी कहानियों का रोमांच उनके चित्रों में ज्यादा था। बाल साहित्य आज भी छप और बिक रहा है, लेकिन अब किस्से-कहानियों की वह दुनिया जादू की तरह नहीं खुलती और बच्चों में भी किताबों को लेकर रोमांच गायब है।

घरेलू कार्यों में छिपा तंदुरुस्ती का राज

जीवन शैली

भारतीय समाज में पिछले कुछ वर्षों से जिम में जाकर कसरत करने का चलन बढ़ रहा है। बड़े शहरों में ही नहीं, बल्कि छोटे-छोटे कस्बों और ग्रामीण इलाकों में भी अब जगह-जगह जिम खुल गए हैं। व्यायाम करना सेहत के लिए जरूरी है, लेकिन क्या इसका प्रभावी विकल्प सिर्फ जिम और योग केंद्र ही हैं। विचारणीय तथ्य यह है कि लोग अपने घर के काम से परहेज करते हैं, उसके लिए घरेलू सहायक रखते हैं और खुद पैसे देकर जिम में पसीना बहाते हैं। यानी घरेलू कार्य जो हमारी पारंपरिक जीवनशैली का महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहा है, समाज के एक वर्ग ने उसे खुद से अलग कर दिया है और उसकी जगह 'जिम संस्कृति' को अपना लिया है। घर पर रोजमर्रा के ऐसे कई कार्य हैं, जिन्हें करने से शरीर का अच्छा-खास व्यायाम हो जाता है, जिससे व्यक्ति खुद को सेहतमंद बनाए रख सकता है।

शान का सवाल

इसमें दोराय नहीं कि आज के तकनीकी दौर में मनुष्य मानसिक तौर पर भले ही सक्रिय रहता है, लेकिन शारीरिक रूप से वह आलसी होता जा रहा है। जो लक्ष्य घर पर रोजमर्रा के कार्यों के साथ आसानी से हासिल किया जा सकता है, उसे पैसा देकर मशीनों के जरिए पूरा करने की कोशिश की जाती है। दिनभर के छोटे-छोटे कार्यों, जैसे झाड़ू-पोंछा करने, बर्तन धोने, बाजार से सामान लाने और साज-सज्जा को व्यवस्थित करने से पूरे शरीर का व्यायाम हो जाता है। सुबह या शाम की सैर और तेज चहलकदमी सेहतमंद रहने में बड़ी भूमिका निभाती हैं। मगर समाज का एक बड़ा हिस्सा अब इन कार्यों को अपने सम्मान और शान के खिलाफ मानता है।

दिनचर्या में बदलाव

यह विचित्र विरोधाभास है कि लोग आज थोड़ा सा पैदल चलने से भी परहेज करते हैं और घर की साफ-सफाई में भी शर्म महसूस करते हैं। मगर वही लोग जिम में जाकर 'ट्रेडमिल' पर दौड़ लगाते हैं, मशीनों के सहारे उठक-बैठक करते हैं और यहां तक कि पोंछा लगाने की प्रक्रिया से जुड़ी गतिविधियों में भी हिस्सा लेते हैं। यह प्रश्न समाज में भीड़ के साथ चलने के मनोविज्ञान से भी जुड़ा है, जिससे हमारी जीवनशैली में बदलाव आ रहा है। जबकि वास्तविकता यह है कि अगर हम अपनी पारंपरिक दिनचर्या के अनुसार काम करें, तो न केवल स्वस्थ रहेंगे, बल्कि पैसे और समय की बर्बादी से भी बच सकते हैं।

> **घरेलू कार्य, जो हमारी पारंपरिक जीवनशैली का महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहा है, समाज के एक वर्ग ने उसे खुद से अलग कर दिया है और उसकी जगह 'जिम संस्कृति' को अपना लिया है।**

मानसिक दबाव

जिम में जाकर व्यायाम करने की प्रक्रिया में लोग मानसिक तनाव का शिकार भी हो रहे हैं। उन पर इस बात का दबाव होता है कि उन्हें निर्धारित समयसीमा के भीतर ही व्यायाम के विभिन्न चरणों को पूरा करना होता है, वहीं अगर लंबे समय तक मशीनों पर कसरत करने के बाद भी वे शारीरिक रूप से चुस्त-दुरुस्त नजर न आएं, तो उनके भीतर कुंठा का भाव पैदा होने लगता है। जबकि घरेलू कार्यों में न तो समयसीमा होती है और न पैसा तथा समय बर्बाद होने की चिंता। ऐसे में जरूरी है कि इस बात पर गंभीरता से विचार किया जाए कि सेहतमंद रहने के लिए कौन सा विकल्प ज्यादा बेहतर है।

खानपान में कोताही कमजोर हड्डियां

सेहत

खानपान में लापरवाही से लोगों की हड्डियां अब कमजोर हो रही हैं। एक समय था जब संयमित खान-पान से लोगों की हड्डियां मजबूत रहती थीं। उम्र ढलने पर भी कोई समस्या नहीं होती थी। मगर आज युवाओं की भी हड्डियां कमजोर होने लगी हैं। आलस्य ने यह समस्या और बढ़ा दी है। इसे गंभीरता से लेने की जरूरत है, क्योंकि ये हड्डियां ही हैं जो पूरे शरीर को संभाले रहती हैं। अब अधेड़ावस्था पार होते ही हड्डियां कमजोर पड़ने लगी हैं। लिहाजा लोगों को सचेत होना चाहिए। आस्टियोपोरोसिस जैसी दिक्कत जब शुरू होती है, तब लोगों को चलने-फिरने में परेशानी महसूस होने लगती है।

समस्या की जड़

हड्डियों के कमजोर होने की समस्या कोई एक दिन में नहीं होती। यह धीरे-धीरे सामने आती है। जब चलने में दिक्कत होने लगती है, तभी लोग चिकित्सक के पास जाते हैं। अगर पहले से सजग रहें, तो शायद नौबत ही न आए। दरअसल, हमारे शरीर में हड्डियां प्रोटीन के रेशे पर कैल्शियम जमा होने से बनती हैं। इस कैल्शियम को जमाने का काम विटामिन-डी करता है। गौर करने की बात है कि जब शरीर में इस विटामिन की कमी होती है, तो प्रोटीन के रेशे कमजोर होने लगते हैं। इससे आस्टियोपोरोसिस की समस्या होने लगती है। ऐसी हालत में हड्डियां इतनी कमजोर हो जाती हैं कि मामूली झटका लगने पर भी इसके टूटने का खतरा रहता है।

उम्र का असर

आम तौर पर यह समस्या उम्र बढ़ने पर शुरू होती है। हालांकि पुरुषों के मुकाबले महिलाओं में यह समस्या अधिक होती है। रजोनिवृत्ति शुरू होने से पहले उनमें यह दिक्कत होती है। यही वह समय है जब महिलाओं में मासिक चक्र बंद होने लगता है। ज्यादातर महिलाओं में यह अवस्था 45 से 50 वर्ष की उम्र में शुरू होती है। शोधकर्ताओं के मुताबिक हड्डी में पतलेपन और घनत्व की कमी के कारण इसके टूटने का खतरा बढ़ जाता है। यह स्थिति अस्थि मज्जा में वसा कोशिकाओं की वृद्धि के साथ पैदा होने लगती है। एक अध्ययन के मुताबिक सीबीएफ-बीटा नाम का प्रोटीन हड्डियों के बनने में मददगार कोशिकाओं को शरीर में बनाए रखने में बड़ी भूमिका निभाता है। समय पर पता न चलने से इसका उपचार नहीं होता। इससे बुजुर्गों में यह समस्या बढ़ रही है। हड्डियों में कमजोरी के कारण उन्हें कमर और पीठ दर्द की शिकायत रहती है। नाखून कमजोर पड़ने लगते हैं। रीढ़ की हड्डियां सिकुड़ने से कद थोड़ा कम होने लगता है।

निष्क्रियता के जोखिम

हड्डियों में दिक्कत बढ़ने पर लोग घरेलू काम करने और आसपास पैदल जाने से भी कतराने लगते हैं। रोजमर्रा के जीवन में उनकी निष्क्रियता बढ़ने लगती है। जोड़ों में अकड़न बढ़ जाती है। ऐसे में लोगों को हल्का व्यायाम करने की सलाह दी जाती है। जोड़ों में लचीलापन लाने के लिए योगासन और पैदल चलना अच्छा माना गया है। हल्का वजन उठाने से मांसपेशियों को भी मजबूती मिलती है। हालांकि अधिक वजन उठाने से बचना चाहिए, क्योंकि इससे कूल्हे और घुटने पर दबाव बढ़ता है। हड्डियों के घिसने का भी डर रहता है।

पौष्टिक आहार जरूरी

उम्र बढ़ने पर कैल्शियम से भरपूर भोजन लेना जरूरी है। इनमें पत्तेदार सब्जियों के साथ पनीर, दूध और दही लिया जा सकता है। आहार में प्रोटीन जरूर शामिल करें। इसके लिए सोया, दाल, झींगा और अंडे लिए जा सकते हैं। विटामिन-डी की कमी पूरी करने के लिए सुबह की धूप अच्छी मानी गई है। सूखे मेवे में अखरोट लेना भी फायदेमंद है। हड्डियां कमजोर हो रही हों, तो शराब और धूम्रपान से बचना चाहिए। वैसे भी स्वास्थ्य के लिए ये हानिकारक हैं।

(यह लेख सिर्फ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।)

पौष्टिकता का साथ, स्वाद लाजवाब

रसोई

मटर पुलाव

मटर को कई सब्जियों के साथ मिलाकर बनाया जा सकता है। इसमें हल्की मिठास होती है और इससे बनने वाला व्यंजन भी लाजवाब होता है। अगर कभी भोजन बनाने के लिए समय कम हो, तो मटर पुलाव झटपट बनाया जा सकता है। यह पौष्टिक होने के साथ-साथ स्वादिष्ट भी होता है। बच्चों से लेकर बुजर्गों तक सभी को यह पसंद आता है।

सामग्री

बासमती चावलः 200-250 ग्राम, हरी मटरः 150 ग्राम, प्याजः एक, टमाटरः दो, अदरक-लहसुन का पेस्टः दो चम्मच, हरी मिर्चः दो-तीन, हरा धनियाः आधी कटोरी, पुदीने के पत्तेः पांच-सात, गरम मसाला पाउडरः एक चम्मच, कटा हुआ नारियलः तीन-चार चम्मच, नमकः स्वादानुसार।

विधि

बासमती चावल को धोकर करीब आधे घंटे तक पानी में भिगो लें। इसी बीच, एक कड़ाही में तेल गरम करें और उसमें कटे हुए टमाटर डाल कर उन्हें नरम होने तक भूनें। फिर सूखे नारियल को बारीक काट लें। भुने हुए टमाटर और नारियल को मिक्सी में पीस कर उसका पेस्ट तैयार कर लें। इसके बाद कड़ाही में फिर से तेल गरम करें और उसमें तेज पत्ता, लौंग, हरी इलायची तथा दालचीनी डालकर तब तक भूनें, जब तक वे फूल न जाएं। फिर कटी हुई हरी मिर्च डालकर हल्का सा भूनें और कटा हुआ प्याज डाल दें। इसके बाद अदरक-लहसुन का पेस्ट डालकर उसे कच्ची महक खत्म होने तक भूनें। अब इसमें हल्दी पाउडर, लाल मिर्च पाउडर और गरम मसाला मिलाकर हल्का सा भूनें। फिर बारीक कटा हुआ हरा धनिया और पुदीने की पत्तियां डालें। इसके बाद हरी मटर डालकर उसे तीन-पांच मिनट तक भूनें। अब इसमें टमाटर और नारियल का पेस्ट डालकर दो-तीन मिनट तक पकाएं। इसमें नमक और जरूरत के मुताबिक पानी डाल दें। जब इसमें उबाल आ जाए, तो बासमती चावल डालें। अब इसे धीमी आंच पर ढक्कन रखकर पकाएं, जब सारा पानी सूख जाए और चावल पक जाएं, तो आंच बंद कर दें। इसे दही या रायता के साथ गरमागरम परोसें।

पपीते का परांठा

पपीता कच्चा हो या पका हुआ, यह सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है। कच्चे पपीते की सब्जी घरों में अक्सर बनाई जाती है। मगर कच्चे पपीते के परांठे बनाए जाएं, तो इसका जायका बेहतरीन हो जाता है।

सामग्री

गेहूं का आटाः 200 ग्राम, कच्चा पपीताः दो (मध्यम आकार के), हरा धनिया (बारीक कटा हुआ), अदरकः एक इंच, हरी मिर्चः तीन-चार, लहसुनः छह-सात कलियां, अमचूरः एक चम्मच, अजवाइनः एक चम्मच, कसूरी मेथीः एक चम्मच, नमकः स्वादानुसार।

विधि

सबसे पहले एक थाली में गेहूं का आटा लें और उसमें हल्का सा नमक, अजवाइन तथा तेल डाल कर अच्छी तरह मिला लें। फिर इसे गुनगुने पानी के साथ गूंथे और कुछ देर तक ढक कर रख दें। इस बीच कच्चा पपीता लें और उसके छिलके निकालकर उसे कद्दूकस कर लें। फिर इसे हाथ से कसकर निचोड़ लें, ताकि इसमें मौजूद रस बाहर निकल जाए। अगर ऐसा नहीं किया, तो पपीते में नमी की वजह से परांठे बनाने में दिक्कत आएगी। फिर इसमें अदरक और लहसुन का पेस्ट, बारीक कटी हरी मिर्च, अमचूर पाउडर और नमक डालकर हाथ से अच्छी तरह मिला लें। इसके बाद गूंथे हुए आटे की छोटी-छोटी लोइयां बना लें। अब एक लोई को बेलन की मदद से चपाती की तरह चपटा कर लें और उस पर पपीते के मिश्रण को चारों ओर बिखेर दें। फिर दूसरी लोई को चपटा करें और उसे पपीते के मिश्रण के ऊपर रखकर बेलन की मदद से धीरे-धीरे दबाते हुए चपटा करें। कोशिश करें कि दोनों चपातियों के किनारों को बेलन से दबाकर आपस में चिपका दें। इसे गरम तवे पर सेंकें और जब एक तरफ से सिंक जाएं, तो उसे पलटकर ऊपर से देसी घी का लेप लगाएं, दूसरी तरफ भी ऐसे ही देसी घी का लेप लगाएं। इस तरह सभी परांठे तैयार करें। इन्हें दही, रायता या चटनी के साथ गरमागरम परोसें।

Last Day To Join Private Channel.
Closing entry for new members Now.

♦ **Indian Newspaper**

1) Times of India
2) The Hindu
3) Business line
4) The Indian Express
5) Economic Times
And more Newspapers

♦ **InternationalNewspapers channel**

[Europian, American, Gulf & Asia]

♦ **Magazine Channel**

National & International

[Genaral & Exam related]

♦ **English Editorials**

[National + InternationalEditorials]

Click here to join

♦ Lifetime validity at just 19 Rupees 📍

Trust me... this will be your best purchase of 2026